भूमिका।

पाठकों को विदित होगा कि यह कविसमाज श्री म महाराजाधिराज श्री १०८ महाराज वालक्षणलाल जी कांकरोलीनरेश ने सम्वत १९५० में स्थापित किया था तब से लेकर छ महीने की समस्यापूर्ति प्रथम भाग में वावू जगन्नाथप्रसादजी बी०ए० उपनाम रत्नाकर कवि के प्रबन्ध में छप चुकी है। अब दूसरा भाग जिसमें दूसरे छ महीने की पूर्तियां हैं प्रकाश किया जाता है। आगे तीसरा भाग भी छप रहा है। योंही छ: छ: महीने का एकएक भाग होता जायगा—इस ग्रन्थ में जिस कवि की जैसी कविता है त्यों की त्यों प्रकाश की गई हैं। कोई घटाव बढ़ाव अपनी ओर से नहीं किया गया है जिस्से कि सर्व साधारण को भिन्न २ कवियों की योग्यता का परिचय होय। महाराज बहादुर ने कवियों का उत्साह पुरस्कार देकर बहुत कुछ बढ़ाया है और बढ़ा रहे हैं। इसमें ऐसे अनेक सुयोग्य महाशयों की कविता है जिनको पुरस्कार से कोई वान्छा नहीं केवल

अपने उत्साह और भाषा काव्य की वृद्धि के निमित्त यह परिश्रम उठाते हैं। हम उन महाशयों को हृदय से धन्य वाद देते हैं और प्रार्थना करते हैं कि सदाही इसी प्रकार कटिबद्ध रह कर भाषा काव्य की वृद्धि मे तत्पर हों ।

निवेदक
रामकृष्ण वर्म्मा
सेक्रेटरी—कविसमाज
काशी ॥



समस्यापूर्ति (द्वितीय भाग) की समस्याओं की सूची।

काशी कबिसमाज की

समस्यापूर्त्ति का दूसरा भाग।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलालः जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

पावस अँधेरी में

गरजत आवै घन कारी घटा घेर घेर चमकात जात बिज्जु सोभा जो उँजेरी में। कहै रससिन्धु फेर दूती गई गोपी पास बातहु बनाय हाथ जोर बोली चेरी मैं॥ चल बेग प्यारी निसा लगत डरारी खूब ऐसो जो न होय मेह आय जाय देरी में। कृष्ण पै ले आइ गई बाल को लिवाय स्याम सखी संग केलि करे पावस अँधेरी में॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

आये बलबीर उतै बालक अहीर संग इत मनमोहिनी सखीजन की घेरी में। परम प्रवीन

प्यारी कौतुक विचार हिये ग्वालन की कामरी छपाई नेक टेरी में ॥ छायो घन घुमड इतेक मे चहूँघा घोर सूझत न हाथ धुन्धकार की धुँघेरी में । जौलौं गोपगण उते कामरी को धावैं तौलौं लै गई गुविन्दैं गहि पावस अँधेरी में ॥

मान कही मेरी खान पान मति छोड़ै तेरी बात हौं बनैहौं दिन द्वैकही की देरी में । जाय बलबीर सों सुनैहौं सब तेरी पीर काज साध लैहौं बस तीन चार फेरी में ॥ जानति है मोकों हौं प्रवीन परवीनन में बीर मिलिबे को नाहि औसर उँजेरी में । धीर धरि ही में तू अधीर मति होय श्यामा अबकी मिलैहौं तोहि पावस अँधेरी में ॥ २ ॥

काशीनिवासी पं० अम्बिकादत्त व्यास ।

साँवरी सँवारि सारी स्याम बगराय बार छवि सरसाओ स्याम बादरे की घेरी में । चोआ में चरचि चारु चोली स्याम रेसम की स्याम नग आभरन धारो इहिं बेरी मे ॥ कवि अम्बा-

दत्त स्याम अञ्जन को रंजन कै हरो हरिनी को मद हरैं हेरा हेरी में। स्याम मन धारि चलो स्यामल तमाल ढिग साँचो स्यामा वनो स्याम पावस अँधेरी में ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी।

सरद में ले आऊँगी साँवरी सलोनी स्यामा हेमा तो हिमन्त अन्त आवे नेक देरी में। सिसिर में सारदा सुहाई जो ससांकमुखी विन्दा को वसन्त में बुलाऊँ तीन फेरी मे ॥ माधव जू मौज करो ग्रीषम निकुंज माह गनिका सी गोरी गात ल्याऊँगी सवेरी में। जेती ब्रजमण्डल में नागरी नवेली वाल लाल हौं लिआऊँ तिन्हैं पावस अँधेरी में ॥

काशी निवासी पण्डित केदारनाथ

भूषन वसन अंग अंग सुठि नीको साजि मिलन चली है ब्रजराज सों हरेरी में। जोबन की वनक विचित्रता विसोके वनै पायल झनक काम केदी जात वेरी में ॥ घन घहरात हहरात

पौन जोरे जोर हर्वरात हिय रे केदार चली टेरी में। पीतपटवारो नहिँ मिल्यौ धन वारो घल लाई क्यों बुलाइ रॉड पावस अँधेरी में॥

कवि प० अम्बाशंकर जी काशी।

उन्नत उरोजन पै चोनदार चोली कसे हो नदार सारी के किनारी लगी घेरी में। अँखिया सरोज लखि सफरी लजोज होत ठाँव ठाँव जागत मनोज देहँ तेरी में॥ संकर जू रोज की गमंक फूटि चहूं कोज करति गमोज कई जोजन की फेरी में। ओजभरी वद्री में मौज भरी भामिन तू खोज भरी काकें चली पावस अँधेरीमे॥

पीतम पियारे ने पियार सों बुलाई मोहि आओ प्राणप्यारी आज झारिन घनेरी में। तैं जो कही एकली न साथ सखी तेरे कोऊ मेरे साथ मेरी मति मेरी सखी चेरी में॥ संकर जू प्रेम में न नेम कह्यौ कोऊ कहूं छोहूं फँदी तेई फंदे आपनी दिलेरी मे। एरी अरी बौरी जाति उनहीं के खोज लगी मावस की आधी रात पावस अंधेरी मे॥ २॥

बाबू हरिशंकरप्रसाद बनारस ।

घन को घमण्ड जो अखण्ड नभ छाय रह्यो राह के बटोही ना दिखाँय निसिकारी में । मेरो रंग जोई सोई कासरी घटा मों घटा औसर भलो है नहीं बनिहै उजारी में ॥ भनै हरिशंकर सखा सों स्याम ऐसो कह्यो मेरी कटि जैहै मंजु मोद फुलवारी में । गेह बृषभान के निसंक आजु घुस जैहों कौन धरि लैहै मोहिं पावस अँध्यारीमें॥

काशीनिवासी बृजचन्द जी बल्लभीय ।

कोऊ जाउ कानन विकुण्ठ कोऊ छीरसिंधु खेलत प्रतापी प्रभु आयसु उँजेरी मैं । विकल विलोकि निज अनुभौ सुनावैं सुनौ बात यह गूढ़ यातैं कही अति देरी मैं ॥ अंस कला भूति जातैं होत हैं प्रकास सोई व्यापक दुभुज रास-लीला इहि बेरी मैं । याही तैं निसंक हम, संकित परे हौ सबै स्वारथ विषय रितु पावस अँ-धेरी मैं ॥

सकल सुमार्ग अवसान अंड्ही मैं होत ज-

गत प्रकास नित्य याही मति फेरी मैं। ताहूको दुराइ कै परम निज तत्व माहिँ भाषै अवसान नित्य आपनी उँजेरी मैं ॥ चिदाचिद दोऊ सनवन्ध निज आपुसै मैं मानि मानि सन्तत परे हैं भुक्ति वेरी मैं। राखि लै चरन की सरन विट्ठ-लेश मोहि माया मत वाद रितु पावस अँधेरीमैं॥

पटनानिवासी वाबू पत्तनलाल जी ।

कोऊ लपटाने पटताने परे सेजही पै कोऊ करैं ध्यान वारि दीपक उँजेरी में। कोऊ कहैं आजु का भई है विधिना की रात ह्वैहै कव प्रात ऐहैं सूर किते देरी मे ॥ कोऊ कहैं मोहि भये ह्वैहैं जुग जाम जगे कछु ना समात कहा वात वुधि मेरी मैं। कोऊ कहैं देखि चकवाकहिँ स्न काहे तुम रात दिन छान लेत पावस अँधेरीमें॥

प्रेम फंदे उनहीं पायस ९

कालि अलि राति रही जात हौं अकेली वा घर पैं नावन कौं जामन दहेरी में । खिन वा दिसि तें आइगो सुसील कान्ह छूटू ना परी वदरी घनेरी मे ॥ हौं तो

भट भेरो होत भूमि घहराय गिरी ऊपर तें वाहू गिर्यो पड़ो वड़ी फेरी में । आज तें तिहारी सौंह कैसहू नसाय काज घर तें कढूंगी नाहिँ पावस अँधेरी में ॥ २ ॥

गंधौलो ज़िला सीतापुरनिवासी वावू जुगुलकिशोर जो उपनाम व्रजराज ।

नीलमनि भूषन सुअंगन कुरंगसार धारी जिन सारी सो अलिन रंग हेरी में । तैसो घन धार कोपसार अन्धकार परी सोंधे की सुवास सों दुरेफन की घेरी मे ॥ जाति व्रजराज सों मिलन कुंजधाम वाम वाम सों उतरि कोऊ दूसरी न नेरी में। सावस सहेट चलो वा वस हिये के एक रजनी अमावस औ पावस अँधेरी में ॥

वावू भगवतीचरण सकला जिला शाहावाद ।

खंजननयन वारी वारिज वदनवारी जाति है मिलन मीत प्रीत की घनेरी में । विद्युत द-मकवारे भूषन अनेक धारे हारे हैं कुरंग कारे चाल की भटेरी में । नेक ना नयून होत रूप

की छटान वाकी चलन सनेहसनी बूंद की त-
रेरी मे। गात जातरूप को जचाई होत जात
मानो भगवती कसौटी सी पावस अँधेरी में॥

महाराजकुमार गौरीप्रसादसिंहजी गिद्धौर।

दीपक बुझाय बाल झाँकती झरोखा मग
लाल मिलिवे के काज पंच सर फेरी में। बदन
मयंक कर ऊपर विराजमान ह्वैग्यो ढिग जाय
अलि अजब उजेरी में॥ धाक्यो हिय बेर बेर
निरखि सु ऐसी छवि समता अनूठो यहै अच-
रज हेरी में। मनु निकलंक पूर सरद मयंक
ज्यो प्रफुल्लित कंज पर पावस अँधेरी में॥

गयानिवासी पं॰ गिरधारीलाल जी गयावाल।

घेर घेर घूम रहै घन आसमान बीच भूम
रहे द्रुम मिले बेलिन की ढेरी में। गिरधारी-
लाल कहै सूनो घाट बाट त्योंही जगे जुगुनान
ज्योति जैहरी घनेरी में॥ संग ना सहेली कोऊ
वैस नवेली अति नम री पिरात गहे रसरी
छरेरी में। तासी सुकुमारि को ये वारि भरिवे
को राय भेज्यो को गँवार ऐसी पावस अँधेरीमें॥

घोर वन भीतर कठोर बाघ चारो ओर दौरत है ठौर ठौर बेलिन की ढेरी में। नगर नगीच नहि डगर सगर खोटौ अहैं अजगर केते कन्दरा घनेरी में॥ गिरधारीलाल बेसुमार बट पार बसैं याही ते कहति यार बार बार टेरी में। भारी दुख पाइहौ अतीहीं पछताइहौ जो जाइहौ बटोही यह पावस अँधेरी में॥

सिहोर (काठियावाड) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई

प्रीतम प्रदेश वाको आवत सँदेश नाहिँ निलज ननद गई सासुरे सवेरी में । सास दिन सातक तें गई गंग न्हावन कों आयगी सो आजही तें तीसरी उँजेरी में। घर मे न और कोउ रहत अकेली हम यातें काहु यामिनी में आव आज टेरी मे। गोविन्द सुकवि ऐसे सूने घर माहिँ कैसे मोतें रह्यो जाय आली पावस अँधेरी में॥

काहे कों करोध करि कहावो कठोर वैन धीरज कों धारो उर भाषत हूं टेरी में। ननद नि-

गोड़ी नित हेरत हमारी ओर यातें डर डरी चलु छौनी पर हेरी में ॥ मिलन समय नाहिँ उ-जलही यामिनी में तातें करजोरि कहूँ आज वेर वेरी में। गोविन्द अवस्य आय आपकों मि-लेंगी हम सौंह तें कहत अब पावस अँधेरी में॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज वेणी कवि।

अंग अंग भूषन जवाहिरजटित साजि चन्द चपि जात मुख चमक उँजेरी में। सारी जर-तारी को किनारीदार सोहै वर वारी जोन अ-तर गुलाबन की ढेरी में ॥ वेनी द्विज तड़िता तड़ातड़ तमकै तहाँ निसा घोर कारी घटा घि-रआ घनेरी में। करत मसाल सी प्रकास वा र-माल बाल जात प्रानप्यारे पास पावस अँधेरी में॥

कानपुरनिवासी पं० ललिताप्रसाद जी त्रिवेदी।

पिय परदेस में सँदेसऊ न पायो कछु तो-नई पँदेस के कलेस माहि घेरी में। ननद सि-धारी दिन चारिक ते सासुरे को माइके जेठानी को रहति पयमेरी में ॥ ललित परोस करि रोस

वैर बाँधे रहे कोऊ ना सुनत मेरी बीस बेरी टेरी मैं। संग ना सहेली कोऊ निपट अकेली आजु कैसे रहौं भौन माहि पावस अँधेरी मैं ॥

चन्द्रकला बाई - बूँदी।

आवत सघन घन घोरि घोरि ओर ओर ठौर ठौर मोरन के सोरन की फेरी मैं। चातक चिकारैं ये बलाक दौरि दौरि मारैं हारैं मन दामिन की दमक घनेरी मैं ॥ चन्द्रकला जुगुनू जमाति चिनगारी देत बालम भये हैं लीन कूबदार चेरी मैं। कैसी करौं कहाँ जाऊँ कैसे निरवाह करौं येरी बीर मावस की पावस अँधेरी मैं ॥

सावन सुहावनो।

काशीनिवासी श्री १०५ लछमनदास जी महाराज उपनाम रससिंधु।

बादर जु आये घेर कारे औ सपेद भूरे बरसत मेह मेह सोभा सरसावनो। कहै रससिंधु तहाँ बड़े है तलाव आगे सघन निकुंज अति

बाग मनभावनो ॥ कोयल पपीहा मोर दादुरहू करैं सोर झींगुर की झनकार काम उपजावनो। झूलत हिँडोरे स्याम राधागल बाँह डारि सखी जो झुलावैं लगे सावन सुहावनो ॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी ।

तरुन तमालन सों लपटी लवङ्गीलता दुखद अनङ्ग लाग्यो सुख सरसावनो । कैसे के बिदेसी उर धीरज धरेंगे और मोरन को सोर हिये लागत डरावनो ॥ ऐहैं बलबीर मन आवत हमारे ऐसो बीतिगो प्रचण्ड पापी ग्रीषम भयावनो । कादरकरावनो प्रवासी बिरहीन मन आयो मन भावन या सावन सुहावनो ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

सुख सरसावनो है वारि वरसावनो है मदन जगावनो है नेह को कढावनो । घन घहरावनो है बिजु चमकावनो है कोकिल पपीहा मोर मोद उपजावनो ॥ बेनी द्विज आवनो हमारो है तिहारे हेत ऐसो समै चाहिये वृथाही

ना गवावनो। मान तजि भूलो चलो संग मन-
भावन के आयो मदनेस वीर सावन सुहावनो॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी।

जैसी यह छाई है घटा री घनस्याम आली
तैसी निठुराई करि बैठी तूं मनावनो। त्रिविधि
बयार बहै कोकिल पुकार कहै चलिये निकुंज
साह कीजे मनभावनो॥ माधव जू सोहि को प-
ठावत हैं बार बार तू तो मनुहार करै प्यारे को
सतावनो। पावन परे है मनभावन तिहारो वीर
चलिये निकुंज लगै सावन सुहावनो॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथ जी।

छाई छिति मण्डल हरीरी वर बागन में
फूलै लगी सुमन सुगन्ध सरसावनो। हरी हरी
दूबन पै बगरी बहूटीवीर पन्ना के फर्श मंजु
मानिक बिछावनो॥ चातक चकोर मोर को-
किला अलापैं घने वारि वारिवाहक लगे हैं ब-
रसावनो। मोद सरसावनो अनंग दरसावनो
विनोद बरसावनो है सावन सुहावनो॥

कवि पं० अम्बाशंकर जी—काशी।

ऊधो यह सूधो सो सँदेसो कहि दीजो भलें केकिन की केका कूंक कोकिल जुहावनो। बादर को सादर समूह झुक्यो आदर सों चादर सो नीर चहूं परतो फुहावनो ॥ संकर सुकवि वन वागन में वारिन में इन्द्रवधू पांतिन को रंग चुचुहावनो। सरिता सरोवर को संगम सुनाय फेर आवनो सुनावनो जू सावन सुहावनो ॥

वेपति की तोय ताहि तावनो सतावनो है दम्पति मिलावनो मल्हार मोद लावनो। अङ्गन कँपावनो डरावनो विदेसिनहूं भावनो सुजोगी जोग जुगति वढ़ावनो ॥ केकी कुहकावनो घनेरी घटा छावनो जु पानी वरसावनो कवी को हुलसावनो। संकर सुनावनो वनावनो कवित्त जोड़ि आवनो भयो ये मस्त सावन सुहावनो ॥

वावू हरिशंकरप्रसाद वनारस।

नागिन सी कारी राति उलटि पलटि डरें

लागत है गावनो वजावनो। झूले झे-
तीर ऐसो लागत है गावनो वजावनो। झूले झे-
लुआ की धरि हियरा झुलाय देत कजरी सुने
ते मुख कजरी लगावनो ॥ साँची वात कहौ
हरिशंकर दोहाई करि मोको ना सोहात मन
मोद दरसावनो। वालम विदेस ते तुरत आय
जाँय आली तवतो हमारे हेतु सावनसोहावनो॥

काशीनिवासी हनचन्द जी वल्लभीय।

सोर करैं चौहैं चारु कोकिल कि सोर मोर
ठौर ठौर भयो है वलाकनि को आवनो। नदी
नद नारनि मैं घोर जल जोर छायो मंजुल म-
रालनि को ह्वै गयो परावनो॥ चातक तृषित
की तृषा न विनु स्वाति जाति वाढ़त निरन्तर
प्रवल प्रेम पावनो। अजहूं न आयो मनभावनो
हमारो छायो उमड़ि घुमडि घन सावनसुहावनो॥

महाराजकुमार गौरीप्रसादसिंहजी गिद्धौर।

दादुर पुकार तैसी झनकार झिल्लिन की
धुनि मुरवान की अनंग उपजावनो। चचला
चमक संग मेह गरजावन त्यों झंझा पौन ला-

वन पपीहरा को गावनो ॥ हिय हुलसावन ब-सावन समाज सुख मन तरसावन लगत मन भावनो । ताप को नसावन सलिल बरसावन सुमोद सरसावन ये सावन सुहावनो ॥

गंधौली ज़िला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जी उपनाम ब्रजराज ।

गावन मलार सुर तार को बजावन न भावत है एरी मोको झूलन झुलावनो । घेरि घन आवन मयूर रट लावन औ चंचला को चारो ओर चमक चलावनो ॥ चूनरी रँगावन सुमेंहदी रचावन अलीगन को आवन विनाहक सतावनो । टावन विना री ब्रजराज मनभावन के लागे विन लागत न सावन सुहावनो ॥

गयानिवासी प० गिरधारीलाल जी गयावाल ।

घूमिवो घटा को अरु झूमिवो सुवेलिन को दामिनी दमकिवो पपीहा रटि लावनो । भेंकन को बोलिवो औ डोलिवो समीर सीरे बार बार मोरहुं को सोरहु मचावनो ॥ गिरधारीलाल कहै

झूलिबो सु झूलन की त्योंही वहु फूलन के से-
जहिँ विछावनो । पावन परति याकी नाव नहि
लीजै मोहि भावन बिना न लागै सावन सुहा-
वनो ॥

काहे को अयान भाँति मान ठान वैठी आज
सुनि ये चवाइन के झूठ वहकावनो । ईस की
दुहाई वीर साँच मैं वखानत हौं अकलंक सरल
है तेरो मनभावनो ॥ कहैं गिरधारीलाल मान
कही मेरी अब वेगि छाड़ि दीजै चित द्वेष उप-
जावनो । भौंहन चढ़ावो जनि क्रोधहिं वढ़ावो
जनि विरथा वितावो जनि सावन सुहावनो ॥

पटनानिवासी वाबू पत्तनलाल जी ।

पूछति कहा री वीर वार वार मोतें आप तू
तो है सयानी कहा तोहि समुझावनो । आवनो
तो दूरि रह्यो धावनो पठायो नाहिँ कैसो नि-
रमोही हाय होय रह्यो भावनो ॥ जावनो उन्हीं
पै सब हालत सुनावनो बुझावनो वनाय बात
काहू भाँति लावनो । दिन ना वितावनो भु-

लावनो न मेरी सुधि आइ जानो रहते री सावन सुहावनो ॥

धन्य हौ हमारे मनभावन कहावन कों आवनो तो दूर ना सँदेसहु पठावनो । कहाँ लौं उराहनों पठाऊँ लिखि प्यारे तुमैं जानत अजान बनै ताहि का बुभावनो ॥ कौन प्रीति रीति या जु आस दे निरास करी बरसों पर आवनो न, परसों कहि जावनो । आपुही बिचारिये सुसील बिनु आप कैसे काटैं दिन रात आयो सावन सुहावनो ॥

बाबू शिवनन्दनसहाय हेड किरानी जजी पटना ।

दामिन दमंक अरु घन की घमंक घोर जुगनू चमंक हीय भीत उपजावनो । कोइल की कूकें मोरगन की कुहूकें भंभा पौनहू की भूकें हूकें लूकें बरसावनो ॥ नाहर से गरज रहे हैं नद नाहरहू नाह बिनु चाहे ये वियोगिनी चवावनो । ऐसोही अपावन त्यों अबला सतावन को छिः छिः सिव भाषत हौ सावन सुहावनो ॥

धावे लगें धीरे धीरे धुरवा अकास बीच से-
घन को शब्द होन लाग्यो मनभावनो । नाचै
लगे मोर चहुँ ओर त्यों उमंग भरे गावै लगी
कोकिल सु हीय हरसावनो ॥ झूमै लगीं द्रुमन
पै लोनी सु लवंगलता गूंजै लगै भौंर मनमोद
उपजावनो । दुख झारसावन सनेह सरसावन
सो आय गयो फेर सिव सावन सुहावनो ॥

चन्द्रकला बाई - बूँदी ।

वरषि वरषि वारि हरष वढ़ावत है करखत
चित्त री मलारन को गावनौं । औरैं भाँति के-
किन की केका सुनियत आली चातक सुनात
वैन सुख सरसावनौं ॥ चन्दकला मन्द मन्द शी·
तल समीर वहै फरकत वाम अंग मेरो मनभा-
वनौं । ऐहैं घनश्याम घन श्यामन मैं बीसों बिसैं
आवन लग्यो है अब सावन सुहावनौं ॥

सिहोर (काठियावाड़) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई

औषधि उपावन कों वुन्द वरसावन कों रंग
नभ सावन कों चित में सुहावनो । मान के

मिटावन कों प्रेम सरसावन कों काम उपजावन को संपा चमकावनो ॥ गोबिंद के गावन कों वेल के वढ़ावन कों भूमि हरियावन कों मोर के नचावनो । बिरही के तावन कों संगि के रिझावन कों आयो मनभावन या सावन सुहावनो ॥

वारिद के बुंद मन्द मन्द बरसत अरु मन्द मन्द बोलत मयूर मनभावनो । चंचला चमंक चहुंओर लसे मन्दमन्द मन्दमन्द मारुत सुहात सुख छावनो ॥ मन्दमन्द झूलत हिँडोरे नर नारि सबै मन्द मन्द पपिहा पुकारै पिय आवनो । गोविँद अनेक ऐसे कौतुक उपावन कों आयो मनभावन या सावन सुहावनो ॥

कानपुरनिवासी पं० ललिताप्रसाद जी त्रिवेदी ।

पपिहा पुकारै तौन प्रानही निकारै मारै कोयल हुंकारै धुरवानहू को धावनो । झिल्ली झनकारै जरै जूगुनू प्रजारै झारै झारै सी चपल चपलान को सतावनो ॥ मोर सोरि सोरि कान

फेरि कै जगावै मैन ललित न भावै नेक अलि-
गन गावनो । कैसे धरौं धीर मनभावन विदेस
वीर मोहि तौ लगै ना यह सावन सुहावनो ॥

छबीले कवि—बनारस ।

पट फहरात तामों त्रिविध समीर कढ़ै रंग वर केसर सुगन्ध सरसावनो । सुकवि छबीले पग नूपुर झनकदार झनकार्यो झींगुरन मन अनुभावनो । घोर स्वर बाँसुरी बजत गरजत मानो हसन दसन दुति दामिनी लजावनो । वीर ब्रज वीथिन वहार वरषा है संग आये घनस्याम बनि सावन सुहावनो ॥

छविपुंज बगर्यौ परै ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

अम्बर जु कारी घटा मोतीमाल बुंदे परे मांग लाल इन्द्रधनु खूब अगर्यो परै । कहै रससिंधु फेर कोयल सों कूकै कण्ठ नूपुर की झनकार

देख नगस्यो परै ॥ चली वानि कुंजन में प्रेम जो सरोवर पै स्याम संग जाय मिली पास डगस्यो परै। राधिका को रूप मानो चंचला की चका-चौंधि कुंज की लता तें छवि पुंज बगस्यो परै॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

लाहु लाहु दिन में सुलाख बार भाखौ तुम बाद बलबीर तू हमारे रगस्यो परै। लाऊँ यदि कुहू की अँध्यारी निसा माँह तऊ तन को प्रकास माहताब ज्यों बस्यो परै॥ धारत ही गेह की सुदेहरी के आगे पग ठौर ठौर भौंरन को भौर भगस्यो परै। कैसे ताहि लाऊँ लाल मालतीनिकुंज प्रति अंगन ते वाके छविपुंज बगस्यो परै॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

सुख महताब सों सहस्र गुनो आबदार हीरन को हार चारु कुच रगस्यो परै। बेनी द्विज वर्णत बनै ना वर्णा तेज ज्वाल कोटि मारतण्ड सो प्रकास अगस्यो परै॥ जेते गुन रूप के वि-

धाता ने बनाये बेस राधिका के गातन विलोकि सगर्यो परै। राहन में कुंज के चलौ तो मै दे-खाऊँ लाल छाहन में जाके छविपुंज बगर्यो परै॥

आये प्रात कित ते प्रभात ह्वौ हमारे भौन अंग अंग सिथिल विलोकि सगर्यो परै। वेनी द्विज बोलत ह्वौ आलसवलित बैन चलत इते ते उतै पग डगर्यो परै॥ अंजन अधर पीक अ-रुन कपोल राजै त्रिन गुन माल डगि उर अ-गर्यो परै। लाल लाल परम ललाम लाल आं-खिन ते आज गुंजमाल छवि पुंज बगर्यो परै॥

बाबू हरिशंकरप्रसाद बनारस।

जमुना के तीर दार फूल मार खेलिवे मों कहाँ लों सँभारै कन्धा अंचल टर्यो परै। गजब गुलाब नेक गुच्छ को उठावै कर मानो मैन साचे माँहि कंचन ढर्यो परै॥ भनै हरिशंकर लचकि लंक लफि जाति एक कुच ढाँकै एक कुच उ-घर्यो परै। अंग अंग प्यारी के अनंग को तरंग लखि स्याम होत दंग छविपुंज बगर्यो परै॥

पंडित अम्बिकादत्त व्यास—काशी।

आई धों कहाँ ते बिनु कारन लुनाई माई भरी मधुराई सों बिलोकन लगी हरै। कारो ककरेजा ज्यों करेजा कों निकारि रह्यो सीपहार धीरज के हार अरपी गरै॥ कवि अम्बादत्त मुसुकान वान आई कछु बात के कहत जनु फूल की लरी भरै। देखो गोरटी की छोरटी के या धुरैटे अँग चारिक दिना तें छविपुंज वगर्‌यो परै॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी।

पद कंज की लुनाई जेहर जरावताई किंकिनी कलोल कलहंस भगर्‌यो परै। पीतपट लकुट मकुट वनलाव सोहैं मोहैं हैं सुढार हार ही मे ढगर्‌यो परै॥ कुण्डल की जोत मुख चन्द तें दुचन्द होत मन्द मन्द तान ते सुमान पगर्‌यो परै। माधव जू मौजभरे चलु री देखाऊँ जहाँ माधुरी निकुंज छविपुंज वगर्‌यो परै॥

कवि पं० अम्बाशंकर जी—काशी।

असित सिँगार सार प्यार सों पिया पै चली काँटे की गलीन अंग २ रगर्‍यो परै। करी हरी चक्रवाक कीर भौंर मार मोर जोर भरे दौर २ झौर झगर्‍यो परै ॥ जलज सुवास को निवास आस पास होत हास की प्रकास फूल रास सगर्‍यो परै। इन्दु ते करोर गुनो आनन में आनन तें संकर सुकवि छविपुंज वगर्‍यो परै ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी।

झूलत हिँडोरे आज स्यामा स्याम वंसीवट पवन झकोरै पीतपट फहर्‍यो परै। त्योंही जरतारी सारी सुभग किनारीवारी भनत सुसील वार वार उघर्‍यो परै। ता समै की सोभा नहि कासु मन लोभा अंग अंगनि लुनाई छिन छिन छहर्‍यो परै। वारन तें हारन तें हँसनि उचारन तें अकथ अतीव छविपुंज वगर्‍यो परै ॥

वैठी स्यामा स्याम-सोच सूने केलिमन्दिर में घेरि घन आयो वार वार घहर्‍यो परै। जैसे

जैसे वसंत अपार झरझार नीर तैसे तैसे नैनन ते लोर झहर्‍यो परै । ऊरध उसास चलै आस तें निरास भई कौनहू उपाय मन नाहिँ ठहर्‍यो परै । हाय वही कुंजन में कहर्‍यो करै है जहाँ संग में सुसील छबि पुंज बगर्‍यो परै ॥

महाराजकुमार गौरीप्रसादसिंहजी गिद्धौर ।

हिलन हमेल हार हीरन हसन मन्द झन-कार पैजनी पै प्रान फहर्‍यो परै । चातुरी वचन चारु चिबुक चलन मन्द चचल चितौन पर चित छहर्‍यो परै ॥ लोनी लट लोयन लचीलो छीन लंक पै लजीलो मन लालची लटू ह्वै लहर्‍यो परै । वारिज बदन बेंदी भाल त्यों बसन बेस बेसर पै आज छविपुंज बगर्‍यो परै ॥

गंधौली ज़िला सीतापुरनिवासी बाबू जुगलकिशोर जी उपनाम ब्रजराज ।

कहाँ रैनि जागे मो अभागे घर आये भोर अंगन अनंगहू ते रूप अगर्‍यो परै । जैये तहाँ जैये जू मनैये ना बितैये दिन उनसों इते न कहूँ

आनि भगरयो परै॥ मेरे तऊ उनके औ उनके तौ उनहीं के एहो ब्रजराज अब क्यौं न डगरयौ परै। लाली भरे लाज भरे आलस-समान भरे नैनन ते आज छविपुंज वगरयो परै॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलालजी गयावाल।

भौंहन विसाल अरु बोलति रसाल वैन हालई जो गौन आई वा गुवाल के घरै। इन्दु के से आनन औ अरविन्द के से दृग मन्द मन्द चाल सें गयन्द मद को हरै॥ गिरधारीलाल अहै महा सुकुमारि वाल सिसकी भरति जौन नेकु कर को धरै। आज ब्रजराज मै मिलेहौं तिहि संग जाको अंग अंग मंजु छवि पुंज वगरयौ परै॥

कानपुरनिवासी पं० ललितप्रसाद जी त्रिवेदी।

छोटी २ बूँदन फुहारै घन भारै नीर पवन झुकारै डारै भूमि रगरी परै। गावति मलारै अलि विविध विहारै भरि धारै मुद पपिहा पुकारै अगरी परै॥ झूलति हिंडोरे स्यामस्यामा

वहु बाम संग तीनो लोक सुखमा ललित ड-गरी परै। कुंज खग गुंज अलि मंजु मिली वृ-न्दावन आजु सखि कुंज छबिपुंज बगरी परै॥

चन्द्रकलाबाई—बूंदी।

गावत गुविन्द गीत मुरली मनोहर मैं लै लै नाम तेरो री विशेष उघरयो परै। नाचत गुवाल वाल दै दै ताल नाना भाँति लखि लखि लोयन को मन तगस्यो परै। चन्द्रकला लपटो ल-वंगलता तालन में वहत बयार मैं सुगन्ध घवरयो परै। गुंजत मलिन्द आली डोलत निकुंजन मैं चलि री विलोकि छवि पुंज बगरयो परै॥

चौदहवां अधिवेशन।

आज वा कदम्बतरे रंग बरसत है।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु।

सघन निकुंज तामें फूल को हिंडोरा साज फूलन को झूमकाहू सोभा सरसत है। कहे रससिन्धु तहाँ झुण्डन की झुण्ड सखी राधिका

विराजे बाम देख हरसत है । बद्दल जु घेर घेर गरजें वे बेर बेर चंचला चमंकै मेह आयो दरसत है । झूलत हिँडोरे स्याम कालिन्दी कूलन पर आज वा कदम्बतरे रङ्ग बरसत है॥

सुन्दर सलोने नैन पैने जो रसीले बैन देखे जिय परे चैन मैन हरसत है । कहै रससिन्धु फेर करत सिँगार खूब दर्पन ले देख रही सोभा सरसत है ॥ बातन बनाय नेह घातन लगाय बाल स्याम सो मिलाय गई कुच परसत है । अंगन सों अग लाय चूमे मुख बेर बेर आज वा कदम्ब तरे रग बरसत है ॥

कवि पं० अम्बाशंकर जी—काशी ।

मन्द २ गरज तरज डफ ढोल वजैं झिल्ली झनकार झाँझ वाँकी सरसत है । कूकत सिखण्डी हूकि फूकैं तुरही की तान अविर मुकेस बज जुगनू दरसत है ॥ संकर सुकवि नृत्यकारी दामिनी है तहाँ गावत धमार पौन झंझा हरसत है । घन पिचकारी लिये पावस रचाई फाग आज वा कदंबतरे रंग बरसत है ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी।

आली री दिखाऊ तोहि कौतुकी कदंब एक मूलमे जुगल कंज भूमि परसत है। तापै जुग रंभ खंभ दामिनी दमक तामै सर पै कपोत सोम सोभा दरसत है। सोम पै कलापी कीर खंजन कलोल करैं खंजन पै नीलकंठ सोभा सरसत है। माधव सो न बोलै तू चलियो हमारे संग आजु वा कदंबतरे रग बरसत है॥

बाबू हरिशंकरप्रसाद बनारस।

साँवरो बटोरि कै अनेक रूपवारी नारी काहू मुख चूमै काहू कुच परसत है। डर वृष-भान के अकेली कैसे जाँउ आली छटा देखिवे को मेरो जीव तरसत है॥ मानो हरिशंकर अ-मित भाँति साजि पाँति देह वनिता की धरे काम दरसत है। काल्हि लौं उड़ि कै गरद खड़ खड़ाने पत्र आजु वा कदंवतरे रंग वरसत है॥

काशीनिवासी रूपचन्द जो वल्लभीय।

चलै री चलै तू अब करै ना विलंब नेक दे-

खिवे को वीर मेरो चित्त तरसत है। घेरे घन-घोर बोलैं कोकिल किसोर मोर चारोओर त्रि-विधि समीर सरसत है ॥ झूलत हिँडोर प्यारे नवलकिसोर दोऊ बाजत अनेक वाद्य मोद द-रसत है। गावत हिँडोर मेघ मधुर मलार गुंड आज वा कदंबतरे रंग बरसत है ॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथ जी।

हरी हरी डारिन मैं हरित हिँडोर राजै ह-रित फँदे हैं फांद डोर दरसत है। हरी हरी सखियाँ झुलावति हैं स्यामा स्याम गावती म-लार मंजु सोभा तरसत है ॥ कारी अँधियारी भारी बीजुरी चमंकै चारु मन्द मन्द मारुत फु-हीरी सरसत है। भींजि पट अंगन ते रगहू के-दार चुँवै आजु वा कदंबतरे रंग बरसत है ॥

कोपागंजनिवासी मारकंडेलाल वपनाम चिरजीव कवि,

चंचला चमक चकचौंध चहुँओर ओप अविर अँधेरो धुम्ब धाक दरसत है। पिहिक मयूर हीरी राग झींगुरन झाँझ गरज मृदंग जाते अंग

हरसत है ॥ कवि चिरजीव चलो लाडिली दि-
खाऊँ जहाँ पावस मैं फाग को प्रमोद सरसत
है। करि कै उमग मेघमण्डल महीतल मैं आज
वा कदंब तरे रंग बरसत है ॥

जुवती बेचारिन ते जल मे जोड़ाये हाथ
जाके नंग अग ते अनंग सरसत है। आप चढ़े
कदम चोराय चीर कालिंदी पै कान्ह की कलानि
मैं खोटाई दरसत है । कवि चिरजीव कह्यौ
ताहू पै जु आवो पास पैहो तबै बसन जु अंग
परसत है। ढंग होय जात लोग ढंग को बिलोकि
जाके आज वा कदम्बतरे रंग बरसत है ॥

पटनानिवासी बाबू पन्ननलाल जी ।

लाल फालसाई औ गुलाबी गुलाबाँसी पट
काहू पै बदामी गुलेनार सरसत है। जरद च-
मेली काहू काहु धानी गन्धकी त्यों काहू आ-
समानी पीरोजई दरसत है ॥ सकल अनन्दभरी
झूलतीं हिंडोरे चारु भींगि पेंग मारैं लखि जीय
तरसत है। चलि री सुसील प्यारी लोचन को

लाहु लहै आज वा कदम्ब तरे रङ्ग वरसत है॥

एक मिलि एकन सों सुर हरषाय आली सारती हैं तान जाय नभ परसत है। एक लै सितार एक ढोलक पखावज लै एक बाँसुरी व-जाय संग सरसत है॥ चहूंओर लाखन की भीर अभिलाष भरी एकन के आगे एक जान तरसत है। सुघर हिँडोरे स्यामा स्याम जू सुसील झूलैं आजु वा कदम्बतरे रङ्ग वरसत है॥

महाराजकुमार गौरीप्रसादसिंहजी गिद्दौर।

हरषि हिँडोरे चढ़ी नागरीन संग वृषुभान की किसोरी हिये मैन वरसत है। वसन सुवेस सजे चंपई हरीरो लाल झूलें झुकि झूमि त्यों उमंग सरसत है। लर पुखराज पन्ना मानिक लौं कैधौं प्रतिविम्ब इन्द्रधनु की अवनी पै दर-सत है। झूलन में उड़त दुकूल की वहार कैधौं आज वा कदम्बतरे रंग वरसत है॥

गयानिवासी पं॰ गिरधारीलालजी गयावाल।

मलि मलि गाल पै गुलाल है उमंग भरे

ग्वालन के सहित गोपाल हरसत है। कहै गिरधारीलाल गारी पढ़ि बार बार युगल उरोज पर कर धरसत है॥ हौंतो उतही ते चलि आवति हौं एरी वीर देखो ना हमारो रूप कैसो दरसत है। अम्ब की सौं भूलहूं न जाय वहि कुंजओर आज वा कदम्बतरे रङ्ग बरसत है॥

गधौली जिला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जी उपनाम ब्रजराज।

दौरि दुरि आली देखु दीपति दुहूं को दुवो दंपति सरूप से अनूप दरसत है। गोरे स्यामताई स्यामताई में गोराई आई रंगन को झाँई रंग औरै मरसत है॥ राधे में कन्हाई ब्रजराज वृषभानुजाई अंग प्रतिविम्ब अग अग परसत है। एरी सुख साज को समाज करि ठाढे सखी आज वा कदम्बतरे रंग बरसत है॥

बाबू शिवनन्दनसहाय हेड किरानी जजी पटना।

गोरी वैस थोरी लिये रोरी त्यों गुलाल भोरी रची है सु होरी पेख हीय हरसत है। लाल मेघ

माल नाईं छाई है चहूघा सिव तामें घनस्याम घनस्याम दरसत है। डफ की अवाज सोई गरज दरान होत बीजुरी सी राधा रूप ओप सरसत है। होयगो अनन्द अंग अंग जाय देखो ढंग आज वा कदंबतरे रंग वरसत है ॥

सिहोर [काठियावाड] निवासी कबि गोविन्दगीलाभाई।

जाके तल तेह धरि दोउ उठ गये पुनि फेरही मिलन वाके जीव तरसत है। यातें अपसोस करि दोऊ पछताइ अति आँखिन तें आँसुन के बुंद वरसत है ॥ गोविंद गुमान तजि सोई एक दूजा अव आप तें मनाइ आली हिय हरषत है। चाह तें सकारे सोय गोपिका गुपाल मिलि आज वा कदम्बतरे रंग बरसत है ॥

सोहत सघन बन वेस अरु छाजन तें धूप न धरा में तहाँ नेक दरसत है। झरना झरत एक उते अभिराम ताको सीतल सलील लखि हीय हरषत है ॥ गोविंद सुकवि तहाँ कदँव कदंव जू के विमल बिराजी अति शोभा सरसत है ।

गोपिका गुपाल मिलि खेले तिति फाग मानो आज वा कदंबतरे रंग बरसत है ॥

कानपुरनिवासी पं० ललितप्रसाद जी त्रिवेदी ।

नवलकिशोरी गोरी थोरी २ बैसवारी रेसम की डोरी गहे सोभा सरसत है । झूकन झुलावै कोऊ गावै हरखावै कोऊ कोऊ रतिभाव भरी धाइ परसत है ॥ हँसति हँसावति बढावति प्रमोद मन ललित अनूप सुख सोभा दरसत है । झूलै स्यामा स्याम संग जुगुल अनंग भरे आज वा कदंबतरे रंग बरसत है ॥

मनोज महाराज की ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाना जी महाराज उपनाम रससिंधु ।

बाजत नगारे घन धुरवा निसान लिये चं-चला चमंके तोप फेर जो अवाज की । कहै र-ससिन्धु तहाँ बद्दल की फौज साज हाथिन पै बैठ कारे लावत समाज को ॥ कोयल पपीहा मोर दादुरहू झिल्ली ओर बाटत है मेह दौर बूँदे

झर आज की। पवन झकोर जोर करत है मोर सोर आवत सवारी ये मनोज महाराज की॥

चलो आज कुंजन में सघन निकुंजन में सखिन के पुंजन में सोभा वो समाज की। कहै रससिन्धु फेर जमुनाजी पास वहै बोलत पपीहा मोर मधुर अवाज की॥ सखी बोले आइ तहाँ करी है तयारी जहाँ ब्रछन पै डोरी डार झूलन के साज की। झुलत झुलावत औ आप स्याम झूलत हैं करत कलोलै ये मनोज महाराज की॥

पंडित अम्बिकादत्त व्यास—काशी।

वेदिका बनाई वच्छथल की सुस्वच्छ अति अधिक लुनाई नीर सीची सुख साज की। पिंड जुग राखि तापैं मधुर निकाई सने हास दूधधारा ढरकाई इहिँ काज की॥ कवि अम्बादत्त रोम पाँति तिल पाँति राजै नौवी ससरनि वलि ठानी छवि छाज की। तीय तन तीरथ में जोवन से मित्र आज श्राद्ध विधि कीनी है मनोज महाराज को॥

पण्डित अम्बाशङ्कर जी – काशी ।

चलो २ तीर भानुजा कदंब तरे झूलत हिँ डोरे दोऊ सोभा अति आज की। एक ओर सं कर झुलावै बनि गोपी रूप दूजी अरधङ्गिनि ह्वै गोपी गुरु लाज की ॥ गावत मल्हार सची सारद बिसारद जे नारद बजावैं बीन साता सुर साज की। वारों छबि रति की निहारि राधिका पै कोटि कोटि ब्रजराज पै मनोज महाराजकी॥

पं॰ केदारनाथ जी बनारस।

आयो पुनि व्रज पै पुरन्दर प्रकोपित ह्वै दमक दिसान होत दामिनी दराज की । घेरि घन घहरि घमगड घहरान लागे चातक चकोर मोर कोकिल अवाज की ॥ नाथ बिनु धीरज धस्यो ना जाइ पावस मे कैसे कै केदार जू बितैगी निसि आज की । ऊधो जाइ मोहन ते कहियो सँदेस मेरो पीर सहि जाइ ना मनोज महाराज की ॥

बा॰ हरिशङ्करप्रसाद जी—काशी।

ऐसो है उचित कि बियोग को पकड़वाय भेजि देवैं सिन्धुपार राह उखमाज को। नारी औ पुरुष को निहायत सतावत है प्यास भूलि जाय चाह होत न अनाज को। याही मोह-किमा जाको होत न अपील कहूं भनै हरिशंकर लचारी है रेवाज को। विरही मनुज दरखास देत थकि गये कोरट दिवानी है मनोज महा-राज को॥

बा॰ माधोदास जी—काशी।

कैधों काहू विरही ने ऐंच लियो मध्यभाग कोर की गोलाई सोई दसकैं द्विजराज को। कैधों सुधा सिधु माह बिंब रविमण्डल को कैधों रेख खाँची है विधाता सुख साज को॥ कैधों बस करिबे को माधव पिया को मन जन्त्री ये वसीकर औ मोहनी समाज को। चारु चपला सी खासी नत्थ राधिका की कैधौं भूलती है फाँसी ये मनोज महाराज को॥

सुजचन्द जी बक्षभीय—काशी।

छवो रितु माहिँ छवो रितु की बहार हेतु इहैं राजधानी है अनादि रितुराज की। चातक चकोर मोर राजहंस कोकिलादि गावत हैं कीरति अनूप बाग राज की। गौरी पूजिबे को यहाँ आई है स्वयंवरीहु स्वामिनी जो आठहू सखिन सिरताज की। ताही के बजत ये हैं पायल मधुर मंजु बाजैं मनो दुन्दुभी मनोज महाराज की॥

मारकण्डेलाल उपनाम चिरजीवी कवि - कोपागंज।

लिये खग्ग चपला चमक्कनि दिखाय आय प्रानन सुखाय दीन्ही दीपन के नाज की। बूँदन के बान धरे सान बेधि गातन को बातन भुलाय दीन्ही सहस समाज की॥ कवि चिरजीव जाके प्रीतम विदेश छाये आये नाहि अजौं बेस बैस मे अकाज की। खोज खोज मारतीं सरोजनैनी को रोज चोजभरी घटा ये मनोज महाराज की॥

भयो ना अँधेरो भानु छिपिते हमारो वीर

उड़ी रेनु छायो धुम्ब सारे मग ताज की । चप-
ला चमक ये न दीपत उलंग असि गरज न येरी
धुनि रन बाघ बाज की ॥ कबि चिरजीवी हमैं
प्रीतम बिहीन जानि कीन्हो है समान बधिवे
के वेस साज की । घटा ये न नभ मैं हमारी
प्रानप्यारी सुनो प्रानहारी फौज ये मनोज म-
हाराज की ॥

अयोध्याप्रसाद (स्याम) बाकरगन – बांकीपुर ।

कठिन है जीतिवे को देह कामनी को देस
प्रबल है दल स्याम तीर नीक साज की । सो-
रहो सिंगार सोई शस्त्र वेसुमार जानो अंग अंग
सुन्दर सिपाह सब काज की ॥ धारे टोप कारे
कुच सोहैं फौजदार दोऊ मधुर नगारे धुनि
नूपुर के बाज की । जग थहरात फहरात जब
दूरही ते अंचल पताका है मनोज महाराज की॥

गयानिवासी पं॰ गिरधारीलाल जी गयावाल ।

दौंके करवाल बिकराल द्युति दामिनी के
तैसई पताका घूमै बकन समाज की । पैदल

मयूर अरु दादुरन फैलि रहे घनघोर तोप वृन्द प्रबल अवाज को ॥ गिरधारीलाल कहै मिलु री गुपाल संग कैसेहू न रहिहै गुमानी वीर आज को । मानिनी के मान गढ़ तोरिबे को चलो आवै सेना लिये पावस मनोज महाराज को ॥

बाबू शिवनन्दनसहाय हेड किरानी जजी पटना ।

कुंजन लतान नाहीं काम के बितान तने भूमि हरिआई ना दरी है सब साज को । कारे नाहिँ बादर मतंग मतवारे सारे गरज न होत धुनि सलख अवाज को ॥ चपला चमक नाहीं खुले हैं सुकरवाल चातक को भीर नाहीं सेना के समाज को । बूंदन को धारा ये न जानो सर धारा सिव पावस चढ़ाई ना मनोज महाराज को ॥

पटनानिवासी बाबू पन्ननलाल जी ।

फूलन की थूनी बनी पटली सुफूलन की लसति हिँडोरे डोरी फूलन के साज को । फूलन की सेज तापै राजि ब्रजराज रहे फूलन को

साज सजी राधा छवि आज की ॥ फूलन की माल गरे कंकन सुफूलन के फूलन के कर्नफूल फूलन समाज की। देखि चकाचौंधी लगी सुधि हू सुसील भूली रति रितुराज की मनोज महाराज की ॥

हग अँधियारी छई सीस सित केस भये नितही सिकायत है पचन अनाज की। तऊ रंजि अंजन लगाय कै खिजाव चलैं ढूंढ़त किताब दवा थंभन दराज की । जात अबलागन कौं घूरि घूरि देखत हैं होय कै निलाज नेकु लाज न समाज की। सौक साज बाज की मिटी ना राज़ नाज़ की सु मौज है हनोजहू मनोज महाराज की ॥

महाराजकुमार गौरीप्रसादसिंहजी गिद्धौर।

छिन छिन कानन की ओर बढ़ो जाति मन मेरो लखि औरैं भयो सोभा कछु आज की। रहत न नेक सुधि डसत अवैहौं तवै तन की न मन की न सुखद समाज की ॥ इत उत जात

दौरि रहत न क्योंहू थिर बस करिबे को जग विधि मनु काज की। सावक कुरंग कैधौं विषम भुजंग कैधौं चपल तुरंग ना मनोज महाराज की॥

गंधौली ज़िला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जी उपनाम ब्रजराज।

लोचन लखात मदमोचन जपा के दल पल रोसन भमर सुख साज की। अधर कपोलन हिये पै घने दीसैं छत रातेई दुकूलन बिलोकी छवि आज की॥ कित रमि रैनि ब्रजराज भोर आये दूत नित तित हित जित नित रति काज की। रोज रोजवारी नहीं मौज चोज खोज मानो ओजभरी मूरति मनोजमहाराज की॥

कानपुरनिवासी पं० ललिताप्रसाद जी त्रिवेदी।

कोकिल के कूकनि मैं मारुत के भूकनि मैं भौंर मुख फूकनि मैं चातक अवाज की। किंशुक अनारन मैं मंजु कचनारन मैं बौरे अम्ब डारन मैं सामा सजे साज की॥ वाटिका सु-

बागन में विपिनि तड़ागन मैं ललित सुरागन मैं दुति रितुराज की । जगत मझाई विरहीन पै चढ़ाई करि फिरति दुहाई है मनोज महा-राज की ॥

बाबू पयोध्यासिंह मधुबन जिला आजमगढ ।

बादर न होंय चढी तोपैं चली आवति हैं गरज न होत फैली धुनि है अवाज की । बूंदैं ना परति बरषत हैं विषीले वान इन्द्रधनु है ना है कमान रन काज की ॥ हरि-औध धुरवा न होंहिँ फाँस जँवरी है झर ना लगी है झरी आयुध समाज की । बीजुरी न होय एरी बधन वियोगिनी को तीखन कृपान है मनोज महा-राज की ॥

सिहोर (काठियावाड़) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई

चामर चिकुर अरु गौन गजराज सोहै ऊ-रज गुरज अति ओपे युवराज की । सोहै भ्रुव चाप अरु कोंधत कटाच्छ वान नेजा फहरात नत्थ दीपति दराज की ॥ कंचुकी कवच साज

कर्नफूल ढाल धरि नेवर निनाद शकशूर के स-
माज की । गोबिँद सुकवि ऐसे बाल बपु सैन
साज आवत सवारी ये मनोज महाराज की ॥

पन्द्रहवां अधिवेशन ।

मिती भादों शुक्ल १ सम्वत् १९५१

प्यार की आँखनि में ।

काशीनिवासी श्री १०५ छन्नूलाल जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

सुन्दर रूप सलोनि हैं नैन जू अम्मृत वच मृदु
भाखनि में । रससिन्धु कहे चलि वेगि लली
नहि तोसी तिया कोइ लाखनि में ॥ फिर साँ-
वरे स्याम सो जाय मिली तहाँ रूप सुधारस
चाखनि में । सुरभायो नहीं सुरझै हैं सखी उ-
रझ्यो मन प्यार की आँखनि में ॥

माखन सों अति कोमल गात जु अधर मधुर
रस चाखनि में । रससिंधु कहे लट नागिन सी
जुलुफैं भवराक्रात भाखनि में ॥ कटि सिंहन सी

कुच कंज लसैं नहीं ऐसी तिया कोउ लाखनि में। मन मेरो लग्यो है भला सजनी सुन तेरिये प्यार की आँखनि में॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

कत झूठ दुराव करै सजनी रजनी बिती लाख ऽभिलाखनि में। बलबीर सों बीर मिली कसिकै मिसि कै क्यों दुरावति या खनि में॥ मसकी उर कंचुकी बार खिले कह टेडूँगे भेट ये लाखनि में। यह साँच है बीर कहो जग को न छिपै पिय प्यार की आखनि में॥

पण्डित अम्बिकादत्त व्यास – काशी।

यह गाल के गाड़न सों गड़ि जात सी लागै सुहावनी लाखनि मैं। अँचरा झटकाय हठीली हँसै भरमावति भोरे से भाखनि मैं॥ कवि अ-म्बिकादत्त जू ग्वारि गँवारि धरै चतुराई क्यों लाखनि मैं। करि जोर बरेजो सो ऐंचि रही है बड़ी बड़ी प्यार की आँखनि मैं॥

मधुराई इती कहा ह्वै है कहा सुपियूखन मा-

खन दाखनि मैं। छवि पुंज इतो न बिलोक्यौ कहूं लखे सुन्दर लाखन लाखनि मैं॥ कवि अम्बिकादत्त सुनाई लखी वह आवति क्यौंहू न भाखनि मैं। जग तन्त्र बसीकर है जो कहूं तो बिलोक्यो सो प्यार की आँखनि मैं॥

कवि पं॰ अम्बाशंकर जी—काशी।

एरी सखी बहलावति है यह झूठी बनावट भाखनि मैं। कहि साँचो सहाय करौं अबहीं नहिँ नेक भलो ढकि राखनि मैं॥ तुम अङ्ग कहै अरु रंग कहै पुनि ढग कहै पग नाखनि मैं। कवि संकर की करि सौंह कहौं सब जाहिर प्यार की आँखनि मैं॥

इजचन्द जी बल्लभीय—काशी।

विषयी अरु स्वारथी को निदरैं ललकारि कहैं हम लाखनि मैं। इहि ते रस बारहो त्यागि सदा थिरता नय नेह के राखनि मैं॥ नहि जानिये काह पढी किहि पै तुम दोष सहो कटु भाखनि मैं। छल वर्जित दीह दया मृदुता निबसै नित प्रेम की आखनि मैं॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथ जी।

यह भारी लगावनी लाग है री ना छूटै उपचार के लाखनि मैं। मन मानिक जात बिकाय सिदाम सनेह सनै मृदु भाखनि मैं॥ कछु और की औरई दीसै केदार सुधा अधरारस चाखनि मैं। सुख ऊधो लह्यो ना कोऊ जगमें दुख दून है प्यार की भाखनि मैं॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

छिपै प्रीत की रीत छिपाये नहीं यह बात प्रसिद्ध है लाखनि मैं। झलकै सब गातन गातन ते अरु प्रेममई मृदु भाखनि मैं॥ द्विज बेनी सों काह दुरावती हौ धरी लाज उठाय कै ताखनि मैं॥ दरसै रद दाग कपोल घने बरसै रंग प्यार की आखिन मैं॥

लगतीं पलकैं न पलौं छन हैं मनहूवही की अभिलाखनि मैं। द्विज बेनी न दीठ है दीठही की तकै प्यारी चपै नहीं लाखनि मैं॥ दरसै उनकों माहि अनवर परपूरन दोहुन पाखनि मैं।

रंग यार को वेस बहार भरो नमूदार है प्यार की आंखनि मै ॥

महाराजकुमार गौरीप्रसादसिंहजी गिहौर।

गुरु लोगन में लखि आयो गोविन्द प्रसेद छुव्यो तिय ता मन में। तन सेद को भेद न जानै कोउ यह मोचि चलो अभिलाखन में ॥ सँग जाति सहेलिनहूं तें छपायो चहै कहि बैन सुलाखन में। अँगिराय जम्हाय दुरावै तऊ प्रगट्यो परे प्यार की आँखन में ॥

गंधौली ज़िला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जी उपनाम ब्रजराज।

कोहूं दुरै नवनेह नहीं करती रहो लाखन साखिन में। वा दिन की मुसकान चुभी चित है गति ज्यौं मधु माखिन में ॥ भाँवरो सी ब्रजराज भरै नित तेरिये गोहन वा खिन में। जाहिर होत अरी प्रतिबिम्ब तो प्यारे को प्यार की आँखिन में ॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी।

निसि सारी टहं की ससील बिती सखु सों

अनुराग की हँसिन में। नभ लाली बिलोकि के माँगी बिदा घबराइ के प्रीतम ता छिन में॥ ललना अकुलाइ लगी गर सौं सुधि बोलन की ना रही तिन में। मुख दोऊ दोऊ को निहारि रहे भरि वारि सुप्यार की आँखिन में॥

पिय सोच पिया जिय सोच तिहि सखियां पिय लाइ के ता छिन में। मिस के हँसि कै बतरावे लगीं सुनैं आइहैं प्रीतम या खिन में॥ सुनि बाल कहै अस भाग कहाँ प्रगव्यौ पी स-हेट तें वा खिन में। ललना सकुचानी लजानी महा भरे वारि सुप्यार की आंखिन में॥

अब काहुहिँ काह गुदानहुगी तुमही तुम एक ही या छिन में। सुख सों सुख लूटन माहिँ सकोच रही अब राति न ना दिन में॥ वहु बात तो भूलही भूल गई परती रही पाय छिनै छिन में। तब तें कछु औरे भई जब तें गड़ी यार के प्यार की आँखिन में॥

सुखकन्द नहीं मिसरी में नहीं नहिँ दाखन

माखन चाखनि में । सुख नाहिँ मिलै उर राखनि में हँसिकै खिसकौ नहि भाखनि में॥ सुख जैते सुसील प्रवीन भने हम ढूंढ़े भली बिधि लाखनि में । सुख है सुख तो बस एकही है वह प्यारी के प्यार की आँखनि में ॥

बाबू शिवनन्दनसहाय हेड किरानी जजी पटना ।

लेन गई प्रिय प्रीतम को दई मारी पगी रस चाखनि में । आई इतै दरकी कँचुकी कहै फाट गई लगि झाँखन में ॥ बात छिपाये छपात न री सिव सौंहें करे किन लाखनि में । आरसी लेकै निहारे भजों छवि छाई है प्यार की अँखनिमें॥

गयानिवासी पं॰ गिरधारीलाल जी गयावाल ।

किन होठन दन्त के दाग धरे रति से अधरामृत चाखनि में । कहु क्यों न हिये हरवा न गडे उर प्रीतम को कसि राखनि में ॥ गिरधारी कहै अलि क्यों न लगै तुतरानि सुधामयी भाखनि में । घनस्याम मिल्यौ तब क्यों न बढ़ै ये ललाई री प्यार की आँखनि में ॥

कद छोटी महा सुकुमारि अहै ससि सी द्युति धारति है तन में । अरु रागिनी रागहु जानति है सब हाव औ भाव करै छन में ॥ कटि छीन नवीन है वैस की बीनहि हीन करै मृदु वैनन मे । गिरधारी इते पर क्यों न वसै तिय प्यारे के प्यार की आंखनि में ॥

कानपुरनिवासी पं० ललिताप्रसाद जी त्रिवेदी ।

धन भूरे समेटन में चसकी सिसकी सो भरै अभिलाखन में। ललिते वा यदा की सदा किये चाह हिये ते भुलाति है नाखिन में ॥ तनहू मन वारे रहै नित जो वित को कहा वावर भाखिन में। मृदु मन्द हँसी सो रसी सो वसी रहै यार को प्यार की आखिन में ॥

बाबू अयोध्यासिंह मधुवन ज़िला आज़मगढ़ ।

कछु प्रीति की रीति ही ऐसी अहै दिन जात चले अभिलाखन में। नित होत है पीर नई हिय में दुख होत घनो हित भाखन में ॥ हरि-औध दयानिधि मों हों चहों न भरै कोउ या

रुचि राखन में। मन काहु को काहु सों लागै न री न परै कोउ प्यार की आँखन में॥

लखि सुन्दरता नहि मोहै कोऊ न ह्वै परि कै अभिलाखन में। नहि नेह सों पालो परै कबहूं न रमै कोउ या रस राखन में॥ हरिऔध सदा हौं चहौं हरि सों विलमै न कोउ कल वाखन में। मन काहु को काहु सों लागै न री न परै कोउ प्यार की आँखन में॥

सिहोर [काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगीलाभाई।

मन मेरो चल्यौ मुरवा तजि कै वह जाय फँस्यो शुभ काखनि मैं। उनते निकसौ कुच शैल चढी उतरत्त गिर्यो गथ लाखनि मैं॥ कवि गोविँद नीठ चल्यो उनतें पह जाय बस्यो मृदु भाखनि मैं। निकसो उततें पुनि आय फस्यो तरुनी तुव प्यार की आखनि मैं॥

मलिन्द मतवारे से।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

करत सिँगार चारु केश को सँवार रहीं काँच लिये देखे बाल चोवा तेउ कारे से। कहै रस-सिंधु फेर जूड़ा को जू बाँधी जाल अलिन की बैठी पाँति जुल्फे घुघरारे से॥ एते बीच आये स्याम मिले अभिराम वाम खूब भई घाम धाम नैन अनियारे से। राधा अरविन्द मुख चूमे कृष्ण भोर मानो रूप रस छके ये मलिन्द मतवारे से॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

आई दधिवेचन काहू ते ब्रजमण्डल में गो-पिन को कान्ह जहाँ लागत हमारे से। कोमल मृणाल कैसो सुन्दर सुबाहु दोऊ अंग को सु-बास मानो पद्म विकसारे से॥ दरिआई कंचुकी में लसत उरोज जुग सुन्दर सरोज ज्यों सरोवर बगारे से। एरी अरविन्दमुखी कंजनैनी तूने बीर कीन्हे मनमोहन मलिन्द मतवारे से॥

मान करि मौन गहि बैठी मनमोनन सौं मो तन निहार नेक नैन रतनारे से । बागन बहार बन बीथिन बिलोकि बीर बस ना बसैगो या बसन्त बजमारे से ॥ गरबीली गूजरी तू गरब गुमान छाड़ि गाँठ गहु प्रेम की गुबिन्द गुनवारे से । ठौर ठौर कूकैं कोर कोकिलाकलाप बीर भौर भौर झूमत मलिन्द मतवारे से ॥

आली निज भूल का कहानी क्यों बखानी जाय कीन्हों हौं गुमान वा गुबिन्द गुनवारे से । नेक हौं न मानी वे मनाय बीर थाके अब हसि के सु जानी गह-सौतिन पधारे से ॥ तब हौं बखानौंगी प्रवीणता सु तेरी जौपै आली तू मिलावेगी हमारे प्राणप्यारे से । सौतिन के मद में मतंग मदमाते बीर कै है मनमोहन मलिन्द मतवारे से ॥

प० केदारनाथ जी बनारस।

छिनक छपात हेरिबे को अकुलाय जात जैसे प्रभा लोपित चकोर पति तारे से । ला-

गोई रहत संग बैन सुधा पीजिबे को मुकता गुथोई करै जूरो छोरि बारे से ॥ हार सुरझावत केदार उरझोई जौन आँगी बन्द बाँधन करेर के पिठारे से । राधे मुख अमल अनूप अरविन्द ता पै मड़रात मोहन मलिन्द मतवारे से ॥

पंडित अम्बिकादत्त व्यास काशी।

चौपाई।

नैन कमल लखि उमँग भरे से।
भृकुटि व्याज जनु पाँति करे से ॥

सार।

आज नन्दनन्दन छबि वरनत सुकवि सवै हारे से
रोम रोम की सोभा कविगन गरूर गहि गारे से॥
पीरी खौर लिलार लसै तहँ कचहू घुंघरारे से ।
सोहत केसर कली चहूँदिस मलिन्दमतवारे से ॥

आर्य्या।

सोहत मन्द हँसत मुख छटके तापै सुकेस घुँ-घरारे से । विकसित अमल कमल पै मनहु झुके हैं मलिन्द मतवारे से ॥

में सुहात शनि तारे से ॥ मदन महीपति उछाह मे निमन्त्रण के सुललित पत्र पै सुबेस ग्रङ्क धारे से । गुंजाफल कैसे बिम्ब फल पर जम्बु कैसे प्रफुलित कञ्ज पै मलिन्द मतवारे से ॥

महाराजकुमार गौरीप्रसादसिंहजी गिद्दौर ।

हीरन-जटित बेंदी बाल भाल ऊपर तें बिचलि सुमानिक भो अधर प्रचारे से । हरित दुकूल पर पन्नन की छबि होत नीलमनि कंचुकी सुनील पर धारे से ॥ इन्दु गोद बुध सी बिनायक सी कंज पर बेलिन पै कीर छबि मंजुल सवारे से । सरवर रूप से सुमकरन्द कान आज इन्दीवर ऊपर मलिन्द मतवारे से ॥

गंधौली ज़िला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जो उपनाम ब्रजराज ।

फूले हैं अनार कचनार अंब डौर बौर एरी कूक कोकिल कै कोकिल पुकारे से । चलत समीर वीर सीतल सुगन्ध मन्द सुखद सयोगिन वियोगिन दवारे से ॥ मान को वरजि व्रजराज

को विलोके किन मदन कदन विरही को चित धारे से। एरी रितुराज की अवाई के करोल डोलै मन्द मन्द वीथिन मलिन्द मतवारे से ॥

बाबू शिवनन्दनसहाय हेड किरानी जजी पटना।

आय परी पल्टन बसन्त ऋतु कन्त सिव सेमर सुमन भाण्डा सुरुख उघारे से। बिटप सिपाही लाल पल्लव की वर्दी कसैं करनैल कोइल कवाइद उचारे से ॥ चटकाली है तोन छूटत बँदूक मनो मोरन ठनक होत बाजत नगारे से। चलत समीर हैं तुरंग हरकारे जिम फिरत अनन्द में मलिन्द मतवारे से ॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी।

लाल यह चाल कवौं रावरी छुटैगी नाहिँ कहूं रात कहूं प्रात भ्रमत सितारे से। बैठि एक डार बोलि माधुरी अमोल बोल चित लै परात हौ परिन्द परवारे से ॥ हाय वह ललना ललाति बिललाति महा नैकहु न जाय लखी दृग अनियारे से। कारे हौ विकारे भरे

गुलाब मैं सँवारे से ॥ हरिऔध राधिका की सुखमा कहां लौं कहों मीस लसैं मोती अन्ध-कार बिच तारे से। कारी कारी पूतरी अरुन अँखियान डोलैं अमल कमल मैं मलिन्द मत-वारे से ॥

छोटी छोटी आम की रसौली मजरीन काहिँ निकसि गुलावफूल सौरभ सवारे से । गुंजरत याही ओर देखु यह आवत है अति कमनीय कज वन के किनारे से ॥ हरिऔध की सौं आइ अवहीं मचैहै धूम गूंजि गूंजि आनन सुबास के सहारे से। भूलि अब भौन ते न बाहर कढोंगी कबौं जवि गई एरी या मलिन्द मतवारे से ॥

सिहोर [काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगोलाभाई ।

आवत वसन्त खिलि सुमन समाज देखो सी-तल सुगन्ध मन्द पौन बहै भारे से। राजत र-साल नवपल्लव विसाल पुनि विकसी पलास अति ओप अरुनारे से ॥ औरही अनेक फूल फूलि के मधुर महा मंजुल मरन्द बिसतारत अपारे से ॥

गोविँद सुकबि ताके पान करि चित्त छकि ठौर ठौर डोलत मलिन्द मतवारे से ॥

रंगभरी मूरति अनंगभरी अँखियाँ ।

काशीनिवासी श्री १०५ कन्हलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

वंसी की जु धुन सुन चौंक उठी ब्रजवाल छोड़ सब काम काज धीरज न रखियां। कहै रससिन्धु फेर भुण्डन की भुण्ड चली वंसीवट कुंजन में जाय मिली सखियां॥ बाजै मिरदंग संग वीन औ उपङ्ग चङ्ग सारँगी तालतरंग मैन रूप लखियां। राधा और स्याम दोऊ गावैं गल बांह दिये रंगभरी मूरत अनङ्गभरी अँखियां॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

वड़ी लाजवारी सील-गौरव-गुमानवारी ज्ञान मान बस तुच्छ कीन्ही सब सखियां। तुही एक ब्रज में पतिव्रत निवेहै वीर कोलों जोलों रूप-सुधा नैन नाहिँ चखियां॥ भूलि जैहै कुल को

गुमान नीति ज्ञान सबै निरखत साँवरे की माधुरी कनखियां। ताकनि तरङ्गभरी सूरत उमङ्ग भरी रङ्गभरी मूरति अनङ्गभरी अँखियां॥

बाबू हरिशंकरप्रसादब - नारस।

केती समुझाय हारीं मानति न काहू भाँति चलिबे को कहे कोप बारे भेख रखियां। एक दूसरी है याते रूप में अनूप नारि वाको जो बलैहैं स्याम ह्वै है प्रति पखियां॥ यासो चौगुनी है हरिशङ्कर सपथ करौं छवि औ सजावट मों सुनौ सब सखियां। अंगभरे भूषन उमंगभरे कुच दोऊ रंगभरी मूरति अनगभरी अँखियां॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी।

ऊधो जो वसीठो हेतु आयो है सुचीठो देत मीठी है के खाटी सो बताओ अरी सखियां। सबै रसभोगी है सुजोगिन बनावै मोहि हम तो वियोगी वा त्रिभंगी रूप लखियां॥ कूबरी कसाइन के पाइन परत हाय नाइन की जाइ ठकुराइन सी रखियां। माधौ को न भूलति है

सुरत सुहाई वह रंगभरी मूरत अनङ्गभरी अँखियां ॥

प० केदारनाथ जी – बनारस ।

बिथुरि गये हैं केस छूटि चहुंओर जूरो झूमक मुरे हैं कर्ण दोऊ ओर लखियां । मीस बिन्दु सरकि गया है कहूं और ठौर कज्जल कराई गई फैलि दोऊ चखियां ॥ पीक लीक लागी है कपोल पै केदार कैसे आई रस लेइ जैसे कंजन मों मखियां । मोतें क्यों छपावती बतावती ना एरी भटू रंगभरी मूरति अनंगभरी अँखियां ॥

काशीनिवासी हरचन्द जी वल्लभीय ।

वल्लभपियारो नन्दजसुदादुलारो ताहि सेवति निरन्तर तिहारी सब अखियां । तेरे बिन एहो ब्रजचन्द औ चकोरी तेरी होति हैं बिकल जैसे वार बिन झखियां ॥ धन्य धन्य भाग तिनके हैं ब्रजभूमि माहिँ लखति सदाहीं जो सयानी चारु चखियां । कब धौं निहारि हैं नयन ये हमारे तेरी रङ्गभरी मूरति अनङ्गभरी अँखियां ॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी ।

दुर री निगोड़ी नींद बैरिन हमारी भई दुर री निगोडी यह पावस की मखियां । कहा कहौं हाय तुम लोगहु हमारे हेत बैरिन भई हौ सबै प्रानप्यारी सखियां ॥ करतीं न बकबक सिरहाने जो हमारे बैठि काटतीं न मखियां न होती नींद पखियां । नाहिँ उड़ि जाती हरखाती लखि प्रीतम की रङ्गभरी मूरति अनङ्गभरी अँखियां॥

शिवनन्दनसहाय हेड किरानी जजी पटना ।

कहत बनै ना जस बनक लखी है सिव गई हुती तरनितनूजा तट तखियां । उत ते गोआल संग लेके हैं गोपाल आये इतहू ते स्यामा ल्यो सलोनी लिये सखियां ॥ मची तहाँ धूंधर धमार घन घोर जोर होन लागी होरी परी पूरि अभिलखियां । राजै सखी मध्य सोभाखानि वृषभानु सुता रङ्गभरी मूरति अनङ्गभरी अँखियां ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलालजी गयावाल ।

भौंहन विशाल अरु चाल है मराल केसी

धारिबो त्यों सीस पै रसाल मोरपखियां । गि-
रधारीलाल कहै कुण्डल बहार पुनि मंजु कर
कज की चमकदार नखियां ॥ व्याकुल विथा तें
बार बार अति रोय रोय ऊधो सन कहत स-
कल ब्रज सखियां । कैसहूं न बिसरै बिसारे वह
साँवरे की रङ्गभरी मूरति अनङ्गभरी अँखियां ॥

गंधौली ज़िला सीतापुरनिवासी बाबू युगुलकिशोर जी
उपनाम ब्रजराज ।

गोकुल के संग पति गोकुल विलोकि अलि
को कुल सँभारे वक्रै जो कुल विलखियां । लखि
हाव भाव त्यों चवाव को सुनै को भटू राव खांव
खांव को ब्रथाही रही झखियां ॥ आज सुखसाज
गृहकाज लाज बाज राखि एरी ब्रजराज-मधु
की हौं भई मखियां । देखिहौं त्रिभंग अंग अंग
को अभंग छवि रङ्गभरी मूरति अनंगभरी अँ-
खियां ॥

अयोध्याप्रसाद (श्याम) बाकरगंज - बांकीपुर ।

जमुना मै जात रही लेन जल एक बार साथ

में सलोनी सुकुमारी बहु सखियां । दूरहीं ते देखि स्याम जाय दबकाय रही मोरी चतुराई बनवारी तब लखियां ॥ आइ के निकट चट प्रीत की निकारी रीत गये अब हाय त्यागि हम सब झखियां । कौन ऐसो पल जामे याद ना परत ऊधो रङ्गभरी मूरति अनङ्गभरी अँखियां ॥

बाबू अयोध्यासिंह – मधुबन जिला आजमगढ़ ।

अजहूं न भूले हैं प्रसंग डफ बाजन के सालति हैं भंग भीनी अजहूं कनखियां । अंग अंग भीने से गुलाल में लखात अजौं गावत जनाति सों मृदंग संग सखियां । हरिऔध होरी के तरङ्ग हिय वैसही हैं देखि सुनि पूजो हैं न अजौं अभिलखियां । व्यङ्ग भरे वचन उमंग भरे प्राननाथ रंगभरी मूरति अनंगभरी अँखियां ॥

सिहोर (काठियावाड़) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई

नायिका नवीन एक नैन ते निरखि नेक राजत ललाम वाकी कंचन सी कँखिया । लोचन विसाल वाके ओपत अपार ताकी चंचलता

पेख पैठ नीर माहिँ झखियां ॥ गोविँद सुकवि ताकी तिरछी चितौन अरु मन्द मुसक्यान माहिँ चित्त मो करखियां । वा दिन ते सोई छवि हिये वसी सो न टरे रङ्गभरी मूरति अनंगभरी अँखियां ॥

कानपुरनिवासी प० ललितप्रसाद जी त्रिबेदी ।

गुंजन के पुंज हार काछनी काछनि चारु लकुट लपेटे पग सीस मोरपखियां । पट फहरानि मुसकानि में बिकानि सब जेतिक तुम्हारी हतीं मेरे संग सखियां ॥ बाँसुरी के तानन सों प्रानन निकारे लेत भूले गृहकाज आज कैसे लाज रखियां । आजु लखो बीर जमुना के तीर कान्ह और रंगभरी मूरति अनंगभरी अँखियां ॥

हिये में प्रान प्यारी के ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु ।

कंजन से नैन चारु मोतिन की माल गरे

हीरन के हार धरे सोभा अति भारी के। कहै रससिन्धु फेर देख के लुभाये सभी कोई तरे मिले बाल मन मे बिचारी के। फूलन की माला हाथ पायल बजाती चली जाय पहराई दौर कराठ मे मुरारी के। तभी ते बसी है हरि उर माँझ लक्ष्मी जी स्याम जू की मूरति हिये में प्रानप्यारी के॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

एहो बलबीर मनमोहन गुपाल लाल हाल जो सुनोगे विरहीन ब्रजनारी के। धीरज नसैहै विनसैहै ज्ञानशैल छाय जैहै प्रेमपुंज बात सुनत हमारी के॥ नींद भूख प्यास ताहि रंचक न एकौ पल आठौ जाम नाम रटै कुंजनविहारी के। मिलोगे गुविन्द तोपै कसक निकारि लैहै हौंसले हजार जो हिये में प्राणप्यारी के॥

जा दिन गई ही दधि वेचन अकेली भोर औचक दरस पाइ गई वनवारी के। पीतपट पेखत सु पीत सी भई ही वीर विगतविवेक भई देखत विहारी के॥ ता दिन ते भूल गई आ-

प्रनी पराई सुधि हाल कहा कहूं वृषभान की दुलारी के। तान बसी बाँसुरी की कान में गुमानभरी मूरति गुपाल की हिये में प्राणप्यारीके॥

व्रजचन्द जी वल्लभीय—काशी।

नैननि निहारि निरधारी है कुचालि तऊ सादर डरसि उठि लागी गिरिधारी के। कुटिल कन्हाई को करति मन भाई सदा ऐसे हैं विसुद्ध गुन कीरतिकुमारी के॥ रमा रति गौरिहू निरन्तर सिहाति देखि गौरव गँभीर वृषभानु की दुलारी के। संग की सखीनहू सिखाइ सीख हारी सबै मान को न भाव भो हिये मै प्रानप्यारी के॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी - बनारस।

गुरुजन त्रास ते बुलावे यहाँ मोको पास ह्वै जो जात लटू सुनै जिकिर तिहारी के। फरकाय अधर लजीले नैन सैन साजि मुसक्याय रहै ओट बूटेदार सारी के॥ ग्वाल सो चराय गाय सोहे हरिशङ्कर को भये निरमोही सङ्ग रहि बनचारी

कै। आप अँठिलाय सो बितावै जहाँ चाहैं निसा लिखी तसवीर है हिये मों प्रानप्यारी कै॥

प० केदारनाथ जी बनारस।

प्यारे घनस्याम कहौं ब्रज की दसा मैं काह सलिल भये हैं तप्त तनयातमारी के। हूकि २ हारन मों चरती न धेनु कबौं चाहती सुनोई स्रौन वसी बाँसुरी धारी के॥ नेकु नन्दबाबा जू के आँखिन सों सूझै नाहिँ मोह कहि जाय ना यशोदा महतारी के। गोपिका नवेली बिरहाकुल वियोग धारे लालसा है दर्स की हिये में प्रानप्यारी के॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलालजी गयावाल।

छोड़ि खान पान नहि करति बखान बैन चलत है आठौ याम धारा नैन वारी के। गिरधारीलाल दसा औरई भई है वाकी जब ते भयो विदेस गमन बिहारी के॥ मलति कपूर अरु चन्दन के धूर अंग त्योहीं अरविन्दन के सेजहिँ सँवारी के। वैठी याहि विधि खसखाने

वीच तऊ नेकु सीतलता पैठी ना हिये में प्रान प्यारी के ॥

नित्तहि नदान कैसे मान करो एहो कान्ह ह्वैकर सयान किन धारो बान नारी के। गिरधारीलाल दुख आपहू सहो त्यों कछु पीर नहीं बूझो मम सखी सुकुमारी के ॥ चाहिये न ऐसो जो भयो सो भयो जान दीजै आज रख लीजै लाज बातन हमारी के। सब रोष त्यागिये वो चित्त अनुरागिये जू वेगि उठ लागिये हिये में प्रानप्यारी के ॥

वाबू भगवतीचरण सकला जिला आहावाद ।

लहत ना सन्त सुख सागर के वार पार गावत सुनत गुन कुंजनविहारी के। सूम सब फूले भगवति हैं अनन्द मन, भये ते अथोर धन धाम अधिकारी के ॥ जाचक प्रसन्न होत अधिक परापति तें वन्दी चित हर्ष कारागार छुटकारी के ॥ कामी सब जानत हैं जन्म को सुफल निज लगे ते अहनिस् हिये में प्राणप्यारी के ॥

बाबू शिवनन्दनसहाय हेड किरानी जजी पटना।

दोऊ बड़े भागे प्रेम पागे अनुरागे दोऊ दिये कर काँधे फिरैं पास फूल क्यारी के। एकै रंग एकै ढंग एकै हाव एकै भाव कहैं सिव भूषन वसन एक त्यारी के॥ एकै राग एकै तान एकै रीत एकै प्रीत एकै मन बरु दोय देह छबि न्यारी के। प्रानप्यारी बसति हिये में प्रानप्यारे तैसे प्रानप्यारे बसत हिये में प्राणप्यारी के॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी।

एरे वदजात वदराह वदरा तू नेक क्यों न खुल जात होत हेत दुख भारी के। आजही की औधि अहै हाय किहि भाँति कहै पहुंचि सकैंगे हम पास सुकुमारी के॥ ऊँच नीच बीहड़ है मारग न ताको सोच केवट न कैहै पार सौगुनो उतारी के। बीती जान औध मेरी दुख की तरंगें लाख लाखन उठैंगी हा हिये में प्राण प्यारी के॥

हौं तो चलि जाती अवै लाती मनमोहन

कों सहज सँघाती कहलाती सुकुमारी के । ज्वर कैसो वेग सो तो वेगही उतर जातो जैसे नस जातो तम उगत तमारी के ॥ पै सकाती चाल लखि याके घरबारन कों नेकु सुनि पैहैं ह्वैहैं दुस्मन बिचारी के । घर से न जान दैहैं हित असनानहू के दूनो दुख ह्वैहै औ हिये में प्राणप्यारी के ॥

सिहोर [काठियावाड] निवासी कवि गोविन्द गोलाभाई ।

सुन्दर सुघट सुखदायक उत मांगही ते चाहते सरकि चल्यो हर्ष हिय धारी के । भाल पै भटकि भूरि आँखिन में आय अत्यो वाहि तें निकसि नेक नाक कों निहारी के ॥ कोमल कपोल फिरि औठन पै अ.ड़ वातें सुन्दर चिवुक ह्वै के गिस्यो गर्वहारी के । गोविन्द सों कौन भाँति निकरैगो मोहि मन पस्यो जाय प्रेम तें हिये में प्राणप्यारी के ॥

जन्महीं तें आजही सों इच्छा-अनुसार तेरी विचस्यो विशेष हम प्रेम कों पसारी के । खान

पान खेल अरु गान आदि आन केते जेहि जेहि चहे सोइ कियो मैं स्वीकारी के ॥ औरहो अनेक भाँति कीनि जेहि कामना तें सोइ कारी पूरन में हर्ष हिय धारी के। गोविंद कहत तोहु मूढ़ मन मोहि तजि बस्यो जाय वेग तें हिये में प्रान प्यारी के ॥

बाबू अयोध्यासिंह – मधुवन जिला आजमगढ़।

बीति गये बरस कितेकन विदेस आरि बस कछु ऐसे परे विधि अधिकारी के। जिते भौन जान के विचारे ब्योंत बार बार विफल भये ते हितु पेट अपकारी के ॥ हरिऔध आवतहो गृह मैं नवेली नारि फद परि गये या वियोग अवि-चारी के। और कहा ह्वैहै नेक हँसि बतरानहूं की हाय ! रहो हौसहो हिये में प्रानप्यारी के ॥

दोऊ दुहूं चाहैं दोऊ दुहुन सराहैं सदा दोऊ रहैं लोलुप दुहुन छवि न्यारी के। एकै भये रहैं नैन मन प्रान दोहुन के भीने रहैं दोऊ रंग मदन खिलारी के ॥ हरिऔध केवल दिखात

है सरीरही है नातो भाव दीखै हैं महेस गिरि-
धारी के। प्रानप्यारे चित में निवास प्रानप्यारी
रखै प्रानप्यारो बसन हिये में प्रानप्यारी के॥

सत्रहवां अधिवेशन।

मिती आश्विन शुक्ल १ सम्वत् १९५१

सुगन्ध की लपट सी।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

केसर की सारी चारु चोवा को लहँगा साज
कंचुकी जु सोंधे भरी अतिही सुघट सी। कहै
रससिंधु फूलमाला कस्तूरीहार चन्दन बरास
डार खोर करी भाट सी॥ चली दौर स्यामपास
आलिन की भौर झुकी पतली है कमरहु सिंहिन
के कट सी। केवड़ा जवाद खस अम्बर अनेक
अत्र मोसरी गुलाब की सुगन्ध की लपट सी॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

गुरुजन भावती बखानैं सुखमा की सींव
आलीगन कामलता कहैं अटपट सी। निधि

पान खेल अरु गान आदि आन केते जेहि जेहि चहे सोइ कियो मैं स्वीकारी के ॥ औरहौ अनेक भाँति कीनि जेहि कामना तें सोइ कारी पूरन में हर्ष हिय धारी के । गोविंद कहत तोहु मूढ़ मन मोहि तजि बस्यो जाय वेग तें हिये में प्रान प्यारी के ॥

बाबू अयोध्यासिंह – मधुवन जिला आजमगढ़ ।

बीति गये बरस कितेकन बिदेस आये बस कछु ऐसे परे विधि अधिकारी के । जिते भौन जान के विचारे ब्योंत बार बार विफल भये ते हितु पेट अपकारी के ॥ हरिऔध आवतहो गृह में नवेली नारि फद परि गये या वियोग अवि-चारी के । और कहा ह्वै है नेक हँसि बतरानहूं की हाय ! रह्यो हौंसह्यो हिये में प्रानप्यारी के ॥

दोऊ दुहूं चाहैं दोऊ दुहुन सराहैं सदा दोऊ रहैं लोलुप दुहुन छवि न्यारी के । एकै भये रहैं नैन मन प्रान दोहुन के भीने रहैं दोऊ रंग मदन खिलारी के ॥ हरिऔध केवल दिखात

है सरीरही है नातो भाव दीखै हैं महेस गिरि-
वारी के । प्रानप्यारे चित मैं निवास प्रानप्यारी
रखै प्रानप्यारो बसन हिये मैं प्रानप्यारी के ॥

नवहवां अधिवेशन।

सितौ आश्विन शुक्ल १ सम्वत् १८५१

सुगन्ध की लपट सी।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाल जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

केसर की सारी चारु चोवा को लहँगा साज
कंचुकी जु सोंधे भरी अतिही सुघट सी। कहै
रससिंधु फूलमाला कस्तूरीहार चन्दन बरास
डार खोर करी भट सी ॥ चली दौर स्यामपास
आलिन की भीर झुकी पतली है कमरहु सिंहिन
के कट सी। केवड़ा जवाद खस अम्बर अनेक
अत्र सोमरी गुलाब की सुगन्ध की लपट सी ॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

गुरुजन भावती बखानैं सुखमा की सींव
आलीगन कामलता कहैं अटपट सी। निधि

सी बखानैं नित ननद जिठानी कहै जाँउ बलि-हारी यह लागै नटखट सी ॥ बीर प्रिय प्यारी की अनोखी छवि कहै कौन बानी अकुलानी रहै हाय छटपट सी । सौतिन कौं साल सो हिये मैं गड़े आठो जाम लाल हिये माल ह्वै सुगन्ध की लपट सी ॥

भले ही सिधारे पिय भोरही हमारे गेह अजब अनूठी यह चाल अटपट सी । पीकलीक नैनन सु अञ्जन अधर धरे सोहत गुपाल पेंच पाग लटपट सी ॥ बात न बनाओ बलवीर जू हमारी सौंह मूरति तिहारी आज भासति क-पट सी । प्रीति मृगमद लौं दुराये ना दुरैगी लाल चहूँओर फैलती सुगन्ध की लपट सी ॥

पण्डित अम्बाशङ्कर जी — काशी ।

कृष्ण महाराज के विजय की जै जागी जग खल गज डाटन को सिंह की डपट सी । कुटिल कुगोत दुष्ट दानव कपोतन पै संकर जू देखो होत बाज की झपट सी ॥ और ब्रजवासी गोप

गोपी मृग भुण्ड लागि तान दिखरावै बीन तान को कपट सौ। भक्तजन सज्जन के मन के दुरै-फन को नाना भाँति सुमनसुगन्ध की लपट सौ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

कुन्दन छरी सी चली अंगना उमंगभरी पाछे परी भौंर भीर आवत भपट सो। मन्द पग धरति गयन्दगति बेनी द्विज कटि ना लखात कहूं हित के कपट सो॥ निस अँधियारी में विहारी के मिलन हेत देत अहि वौछिन को सन्तन दपट सो। चारु मुख चन्द ते पसारत उजेरी जात अगन बगारत सुगन्ध की लपट सी॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी।

हीरन के हार औ हमेल हियरा में धार भार मुकतान के भलाभल भपट सी। चाँदिन के वादला की चादर चमकदार मिलि रही चन्दा की जुन्हाई में कपट सी॥ माधौ जू सयानी सखी सौंधे लगी संग जात नेकु ना दिखात गात दावा की दपट सी। चौंकदार चाँदनी में

चन्द को कला सी चारु चलो ब्रजचन्द पै सुगन्ध की लपट सी ॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथ जी।

सौरभ समोये बार गूंथी कुन्दकली चारु आँगी सित कसी कुच कंचन के घट सी। पैन्हि स्वेत सारी प्रभा पारद उँजारी सरद चन्द्र चन्द्रिका मैं चली चन्द्रिका प्रगट सी ॥ मोती हीर हार गर सुमन चमेली धारि मीत मिलिबे को जाति पांयन झपट सी। उड़े उपरैनी सनी अन्तर घनी पौन पाइ गैल माहिँ फैलती सुगन्ध की लपट सी ॥

बाबू मन्नूलाल जी बनारस।

कुहू की अँधेरी में सरद की उजेरी देखि कदली के पत्र पै है नागिन सपट सी। सुधा के सरोवर में जोत बिजली की होत फूल्यो है कमल बोलै कोयल कपट सी ॥ मन्नूलाल ताही ठौर कीर एक राजत है ताके चोंच माहिँ रही मोरनी छपट सी। चलो तो देखाऊँ ऐसो अ-

नुभौ विहारीलाल जाके पास उठत सुगन्ध की लपट सौ ॥

काशीनिवासी हुजचन्द जी वल्लभीय ।

कलपि वितावैं हम निसि दिन काम-पीर तापै तू बकति बहु बात अटपट सी । कहे देत बचिहै न प्रान यह प्यारो आज बोलहू हमारी भई जाति लटपट सी ॥ परम पुनीत प्रीति वाही सों लगाई वीर जानिये न ताहि वह मानै क्यौं कपट सी । ललिता बतावै आइ अंग लपटैहै कबै चन्द्रावली नागरी सुगंध की लपट सी ॥

कोपागजनिवासी कवि सालिग्राम जी ।

छाई है वियोग विथा मोहन के सारे अँग व्याकुल परजंक पै लोटत अपट सी । लोग औ लुगाई पुछै औरही बतावै ताहि भेषजी भुलाने रहैं वाही में लपट सी ॥ कहै सालग्राम दूती ल्याइहै मनाय ताहि जाकी रही चाह अति सोई झटपट सी । विना किये जंत्र मंत्र छुटि गई सबै व्याधि लागी जब अंग मैं सुगन्ध की लपट सी ॥

चिन्ह गोपन कों गात करे केती करतूत सो तो लागत कपट सी। गोविंद सुकबि कैसे दुरेगी दुराये प्रीति फैली चहुंओर सो सुगन्धकी लपटसी॥

सासुरे में जाइ सखी रहियो सयानी ह्वै के कहियो न बात कभी कोई से कपट सी। सासु के समीप सदा विनय बलित रही कीजियो सकल बस्य वेग तें बिकट सी॥ गोविंद सुकबि कहा बेर बेर कहूं आली कीजियो न संग नारि निरखि नफट सी। नेह में निमग्न बनि लागि हो लगन धरी नाथ हिय माल ह्वै सुगंध की लपट सी॥

एक तें व्है गई है तसवीरें।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाल जी महाराज उपनाम रससिंधु।

फूलन की चुन चारु कली लली चोटी भली जो करी वहु धोरे। त्यों रससिंधु जू सारी किरेफ की मोतिनमाल ओहार है छोरे॥ वाल नई

वह रंग गुलाब सो नेह न जानत वो पर पीरे। काच लिये सुख देखत वो तिया एक ते द्वै गई है तसवीरे॥

कोई कहै यह निरगुन ब्रह्म है कोई कहै साकार सरीरे। त्यों रससिंधुहु साची कहै भ्रम टार करे उतपत्ति जु धीरे॥ जो कछु यामे समर्थ नहीं तो कहा ते करे वे सिष्टि मही रे। ब्रह्म ते माया भई है तभी वह एक ते द्वै गई है तसवीरे॥

बाबू रामकृष्ण बर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

भोरहि आज गई जमुनातट संग लिये सखियान की भीरैं। औचक देखि पस्यो नंदनन्द बजावत बेनु कलिन्दजा-तीरैं॥ आधिक नैन सुराधे लख्यो तहँ आधिय दीठ लखी बलवीरैं। दोउ मिले मन एक भयो * पुनि एक तें द्वै गई है तसवीरैं॥

* आधा और आधा मिलने से एक होता है।

पै नेम पुराण कुरान शरीफ़ गँभीरैं। आपुनी २ रीत चलैं जग एक तें ह्वै गई है तसवीरैं॥

बा० माधोदास जी काशी।

गौने की आई नई दुलही मिलिबे को लला ने करी तदवीरैं। सूनी अटारी परी परजंक स-संक सु माधो जू आवत धीरैं॥ भौन के भीतर जाय लखो छपी चित्र लिखो पुतरीन के तौरैं। हेरत हेरत हार्यौ पिया मनो एक तें ह्वै गईं है तसवीरैं॥

छजचन्द जी बक्षीय—काशी।

तूही हितू पिय चित्र दिखाइ दया करि दीन्हें सबै हिय धीरैं। मोहि कृतार्थ करी सजनी मैं रिनी हौं सदा री गई सब पीरैं॥ देखत चित्र मुदे दृगहू पै लखौं मैं सोई प्रतिमा छवि भीरैं। बाहिर भीतर देखिवे कों इहि एक तें ह्वै गई है तसवीरैं॥

बाबू मन्नूलाल—काशी।

स्याम को रूप लिख्यो कर आपने रात को

बैठ एकन्त में धीरैं। जावक को लिख्यो भाल सें लाल के गाल लिख्यो सुख दाग गँभीरैं ॥ मन्नूलाल उनीदी लिख्यो अँखिया औ ओढ़े लिख्यो चुचुहातो चीरैं। आये प्रभात मिलान कियो कह्यो एक तें ह्वै गई है तसवीरैं॥

कवि रघुनाथ जी – काशी।

हौं लखी कौतुक नोखी भली ब्रजबाल की भीर कलिन्दजा तीरैं। न्हाही सबै विधि भूषन साजि लगी पहिरे रुचि सो शुभ चीरैं॥ गागरी लै निहुरी रघुनाथ चकी प्रतिबिम्ब विलोकि अधीरैं। चक्रित ह्वै कै बकै सब सों लखु एक की ह्वै गई हैं तसवीरैं॥

मदनमोहन पाठक उपनाम मनोभव गो घाट काशी।

ऊधो जू लाये हो पाती गुपाल की रावरी यामे न हैं तकसीरैं। मैंही अभागिनि हौं जो मनोभव जोग की यामें लिखी तदवीरैं॥ बोलि कै ऐसो सुता बृषभानु की स्याम की देखैं लगीं तसवीरैं। पूतरी काठ सी ह्वै गई सो मनो एक ते ह्वै गई है तसवीरैं॥

कोपागंजनिवासी कवि सालिकराम जी ।

चाह रही निसु वासर में मोहि राधे बसे हिय बीच सरीरैं । साधन साधन सो भगवान दियो वर बानी सुनाय गँभीरैं ॥ सालिक स्याम न छोड़ि सके सँगही चलि आये कृपा करि तीरैं । देखि परी हिय अन्तर मैं तब एक ते द्वै गई है तसबीरैं ॥

मारकण्डेलाल उपनाम चिरजीवी कवि - कोपागंज ।

पहिले रही औध की आस हिये अब आनि बसी ब्रज वाम की भीरैं । तबतो सरजू ही सो नीक रह्यो अब भो जमुनाहु मैं प्रेम गँभीरैं ॥ तबतो रह्यो रामही को चिरजीव भयो अब कृष्णाहू के बस धीरैं । दिन द्वैक ते या उर अन्तर में अब एक ते ह्वै गई है तसवीरैं ॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी ।

प्रानप्रिया छिनहू न तुमै विन धीर धरैं उर होत अधीरैं । हौं अरु मेरी सबै सखियां समुझाइ थकीं करि कै तदवीरैं ॥ पै अब जो तुम

दै निज चित्रहिँ तोखत सो न बढ़ावत पीरैं । एक अनन्यता क्यों रहिहै जब एक तें ह्वै गईं है तसवीरैं ॥

व्याकुल होति महा छिनही छिन धीर धरै न कोउ तद्वीरैं । हा मम प्रीतम प्रान अधार कहा कहि मोचति लोचन नीरैं ॥ लाइ तवै सखि चित्र धरी हरि वेनु वजावत कलिंदीतीरैं । देखतही जकि सी थकि सी भई एक तें ह्वै गईं है तसवीरैं ॥

चन्द्रकला वाई - वूँदी ।

वैठि रही अलिमण्डल मैं वृषभानुसुता सजि शोभ शरीरैं । ता विरयाँ ललिता सखि नै हरि-चित्र दियो कर मैं नमि नीरैं ॥ चन्दकला लखि लीन भई तव वोलि उठी सखियां इमि धीरैं । देखहु अद्भुत कौतुक है यह एक तें ह्वै गईं है तसवीरैं ॥

महाराजकुमार गौरीप्रसादसिंहजी गिद्दौर ।

होत प्रभात पिया घर आयो सु क्योंहू नहीं

मग में पग धीरें। आनन अंजन रेख बिलोकि लखी तिय चन्दभरे दृगनीरें ॥ लाल ते बोली लखो यह कौतुक मो मन देखि धरै नहि धीरें। भोर लों एकै हती नभ में अब एक तें ह्वै गई है तसवीरें ॥

सिहोर[काठियावाड़] निवासी कवि गोबिन्दगीलाभाई।

आपस में मिलि राधिका गोविंद पेखत एक दुजा पर धीरे। पेखत पेखत नेन मिले पुनि चित्त मिले अब होइ अधारे ॥ गोविँद यों मिलि एक भये तब धीर भये तित दोउ शरीरे। नेक हले न चले उन ठामतो एक तें ह्वै गई है तसवीरे ॥

मंजुल मूरति माधव की लिखि चित्रनी ने धरि राधिका नीरे। सोई लखो रसरूप भरी अति मोहित ह्वै मन भाव सों धीरे ॥ पेखत नैन निमेष तजे अरु शान सबै तजि आप शरीरे। गोविँद मोय भई छवि सी मनो एक तें ह्वै गई है तसवीरे ॥

अठारहवां अधिवेशन ।

मिती कार्तिक कृष्ण १ सम्वत् १९५१

छूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु ।

वंसी की जु धुनि सुनि वसीवट आई बाल वृन्दावन सोभा लखी जमुना तटान की । कहै रससिन्धु कृष्ण हीरा को मुकुट धरे भूषन ति-रंगी कटिकाछनी पटान की ॥ टेढ़ी भौंह टेढ़े दृग टेढ़ी तान टेढ़ी सान हाव भाव नृत्य करे मदन कटान की । कोइल पटान सखी भीड़ हुड़ तान तैसी छूटै चन्द्रमण्डल ते छहरछटान की ॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी ।

चामीकरचंचला सी चमक चहूंघा चारु च-न्दन पर्यङ्क पर चमक चटान की । झालरैं सु-केस की सु चारोओर लागीं तित राजै वलवीर संग बेटी वृषभान की ॥ कामकलाकौतुक अ-नूठी छवि छाई राजै दोउन के अङ्ग पै फहर

दुपटान को। मुखविधुमण्डन ते मुक्तालर टूटैं जनु छूटै चन्द्रमण्डल ते छहर छटान को॥

बाबू मन्नूलाल जी बनारस।

बिमल अकाश भयो फूले कास आसपास कहत बनै न सोभा कालिँदीतटान की। मन्नूलाल तहाँ रच्यो रास को रसीले लाल बाँसुरी बजाय राग गाय कै नटान की॥ सोरह सहस गोपी निरतत स्यामा स्याम अंग में भूषन छबि छाजत पटान की। मुख की मरीचैं जाकी बेधि नभ मण्डल कों छूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की॥

काशीनिवासी पं॰ केदारनाथ जी।

कासन औ कुसुम बिकासित भये हैं सेत लागी है बिदाई होन मेघ औ घटान की। निर्मल भये हैं नीर सरित सरोवर के फूलि गे सरोज अति ओज प्रगटान की॥ आये खग खंजन चकोर मनरंजन भे बन्द भो केदार मोर मोर के रटान को। छाई शुभ्र सर्द महिमण्डल मयूखैं मनु छूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की॥

कवि पं० गोपीनाथ जी काशी।

आली बनमाली रासमण्डल रच्यो है आजु करिकै तयारी भारी जमुनातटान की। मन्द २ मधुर बजाय राग बाँसुरी में करत कलोलैं कला विधि सों नटान की॥ गापी ग्वालबाल सब लखत निहाल होत वह अनियारी छवि रेशमी पटान की। सरद निसा में लूटैं दंपति अनन्द मिलि छूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

चाँदनी के सरस फरस करि चाँदनी के रौसें करी न्यारी सेत चाँदी के चटान की। चाँदिही की चौकी पै चमेली की चगेरैं चारु सजि अलबेली सेज रतन जटान की॥ बेनी द्विज कहत बनै न वा समै की छवि रवि से विमल दुति सेतु दुपटान की। सरद निसा में लूटैं आनँद अटा पै दोऊ छूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की॥

बारादरी विमल विलौर की बनाई वेस झं-

झारी लगाई जाल बिबिध कटान की। चाँदी की चटान पै चगेरैं चारु फूलन की सजि सजि साजी सेज रतन जटान की॥ बेनी द्विज तामैं स्याम स्यामा आय माँझही ते पहिरि पोशाक सेत रेशमी पटान की। लूटैं दोऊ सरद निसा मैं सुख जूटि जूटि छूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की॥

हृजचन्द जी वक्सीय—काशी।

सुनि धुनि एई श्री चरण चारु नूपुरनि मृत्युंजय पद्भी भई है महेसान की। मधुरादि दिव्य सक्ति संग मैं सखी सरूप इहाँ श्री त्रिपाद छोडि कानि नाहि आन की॥ चिदानन्द कोमल अमल भूमि माहि पाद चिन्ह अड़तालिसो जनावत हैं जानकी। मुख की मरीचि तैं कढ़ति सुखमा यों मनी छूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की॥

रसिक नवीन—काशी।

रंगभरी बैठी है रँगीली रंग रावटी मैं सजि वर

सारी मंत रेसमी पटान को। परम प्रवीन सेन रसिक नवीन रचि धरी हैं चंगेरैं चारु रतन जटान की ॥ हीरा मणि महल वितान तने मोतिन के सरद उजेरी में तयारी कै अटान की। लूटौ चलि लाल वेगि बाल सों अनन्द जहाँ छूटै चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की ॥

बाबू अयोध्यासिंह मधुवन जिला आजमगढ़।

विकसित वारिज वरूथ में बढ़ी है विभा वार वार बौरें बौरे भृङ्ग लपटान की। घट गई चहूँओर घहरि घहरि घूमि घिरि घिरि घरी २ घेरन घटान की ॥ औध-हरि अनुपम सरद अवाई पाइ आभा भई औरै आज आँगन अटान की। छन छन छनदा में छिटकी सु चाँदनी सों छूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की ॥

मारकण्डेलाल उपनाम चिरजीवी कवि कोपागंज।

हिम सी हिमाचल सो हर सी हयानन सी सेस सी सतोगुन सो सुखमा अटान की। हीरक सी हंस सी हुवाव हास्यरस ऐसी सुधा सी

सरस्वति सी स्वच्छता सटान की ॥ कवि चिरजीव कान्ह कीरतिकिसोरी जू के केलि करिबे की कला करि कै नटान की। छिति पै चहूंघा छीर सिन्धु उमग्यो तो आज छूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर छटान को ॥

अखिल अनन्द को अधार ये अयोध्या भई गई व्यथा सारी बिरहानल वटान की। विविध विधान नभ तोरन पताक छायो गायो गन गन्धव गुरेजन नटान की ॥ कवि चिरजीव आज राज रघुराज जू के छूटो महताबी खेत सुखमा घटान की। झरत सुफूल ताको महि में लखात मानो छूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की ॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी।

आजु हौं बिलोकी वा नवेली अलबेली बाल बैठीही अटान छवि देखति घटान की। कहा कहौं लाल वाके रूप की बिसाल छवि याही है समैया जाके उरज उठान की ॥ सुन्दर कपोल गोल बोल अनमोल महा करतीं किलोल

नैन डोल यौ पटान को। मन्द मुसुकानि सरसानि सरसाति मानो छूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर छटान को ॥

क्योंहू कहि रामराम बरसा बितीत भई स्वच्छ भे अकास घूटी घिरनि घटान को। हाट बाट घाटन पै चरचा चहूंघा चली मारग खुले को कीच नीर निघटान को ॥ आवा गौन भवन बिदेसिहू को होन लागो सुधि ना मिली हा थाकि पीय पलटान को। कूटै उर कर तें लहू की घूंट घूंटै जब छूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर छटान को ॥

श्री चन्द्रकला बाई—बूंदी।

राधे चलि जमुना के तट पटपीत धरे राजत गुबिन्द तुति दमन घटान को। नाचत सखीगन मैं दै दै ताल नाना भाँति चोरि लेत चित्त छवि मुरवा पटान को ॥ चन्द्रकला मुरि मुसुकाय गीत गावत हैं चितवनि है री मद मदन छटान को। देखि री मुखारबिन्द आभा उफनात जिमि छूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर छटान को॥

सिहोर (काठियावाड) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई

राधिका ललाम तेरे भाल की विसाल आभा ओपत अपार तैसें सोहै छबि कान की। लोचन रसाल पुनि बिमल बिभायता की सोभा मुख-टाय लसे मोह उपजान की ॥ हास ते प्रकास होत दन्त की दमक ताकी गोविंद लसत सोभा नेह के निदान की । ऐसी मुखमण्डल ते भाय भास भूरि मानो छूटे चन्द्रमण्डल ते छहर छ-टान की ॥

सीसा के महल माहिँ नायिका नवेली बैठी लाज तें लुकाइ मुख नेह के निदान की। तहाँ आइ प्रीतम ने अंक भरि आनँद ते आनन उ-घास्यो ऐंचि साटिका सुजान की ॥ गोविँद सु-कवि तवै दीपद्युति मन्द भई परम प्रकासी प्रभा आनन अमान की। विमल विराजी सोई ओ-पत अपार मनो छूटे चन्द्रमण्डल ते छहर छ-टान की ॥

चांदनीसी फैली चारु चांदनी वदन की।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु।

चाँदी के चौतरा पर चाँदी को तख्त बिछो तैसीई चमक होत चाँदी के सदन की। कहै रससिंधु फेर सारी करतारी भारी मोतिन के माल हार जोत जो रदन की॥ गावत बजावत है नृत्य करै स्याम संग झुराडन की झुराड खड़ी भरी वो मदन की। राधिका जी गोरी भोरी नवलकिशोरी ताकी चाँदनी सी फैली चारु चाँदनी वदन की॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

एक तो सखीजन की मराडली सुबेरे रहैं ननद जिठानी रहैं पाहरू सदन की। दूजे गुरुजन की सुभीर सो लगीही रहै एही बलवीर चेती लाज बिरदन की॥ बावरे भये हो तुम साँवरे बिहारी अंग छाई है उमंग बहकावरे मदन की। कैसे गृहअंगना ते अंगना पधारे लाल चाँदनी सी फैलै चारु चाँदनी वदन की॥

कवि पं॰ अम्बाशंकर जी—काशी।

छाकी मद जोबन की चोबन चलाकी मढ़ी सोवन की पाटी पढ़ी मदन सदन की। स्याम मृदुमूरति ज्यों रानी रसराज जू की मानी है प्रमानी दानी चारहू पदन की॥ राधे चलि देखि बैठो ऐंठी चारु चौकी चढ़ी कारीगर नीके गढ़ी नाग के रदन की। सकर सुकवि कहै कविता न मान प्यारी चाँदनी सी फैली चारु चाँदनी वदन की॥

बाबू मन्नूलालजी—काशी।

अवध की रानी ने बोलाई न्योत रानी सबै कौं मू देखांईं धाईं सुर के सदन की। उमा आईं रमा आईं सारदा सचीहू आईं रती आई सजि कै जे मोहनी मदन की॥ मन्नूलाल कह्यो तब कौशिला सुमित्राजी सों बोलि लाउ दुलही जो कोशल नदन की। ल्याई अँगनाई मैं घूंघट के उघारत ही चाँदनी सी फैली चारु चाँदनी वदन की॥

पं॰ केदारनाथ जी बनारस।

थे जू नदनन्द एक गोरी बरसाने माहिँ तुम को बुलाई चलो कीरति सदन को। कोमल मृनाल कनक्क ते अति खीन कटि पीन कुच दन्त दुति दाड़िम कदन को॥ भौंहैं धनु वङ्क ता हगी हैं अङ्क आठ केर ताकनि चोटीलो नेज तेजना मदन को। जनो चन्द पूनो को प्रकाश ललना को दूनो चाँदनी सो फैलो चारु चाँदनी वदन को॥

कवि गोपीनाथ जी काशी।

सीस गृह सोभन मै स्वर्ण-सरो सी बाल बानिक विमल वेल सुखमा सदन की॥ सेत जरी बूटिन विचित्र जरी सारी मोहै अंग प्रति अंग ओप बाढ़त मदन की। गोपीनाथ पूंजी सुघराई परी वाके हाथ सरकी न जाके तिय काम के कदन की। चाँदनी विनाही दिव्य दसह्र दिमान माहि चाँदनी सो फैली चारु चाँदनी वदन की॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी ।

सरस सिँगार साजि सोंधे को समूह भरो जरीदार सारी सो सपेदई सदन को। मजेदार मोतिन की माल अरु हालैं मन्द दौने मन मा धव मे मोहनी मदन को ॥ हरे हरे हेरैं हीय हौसला हजारों धारि हँसिबे मे काँत पाँत हीरा से रदन को । चन्द की जुन्हाई मे सुजात ब्रज चन्द जू पै चाँदनी सी फैली चारु चाँदनी ब-दन को ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

बेगही चलौ तौ मै लखाऊँ बाल बेनी द्विज बैठी है दरीचो खोलि आपने सदन को । कु-न्दन के रंग से सवाई है गोराई अंग चपला सी चौगुनो चमक है रदन को ॥ रूप की निकाई वाकी बरनो कहाँ लौ देखि धरनी धसी सी जाति घरनी मदन को । कातिक के चन्द सो सुछन्द जनु चारोओर चांदनी सी फैली चारु चांदनी बदन को ॥

मानिक सी ललित ललाई लाल ओठन की हीरा नग पाँति सी है धवली रदन की। खं-जर से परम कटीले हैं नुकीले नैन भृकुटी वि-कट वङ्क धनुहीं मदन की ॥ वेनी द्विज वनिता न दूजी जग वाकी सर लाई है लोनाई लूटि विध के सदन की। मैली करि सरद मयङ्क के प्रभा की आव चांदनी सी फैली चारु चांदनी वदन की ॥

कोपागजनिवासी कवि सालिकराम की।

एहो घनस्याम तौर वा दिन जो देखी वाम वार २ पूछी मोते व्याकुल मदन की। सोई ब्रषभानु की दुलारी है अनूठी याते दूसरी न देखी कामकामिनी कदन की ॥ कहै सालग्राम ता-की उपमा कहां लों कहौं मौन भई बानी याते ब्रह्मा के सदन की। सरद है न पूनो है न तारा को प्रकाश कछु चांदनी सी फैली चारु चांदनी वदन की ॥

बाबू अयोध्यासिंह - मधुबन जिला आजमगढ़।

कर पग जलजात सरिस भये हैं मंजु गति मै भई है सोभा सरस मदन की। आनन अमन्द चन्द सरिस दिपन लाग्यो जाहि सों जगी है जोति अतन मदन की॥ हरि-औध जोबन सरद की समैया पाइ कुन्द की कली लौं भई पाँति है रदन की। चंचलता आँखिन ठनी है खजरीट ऐसी चाँदनी सी फैली चारु चाँदनी बदन की॥

कोपागंजनिवासी मारकंडेलाल उपनाम चिरजीव कवि,

चाँदनी सो भयो अंग हीरन के भूषन ते चाँदनी चँपानी दुति काम के कदन की। चाँदनी बगारन चमेलिन के हार लाग्यो चाँदनी चकाय दीन्ही महिमा रदन की॥ कवि चिरजीव चली चाँदनी निसा मैं आज चन्द्रमुखी राधे प्यारी नन्द के नदन को। चाँदनी सी सारी पेंधि चाँदिनीहूं मात कीन्ही चाँदनी सी फैली चारु चाँदनी बदन की॥

काहे मेरी कटि ये छिनैही छिन छीन होति काहे गति मन्द भई आनि के पगन की। काहे कछु उर मैं उनान लाग्यो बोझ कैसो काहे चिकनाई चढ़ी गात अगदन की ॥ कवि चिरजीव काहे पुलक पसीज्यौ अंग साथ होत नेकु कवौं नन्द के नदन की। काहे चन्द रौंज से हमारे मुख चन्द्रमा की चाँदनो सी फैली चारु चाँदनी वदन की ॥

पटनानिवासी बाबू पन्ननलाल जी ।

होत है अमावस न पावस कवौहूं जहाँ पूछत निसानी तुम ताहि के सदन की। अवसि दिखाइहौं चलो जो साथ मेरे पर हँसी न। करैहौं नास नन्द कि नदन की ॥ नित प्रति पूनो की सुहावनी रहै है निसा अहै तेज सालो यदि कोटिही कदन की। मोहि मति जैहो मति गति नाहि रैहो देखि चाँदनी सी फैली चारु चाँदनी वदन की ॥

मति घवराय नेकु प्यारी खाय हाहा जिन

कहा भयो जागतीं जो स्वामिनी सदन को । रैन है अँधारी तजि सेत पेन्हु स्यामसारी धरि दै उतारि घूंघुरन या पदन को ॥ भयो है करार तोसें आजही मिलाइबे को आस करे नास जनि नन्द के नदन को । काम है प्रकाम को न मारग बतै है तेरी चाँदनी सी फैली चारु चाँदनी वदन को ॥

चन्द्रकला बाई - बूँदी ।

सोरहो सिँगार सजि स्याम सें मिलन काज राधिका सिधारी मनु वनिता मदन को । मन्द मन्द मारग में चलत सखीन संग निज गति आगे गति गज की कदन को ॥ चन्द्रकला भृकुटी कमान नैन बानन से तारन समान छवि छाजत रदन की । हँसत लसत अति चन्द मो मुखारविन्द चाँदनी सी फैली चारु चाँदनी वदन को ॥

सिहोर (काठियावाड़) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई

राधिका ललाम तेरे कंचन सी काय केरी

ओपत अनूप आभा कुन्द के कदन की । तामें निरमल नख नखत सें लसे हैं पुनि बिमल बिभाय आभा रम्यही रदन की ॥ कौंधत कटाच्छ कांति बिमल बिशाल सोय आभा अधिकाय मानो सुखमा सदन की । गोबिँद सुहाय ऐसे अंग तामें लसे रम्य चाँदनी सी फैली चारु चाँदनी वदन की ॥

उन्नीसवां अधिवेशन ।

मिती कार्तिक शुक्ल ' सम्वत् १९५१

अनंग मदमाती है।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु ।

लगत सुहाती लाती अतर लगाती छाती पलँग बिछाती जाती सोभा सरसाती है । कहै रससिन्धु राती नेह वरसाती भाती महल सजाती बाती रोसनी कराती है ॥ खड़ी मुसकाती नैन भौंहें मटकाती गाती सब को रि-

झाती आती लङ्क लचकाती है। बाजाङ्क बजाती बतराती इतराती नाच स्याम को दिखाती ये अनङ्ग मदमाती है॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

कामकाज गृह के सँवारि सब भोरही सो भोजन कराय गुरुजनन सुवाती है। सुन्दर सुबासन सों अंगन बसाय चारु सेज को बिछाय रूप हेरि हरषाती है॥ आलीगन मण्डली कों मिस सो हटाय परि पाय इष्टदेव बार बार या मनाती है। आवैं बलवीर पीर हीय को नसावैं इमि वैठी परयङ्क पै अनङ्ग मदमाती है॥

जाहि मत कुछ को अँध्यारी निसामाँह देख कारी घटा चहूँओर घेर घहराती है। गुरुजन संक कुललाज कों विचार आली गगन निहार मगवीथी ना लखाती है॥ घन की अँधेरी चकाचौंध देखि कौंधन की बड़े बड़े वीरन की छाती दहलाती है। जानति हौं मेरी कहो नेक ना सुनैगी अरी बावरी भई है तूं अनङ्गमदमाती है॥

छन्नूलाल रसिक नवीन—काशी ·

जोमभरी जोवन जवाहिर जलूम भरी आ-वत परी सी चली मग में लखाती है। ऐंड़ि २ लचक लचक लचकाइ लङ्क बङ्क भृकुटी के सैन नैनन बुझाती है॥ रसिक नवीन है प्रवीन कला कामन में अंग २ ज्वानी को उमंग दरसाती है। अति इतराती नेक मन में न लाती सङ्क नोखी नई अगना अनङ्ग झदमाती है॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथ जी।

अंग अंग चंचल भरो है चंचला सो चारु ताकनि तिरीछी नैन भौहें मटकाती है। सु-न्दर रँगीली चटकीली पहिरे दुकूल भूषन जरा-उन की जोति झलकाती है॥ आँचरो न बाँ-धति केदारनाथ सूधो कभूं आँगी की तनीह्न सदा खुली रहि जाती है। बोलिवे को औरई उचारै कछु औरै मुख आठो जाम अँगना अनंग मदमाती है॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

झाल लखि आई हौं तिहारे लिये ऐसो बाल जाकी ना मिसाल हाल बनिता लखाती है । रम्भा रमा मैनका तिलोतमा तुलै न तुल्य विध सों लोनाई को ले आई लूटि थाती है ॥ बेनी द्विज वेगही चलौ तो मैं मिलाऊँ ताहि जाहि लखि पतनी सुरेस की लजाती है । राती रस-रंग की उमंग भरी ज्वानी अंग अंगना अजायब अनंग मदमाती है ॥

बा० माधोदास जी—काशी ।

मरकत मनीन के जेहर जरावदार हार चार बाजूबन्द किङ्किनी सुहाती है । स्यामरंग सारी मखतूल की किनारी कोर स्यामही सुचोली चारु माधो मन भाती है ॥ मृगमद टीको नीको भाल पै विराजै स्याम स्यामही तमाल के नि-कुंज माह जाती है । स्यामही सिँगार साजि साँवरी सलोनी बाल स्यामही के रंग में अनंग मदमाती है ॥

पटनानिवासी बाबू पन्ननलाल जी ।

बैठी है सखीन बीच बातें बतराती कबौं कबौं गीत गाती कबौं बाजन बजाती है। कबौं मुसुकाती दरसाती दन्त पाँतिन कों बातनि रिसाती कबौं उठि भागि जाती है॥ देखो छिपि लाल हाल बाल को निहाल होहु आजु कछु याकी चाल औरही बुझाती है। ही जो सरमायी कबौं मुखहू दिखाती नाहिँ सो यों भई बावरी अनंग मदमाती है॥

सोरहों सिँगार साजि भूषन बतीसो राजि संग से सखीन के हँसौन दरसातो है। चन्द सरमातो कंज खंजन लजातो पीर कीरहिँ बढ़ातो दुति दामिनि दबातो है॥ शङ्क के निपोरशङ्कु संभुहि वोलातो बँत्र रंभ थंभ दै अचंभ केहरी कुढ़ातो है। मन्द मुसुकाती बतराती छितराती ओज आती चली मौज मे अनंग मदमाती है॥

गंधौली ज़िला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जी
उपनाम ब्रजराज ।

नवला के अंगन में योवन अवाई दृगकोर श्रुति ओर ढुरि दुति अधिकाती है । पगन मै छाई मन्दताई कटि छीन दीन अलकै छवान छ्वै कै छिति परसाती है ॥ रावरो सँयोग ब्रज-राज नित चाहति है मिलि सुख लूटौ छिन २ अकुलाती है । आठौ जाम रहै ऐसे रति रसरग भरी जैसे रति रहति अनग मदमाती है ॥

मेरे ढिग आय पूछै नितही कुशल छेम हौंहूं कहौं कुशल सुनत हरखाती है । सुरति कै तुरत चितेरिनि को बोलि लेत सूरति लिखाय कै लगाय लेति छाती है ॥ सपने मे देखति तुम्हैं हीं ब्रजराज नित सोतुक के हेत चित चेति बिलखाती है । रावरे मिलन को हिये मे अभि-लाप राखि रैनि दिन रहति अनंगमदमाती है॥

कोपागंजनिवासी कवि शालिग्राम जी ।

आज लों न बीती दश मासहू तिया के

आये जोवन को जोर कोर अधिक देखाती है। दरपन सकारे लै वैठी वारजा पै सौंहै चितवति चहूंओर मन्द मुसकाती है ॥ कहै सालग्राम स्याम चलि के विलोको ताहि तेरे विन दरस न नेकु कल पाती है। कमति उरोज रोज अग तोरि नभु आति कीन्हे चख चंचल अनग मद-माती है ॥

श्री चन्द्रकला बाई – बूंदी।

आई मैं निहारि तुमहू तो चलि देखौ स्याम आज राधिका की छवि अति मरसाती है। सकल सिँगार साजि अधिक उमाह धरि रावरे मिलन हेत मन अकुलाती है ॥ चन्द्रकला टूक टक् निहारै मग रावरो हो कवहूं तुम्हे हो लला नन मूंदि ध्याती है। चन्द तें चिरी सी विजुरी सी वृषभानुलली वैठो परजंक पै अनंग मद-माती है ॥

बाबू अयोध्यासिंह – मधुवन जिला आजमगढ।

कठिन किरीहूं केलि कसि भुज पासन सो

स्वामिनी किलकि अंक पिलि पिलि आती है। दलि दलि दसन सों बिदलि अधर दीनो तऊ ना दबति मुरि २ मुसक्याती है ॥ हरि-औध हार हिय मानति न कैसहूं है जामिनी गयेहूं ऐसी गति दरसाती है। रति रन रंग हिय बैसही हैं सुनो लाल अंग २ अजहूं अनंग मदमाती है ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्द गीलाभाई।

छिन में मदन माहिँ छिन में बहीर पुनि छिन में दुवार तक दौरि दौरि जाती है। छिन में अटा पै चढि झाँकति झरोखे पुनि छिनही में उतरि के आँगन में आती है ॥ छिन मे हँसत अरु छिन मे उदास होत ऐसेही अनेक तेरी गति दरसाती है। गाविँद सुकवि तातें मन माहिँ जाने हम बावरी ह्वै फिरत अनंग मदमाती है ॥

कारी अँधियारी अति भारी भयकारी निसा तामें तजि स्यामसारी चलन चहाती है। मन

में न माने कैसे त्रास जीव जन्तुन को देख अ-न्धकार अति कांपतही छाती है ॥ गोविंद सुकवि कहा वेर वेर कहूं आली मानस में मोच कुल-कानि को न लाती है । याते उर जाने हमें प्रीतम के प्यार माहिँ बावरी बनी है तूं अनंग मदमातो है ॥

तारन समेत तारापति फीको परिगो।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाल जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

लोचन जु पंचबान भौंह मनमथ चाँप सुन्द-रता लूटि कै विरंचि मानो धरिगो। कहै रस-सिन्धु फेर इन्द्र को धनुष मारी लछमी के भू-षन सो सबी अंग भरिगो ॥ सबू से लसत कुच मोतीमाल गंगधार पन्नग सी छूटी लट पूजा स्याम करिगा । उदित मुखारबिन्द रवि सो प्रिया को देख तारन समेत तारापति फीको परिगो ॥

द्विज पलक पलौ ना लगी चारौ जाम नैनन में नीर वीर हेरि हारि भरिगो ।। चाली निसा आली लाली नभ मे लखाई देत तारन समेत तारापति फीको परिगो ॥

छबीले कवि बनारस।

गरिगो गुमान गुन गौरि को गिरा को सुनि रूप रति रंभा को पताका लौं उतरिगो । सुकवि छबोले परिपूरण पुरन्दरी को अमल अपूरव उजासु तासु हरिगो ॥ मण्डित अखण्ड नव खण्डन प्रचण्डमान राधा छबि पहर प्रभात सों पसरिगो । औतरी जवैहौं वृष सूरजसुता है तवै तारन समेत तारापति फीको परिगो ॥

बा० माधोदास जी काशी।

ललिता कहो है वृषभान को सुता सों वोर देखु द्विजराज आज कैसो तेज भरिगो । सरद की राका पाय साका नभमण्डल सें होय कै निसंक पंकजात सो पसरिगो ॥ ल्याई भौन भीतर सों वाहिर दिखायवे को तहाँ एक को-

तुक सु माधौ मन हरिगो। प्यारी मुखचन्द को प्रकास गो अकास माह तारन समेत तारापति फीको परिगो ॥

महाराजा सर रावणेश्वरप्रसादसिंह बहादुर
के॰ सी॰ आई॰ ई॰ — गिद्धौर।

संग सखियान लिये आई सजि साम पास सुखमा समूह भौन भीतरै वगरिगो। जगमगी जोत वारी जेवर जड़ाव अंग हीरन-जटित माँग टीको भाल भरिगो ॥ घूंघट उघारि मंजु बदन विलोकतहीं सुकवि गुमान काम वामही को हरिगो। फैलत प्रकास मिथिलेसनन्दनी को नीको तारन समेत तारापति फीको परिगो ॥

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिद्धौर।

कीरतिकिशोरी बैठी चौहरे अटा पै सजी सौरभ तरंग सो चहूँघा चारु भरिगो। बेंदिन सँवारे भाल लाल मिलिबे के काज अंगन उमंग त्यों अनंग को पसरिगो ॥ घूंघट उघारि झुकि झांकतौ झरोखा मग वदन प्रकास मार-

ढरिगो गुमान इतै तामरस हो तै उतै तारन समेत तारापति फीको परिगो ॥

गोरे गात अँग राग करिकै कपूर धूर कीन्हो अभिसार उर आनँद पसरिगा । साजे सेत भूषण जटित हीर भीरन सों तौरन रह्यौ री तम देश तै निकरिगो ॥ ब्रजराज हेत साजि बादले की सारी तामे मोतिन किनारी सों प्रकास इमि भरिगो । घूंघट खुलत मुख तारापति भयो नभ तारन समेत तारापनि फीको परिगा ॥

चन्द्रकला बाई - बूँदी ।

आई तजि गेह मैं न आये बलबीर बीर कैसे धरौं धीर नीर नैनन मै भरिगो । पीरी परी देह सीरी मोतिन की माल भई बीती है निसीथीनी चकोर चैन ढरिगो ॥ चन्द्रकला होत चटकाहट चहूंघा घोर ठौर ठौर ताम्रचूड सोर जोर करिगो । लाललाल बादर भये हैं नभमण्डल मैं तारन समेत तारापति फीको परिगो ॥

बाबू अयोध्यासिंह – मधुबन जिला आज़मगढ़ ।

बीजुरी विचारी ह्वै विकल बिलखानी फिरी हीरक ममालहूं को तेज सब हरिगो । चूर चूर भयो चोप चुन्नी की चित्र कहूं को दुतिवारे दीपक दिमाक कछु उतरिगो ॥ हरि-औध वदन बनावत ब्रजेश्वरी के विधिहूं को बहुरो बनाइबो बिसरिगो । तरनि के तन मैं न तनक लुनाई रही तारन समेत तारापति फीको परिगो ॥

कोपागंजनिवासी कवि सालिग्राम जी ।

कहै कवि कौन छवि कीरतिसुता की आज कंचनलता सी खासो सुखमा ते भरिगो । नागिन सी बेनी तैसे खंजन जुगल नैन भृगुटी मनोज चाप आपही ते धरिगो ॥ सोहै सालग्राम चक्रवाक ते उरोज दोऊ केहरि कमर-खीन उपमा निदरिगो । आनन अनूप सब व्याधि ते विहीन याते तारन समेत तारापति फीको परिगो ॥

बीसवा अधिवेशन।

मिती अगहन वदी १ सम्वत् १९५१

रासमण्डल गुपाल को।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु।

बजत मृदङ्ग इन्दु लेखाने बजाइ खूब रंग-देवी करताल स्यामा देय ताल को। कहि रस-सिंधु फेर माधुरी औ मालतीहु दोऊ जो सारंगी ले बजावे वह ख्याल को॥ बीन तुंग विद्या चित्र लेखा मुहचंग वारी ललिता विसाखा गान करे नन्दलाल को। विन्दा को जु हाव भाव चचलः कों तान सखी निर्त्य राधिका को रासमण्डल गुपाल को॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

सरद निसा को स्वच्छ चांदनी चहूंघा छाई को कवि वखानै री वहॉ के सुनु हाल को। कोटि कामदर्प को सुमर्दन करनहारो लेवो गत थिरकि अनोखे नन्दलाल को॥ देवन को

भीर सी लगी है नभमण्डली में नैन तरसे हैं री अखण्डल भुआल को। मान कही मेरी मान छाड़ दै नवेली आज एरी चलु देखु रासमण्डल गुपाल को॥

एरी मनमोहन की मोहिनी नवेली सुनु छाड़ि दै री बावरी सखीजन के जाल को। सरद निसा की आज सोहति अनूठी छवि दूनी चन्दपूनो ते सरूप नन्दलाल को॥ तासों मिलि बीर सुधा-रूप को अचैं के भलैं सुफल करै री बलि लोचन बिसाल को। देखैं सुरमण्डल अखण्डल समेत नभमण्डल ते आज रासमण्डल गुपाल को॥

कवि गोपीनाथ जो—काशी।

चांदनी बिलोकि स्वच्छ सूरजसुता के तीर बीर बलबीर टेर्यौ बाँसुरी रसाल को। सारी सज सुन्दर किनारीदार नारी चली कोउ सेत सबुज बसन्ती कोउ लाल को॥ सोरह हजारन के बीच बीच गोपीनाथ हाथ गहि नाचै सम

साधे लिये ताल को। देखत बनत आली ल-
टक निराली यह राधिका को दाब रासमण्डल
गुपाल को॥

बाबू मन्नूलालजी—काशी।

धन्य धन्य ब्रज धन्य धन्य ब्रजबासिन कों
धन्य धन्य गाय गोपी धन्य ग्वालबाल को। धन्य
नन्द जसुदा उपनन्द सब धन्य धन्य धन्य धन्य
कीरति बृषभानजी के भाल को॥ धन्य गोवर-
धन जाहि कर पै सुधाख्यौ आप धन्य बाँसुरी जो
भावै मन्नूलाल लाल्न को। धन्य धन्य बृन्दाबन
भूमि नवकुंजन की धन्य जहाँ होत रासमण्डल
गोपाल को॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी।

नेक नेक माखन दै हम री नचायो जाहि
आँखि मूदि कैसे के बिलोकैं वह लाल को।
जा तन में साँवरो सनेह सों सनेह लायो ता तन
मे कैसे के उढावै मृगछाल को॥ माधौ निज
हाथन तें कवरी करी है जाहि कन री कहैगी

भस्म लावनो सुभाल को। ऊधव जू बावरो भो बकत वृथाही बीर याने नहि देख्यौ रासमण्डल गुपाल को॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथ जी।

कालीदह कूदि कै कन्हाई नाग नाथ लाइ बाँसुरी बजाइ खेल कीन्हा इन्द्रजाल को। कोपि कै पुरन्दर केदार जू बुलाइ मेघ वारि बरसायो जोर जैसे प्रलैकाल को॥ वाम छोर नख पै गोवर्द्धनगिरिन्द्र राखि बूड़त बचायो व्रजवासी गाय ग्वाल को। कुंजबनवास मंजु मदनविलास हास ऊधो ना भुलाय रासमण्डल गुपाल को॥

जोरि २ अँगुरी ते जोरी थोरो वैसन की रोम २ जोवन उमंग भरी बाल को। नाचिकै नचावनि हँसाइ कै हँसनि मंजु गाइ कै गवावनि सुवारि सुर ताल को॥ ग्वारिन कै मध्य केदारनाथ मयनरूप करिकै कलोल हस्यौ मन के मलाल को। सालि २ उठत करेजे सुधि कीन्हे चैन ऊधो ना भुलाय रासमण्डल गुपाल को॥

छबीले कवि बनारस।

सरद निसा मे आजु अवमि बिलोकिये री हौंह्र लखि आई कहौ ऐसी हाल ह्वाल को। सुकबि छबीले देवदारन समेत नभमण्डल ते देखि होत परम निहाल को॥ सुखद बिलास सकुल पूरनप्रकाससमान तिहूपुर ता समान उकति न ख्याल को। कोटि चन्द्रमण्डल को खण्डन करत ब्रजमण्डल अखण्ड रासमण्डल गुपालको॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

एक समै वनिता वोलाई कान्ह कुंजन में पूरन प्रकास लखि चन्द छबि जाल को। आई वेगि ब्रज की लोगाई तहाँ बेनी द्विज गावत वजावत मृदंग डफ ताल को॥ द्वै द्वै ब्रजवालन के बीच बीच नाचैं स्याम ताके मध्य नाचैं लिये राधे नन्दलाल को। गोपी वनि देख्यौ चन्द्रभाल सो न जान्यो हाल खास इन्द्रजाल रासमण्डल गोपाल को॥

बा॰ हरिश्चन्द्रप्रसाद जी—काशी।

देह की न सुधि रही गेह को न खोज मोहि नेह घटि गयो अति पीतम सुचाल को। घूमि जात सीस कहूं झूमि जात नथ-नाक भूमि जात टूटि बेना जड्यो मनि लाल को॥ दया फरमाय हरिशंकर को ध्याय आली दीजिये नसाय यह विपति कराल को। तेरिये दोहाई चित व्याकुलता छाई मेरे जौलों देखि आई रासमण्डल गुपाल को॥

मनमोहन कवि।

बैठी साजि मन्दिर में सुन्दरी दरीची बीच काज ब्रजराज आज सौति हिय साल के। लोचन सरोज से बदन चन्द छीनो कटि बेनो कुच सोभा वह देखे अनै बाल के॥ नीलमणि आस पास कनक सुदाने लसे मोहन विचारि चारु गोरी गल माल के। मानो स्याम पीत के सुरंग यों लखात भास पावत प्रकास रासमण्डल गुपाल के॥

महाराजकुमार श्री. गुरुप्रसादसिंह जी—गिद्धौर।

बाजत रबाब बीणा तानपूरा स्वर सिंगार सरिग-रिगम तान ध्रुवपद ख्याल के। राग रागिनीन अलङ्कार कूट तानन से करत अलाप प्रस्तार स्वर जाल के॥ टकिट धुकिट घित्ताधाकृत मृदंगधुणि कड़ानधा कड़ानधा मान परन पड़ाल के। विषम अतीत अनाघात सम ताल के सुद्रुतगति नृत्य रासमण्डल गुपाल के॥

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिद्धौर।

सरद मयङ्क का मरीचिन लौ आवैं काढ़ि वदन मयङ्क ते प्रकाम वह बाल को। बाजै पग पैजनीन किङ्किनी मधुर धुनि बजत अनेक जन्त्र मनु सुर ताल को॥ नीलमनिमाल बीच बीच पुखराज मनो कृष्ण बीच बीच छटा छूटै ब्रजबाल को। आई सजि साज मनिमन्दिर मे मानो ब्रजमण्डल मे होत रासमण्डल गुपाल को॥

कोपागञ्जनिवासी मारकंडेलाल उपनाम चिरजीव कवि,

कर सो पकरि कर ब्रज को किसोरी सबै

ोरी भरै भालन झुलाये गरे माल को। कावो
ेत कौतुक वगारि काम हू को जाके अंगनि
िभूषन विराजै रत्न जाल को॥ कवि चिरजीव
आज सरद निसा मैं जहाँ केलि करैं स्यामा
स्याम कीरति विसाल को। भूलत न ऐसो औन
आनँद उमंग वारो सुजस सँवारो रासमण्डल
गुपाल को॥

चीर को हरन करै हिय को हेमन्त ही मैं सिसिर मै फाग मोहै गोपी ग्वाल जाल को। काम को महोत्सव वसन्त व्रजवालनि मैं काली-नाग नाथनोहू ग्रीषम मैं लाल को॥ कवि चिरजीव कृष्ण अष्टमी सु पावस मैं पालनो समेत सुख सुखमा विसाल को। रंजन करत रोम २ अवनी मैं आज सरद निसा मैं रासमण्डल गु-पाल को॥

गंधौली जिला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जी
उपनाम व्रजराज।

अजहूँ लौं करक करेजे करकत रहै विसरै

छिनौ न अलि रैनि दिन ख्याल को। कर गहि खैंचि खैंचि बसन सखीजन के भरि भुज भेटिबो भटू री भलो लाल को॥ तब व्रजराज अब मथुराधिराज भये हमैं सौंपि बिरह बिथा के यहि हाल को। सूलत हिये में वह भूलत न केहू भाँति हँसि हँसि कीबो रासमण्डल गुपाल को॥

लखनऊनिवासी हनुमानलाल कवि

शङ्कर को तप जप बिदित अदित सम सत्यहरिश्चन्द अहङ्कार दस भाल को। द्रोपदी को अम्बर स्वयम्बर श्रीजानकी को करन को दान ग्यान जनक-भुवाल को॥ नारद को गुन गान वरदान शारद को हनूमान रामजू ते अपर कृपाल को। काम को सुमन धन सुरभी हरित वन शरद निशा मैं रासमण्डल गुपाल को॥

श्रीचन्द्रकला बाई – बूँदी।

नटवर वेष साजि मदन लजाने लाल मन हरि लीनो हाल नारिन के जाल को। अमित स्वरूप धारि नखसिख सोभ मनी राख्यो गहि

हाथ हाथ भिन्न भिन्न बाल को ॥ चन्दकला गाय गीत भ्रमत सनेह सने बरनत नारदादि जस जनपाल को । सुमन समूह बरसावत विमान चढ़े देखि देखि देव रासमण्डल गुपाल को ॥

बाबू पयोध्यासिंह—मधुवन जिला आज़मगढ़।

बस मैं न आपने हौं निवस भई हौं महा वारि ढरै बैरीहूं दृगन लखि हाल को । बुद्धि बिनसानी लेस रह्यो ना विचार हूं को वेदन बढ़त भाखि विरह हवाल को ॥ हरि-औध की सौं जोग बतियां अनूठी अहैं केवल बतैये इतो करि बहु ख्याल को । कैसे वह साँवरो सरूप हिय से ते कढ़ै ऊधो कैसे भूलै रासमण्डल गुपाल को ॥

कैसे सुधि बाँसुरी की धुनि कों बिसारि दीजे कैसे दूर कीजे बांकी भौंहन के ख्याल को। मन्द मुसकान कैसे चित पै चढ़ै ना कबौं ध्यान छूटि जावै कैसे लटकीली चाल को ॥ हरिऔध की सौं सबै करिहौं तिहारी कही के

दूती तजि बहु जाल को। कैसे वह सॉवरो स-
रूप हिय में ते कढ़ै ऊधो कैसे भूलैं रासमण्डल
गोपाल को ॥

काकरौली निवासी कवि घनश्याम जी।

वृन्दावन सघन सु बोलत मयूर मंजु कुहुंकत
कोकिला कपोत कीर चाल को। घनस्यामप्यारे
मुख सुनि मुरली की धुनि थेई थेई नाचे नृत्य
गोविंद बिसाल को। बाजत मृदंग तक् धुव-
किट् तझिलांग धा धा किट धकिट सु नीको
सुर ताल को। लालहू की मन्द मुसकानि रा-
धिका की ओर देखैं ब्रजबाल रासमण्डल गु-
पाल को ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगीलाभाई।

बाजत मृदंग चंग नौबत नफेरी अरु सारँगी
सितार चित्त चोरत रसाल को। नाचत विहारी
ब्रजवनिता के सग तहँा उरुपादि गति धरि
आनँद विशाल को ॥ गोविंद सुकवि सोय पेखन
कों प्रेम धरी अम्बर ते आय सबे माघ सुरपाल

को। या समै तूं मान करि बैठी क्यों अबोल आली देखन को चल रासमण्डल गुपाल को॥

निछावर करति है।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

गौवन चराय कान्ह साँझ समै आये गेह पुष्पन की वृष्टि कीन्हें मन को हरति है। कहै रससिन्धु सखी आरती जु राई लोन स्याम पै उतार फेर पाथन परति है॥ सप्तदीप नवखंड चौदे लोक सप्तसिन्धु तेंतीस करोड देव वार कै धरति है। कोटि मैन कोटि इन्दु कोटि रमा कोटि रवी नन्द के कुमार पै निछावर करति है॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

आजु नँदगाँव में महोछव अनूठो छायो जसुदा लै लाल जू को अङ्कनि भरति है। ग्वालन की भीर चली आवति है भोरही सों गोपिन की मण्डली प्रसन्न निकरति है॥ याचक

समूह जुरे द्वार पै पुकारैं शुभ बीर नन्दरानी तिन्हैं दाम बितरति है । जीवै चिरकाल या पियारो नन्दलाल यातें भर भर थाल को निछावर करति है ॥

बा० माधोदास जी - काशी ।

दीरघ उसाँस लेत चेतहूं बिसारि देत सेत सेत बुंदैं अँखियान ते ढरति है । रावरे सुध्यान मे पखान पूतरी सी होत साँवरो कहत ताहि अङ्क में भरति है ॥ वकि वकि उठै बाल बावरी सी बोलै बैन चैन ना दिखात गात आपनो गरति है । माधव जू वेगही बिलोकिये विदा की वेर नातो प्रान आपनो निछावर करति है ॥

कवि पं० गोपीनाथ जी काशी ।

ननद जेठानी बानी सुनत बिकानी सबै सासु बोल सुनिबे को साधन भरति है । नारी रूप वारी जेती ब्रज की बसनवारी अब तो न कोऊ वाकी सर को करति है ॥ गोपीनाथ वनिता न

ासी है विधाता रची देवर निहार हिये आनँद भरति है। सासु होत परम हुलास वा प्रकास देखि प्रानधन प्रीतम निछावर करति है॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

सान सुघराई को निहारि हारि मानै मैन असुनीकुमारहू न सर को अरति है। पारिजाति परम लजात पद पेखि २ पूरन लजाय जाय पंक मे परति है॥ बेनी द्विज लाला कृष्णलाल को प्रताप लखि इन्द्रहू हमेस हिय अन्दर डरति है। कविता रसीली जोई रसिक सुनै है कान मान पद पद पै निछावर करति है॥

कान सुनि जनम सुजान कान्हजी को नन्द दान दै दै द्विजन दरिद्रता हरति है। द्वार द्वार बाजत बधाई ब्रजमण्डल मे आनँद को सिन्धु आनि उमड्यो परति है॥ बेनी द्विज जसुदा निहारि मुख चूमि चूमि मोद मदमाती जनै गोद लै धरति है। छोरि छोरि भूषन वसन मनि मोतीमाल लाला नंदलाल पै निछावर करति है॥

पं० केदारनाथ जी बनारस।

चुभि गो चपाकि अंग मैन जू को तँ
तोर पोर मेटिबे को समै जानि धौं परति है।
फर्कत है चूरी कर मर्कत है बाजूबन्द फर्कत है
वाम नैन सगुनोचरति है॥ ताही समै आयगो
बिदेस ते केदारनाथ मोदित ह्वै विदुखिनि के
पायनि धरति है। अम्बर पटम्बर पिन्हाये देत
माँगी विनु रूप देखि रूपया निछावर करति है॥

कंस को निदेस पाइ आई नंद के अवास
कुच मो लगाइ विष रूप मानो रति है। जान्यो
नाहिँ नेकु नंदरानी आसुरी को भेव कीन्हो म-
नमान गोद सुत को धरति है॥ आपु लागी
गृह को रुँवारन केदार काज ध्यावत पै सोर
करि पूतना मरति है। धाइ उर लाइ ;मातु
देवन मनाइ महा लाखन की सम्पदा निछावर
करति है॥

पण्डित अम्बाशङ्कर जी - काशी।

पूरव के वासर चराय वच्छ आये हरि हरखि

जसोदा गहि गोद लै धरति है। पलक भलक बिथुरीलै रज रंजित जे अंचल सों पोंछि प्रान मस्तक भरति है ॥ दूब दधि अच्छत औ फूल फल धूप दीप संकर सुकवि देवपूजन सरति है। भूषन बसन सोन राजत रतन तौन बार २ वारति निछावर करति है ॥

बा॰ हरिशङ्करप्रसाद जी—काशी।

उमगि अनंग रंग छनदा छटा सी वाम रचि बिपरीति केलि सागर तरति है। लंक लचकाय जोस घूघुर मचाय चूमि चिबुक कपोल पी को अङ्क मो भरति है। एहो हरिशंकर मजेज मद-माती महा साहु के मोहासिवे को नेकु न डरति है। ज्यों ज्यों हँसि हँसि नँदलाल मुख चूमि लेत त्योंत्यों श्रमसीकर निछावर करति है॥

छबीले कवि—बनारस।

बैठी मृगनैनी मजु मन्दिर मजेजभरी सेज साजि मोहन को मारग भरति है। सुघर स-हेलिन की संगति समाज सोहै तान तानपूरे

पैतराने को ढरति है ॥ सुकबि छबीले छैल तुरत पधार पेखि आनँद पयोधि को प्रवाह हलरति है । पाइ व्रजरानी व्रजचन्द को अमन्द कोटि चन्द मुखचन्द पै निछावर करति है ॥

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिद्धौर ।

जा दिन तें देखो द्दग सुघर सलोनो रूप ता दिन तें भाँति भाँति भावना भरति है । धुनि सुनि भौरन की डोलै संग लागि घनश्याम को विलोकि हिय आनन्द धरति है ॥ नोलपट छोरि धरै पीतपट गातन मं बातन में रावरोई नाम उचरति है । एहो व्रजराज अंक भरिये निसंक वाहि तन मन प्रान जो निछावर करति है ॥

कविराज लछिराम जी—अयोध्या ।

मोतिन के चौक पुंज पावड़े पसारि पौरि पूजि पग नखन महावर धरति है । भूषन वसन पौरे कङ्कन जजीरे कर मौरी माल वन्दन प्रभावर धरति है ॥ लछिराम अरविन्द स्याम अं-

जली से राखि नवलकिसोरी भोरी भाँवर भरति है। थारन मै छलकै रतन सुवरन भार भोरहीं सों गौरि की निछावर करति है॥

महल पधारे मनमोहन कहूं तैं आन राई लोन वारि अलबेली आदरति है। लछिरास चौक चाननी मे नौरतन चारु मालाकार आनँद अपार मे भरति है॥ स्याम घन रंग विज्जु माधुरी हँसनि सोहैं मदन मसाल की प्रभा को निदरति है। गर वनमाल पर लोचन विसाल पर ख्यौर वारे भाल पै निछावर करति है॥

ला॰ मारकण्डेलाल उपनाम चिरजीवी कवि कोपागंज।

मूल लौं दिखात जहाँ कूल वा कलिन्दजा को रजत समान रेत समता धरति है। ऊपर अकास अवकास को न अन्त जामैं जोवन जलूसन की महिमा भरति है॥ कवि चिरजीव कृष्ण राधिका विराजैं जहाँ सरदनिसा मैं खूब चाँदनी परति है। मानो निसि पूना वर मूरति विलोकि दूनो चन्द की मरीचैं ले निछावर करति है॥

लखनऊनिवासी लाला हनुमानलाल कवि।

दनुज सँहारि लङ्कराज दै बिभीषन को भरत अवध सौंरि काल न परति है। सुमन बिमान मै सखा चढि धाए आपु हनूमान बेगि देखि पौन पछरति है॥ निरखत पुरवासी आइ मिले सुखरासी हय गज दान द्वार नौवति करति है। राम सिया लखन पै वारि पानि पीवै माय तन धन प्रान लौ निछावर करति है॥

गंधौली ज़िला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जी उपनाम ब्रजराज।

बाल नव अंगन अनग को अवाई जानि बिविध विधान के उमाहन भरति है। नैनन मैं अंजन सँवारि कै दिठौना देति उर उघरैते ऐंचि अंचल धरति है॥ देखत जितैही ब्रजराज को विलोकै तितै तोरि टन कोरिक उपाय न सरति है। लाय निज हिय सौं लला को ललचाय चूमि प्रानन को आपने निछावर करति है॥

श्रीचन्द्रकला बाई - बूँदी।

आज साज साजि होरी खेलन को ब्रजराज

ठाढ़े वृषभानु द्वार कौतुक धरत है। उत ते रँगीली रसभीनी सखियान संग लैके राधिकाहू अनुराग सरसत है ॥ चन्दकला करत अनेक कला ग्वालवाल जब घनस्याम गाय भाँवरि भरत है। तब वृषभानुलली तनु मन धन प्रान आली वनमाली पै निछावरि करत है ॥

बाबू अयोध्यासिंह - मधुबन जिला आजमगढ़।

सेवाही मैं सास औ ससुर की सदाही रहै सपनेहू' सौति ननहू' सों ना लरति है। सील सुघराई त्यों सनेहभरी मोहति है रोस रिस रार ओर क्योंहूं ना ढरति है ॥ हरि-औध सकल गुनागरी सती समान सूधे २ भायन सयानप तरति है। परम पुनीत पति प्रीति मैं पगीही रहै प्रान धन प्यारे पै निछावर करति है ॥

कारौली निवासी कवि घनश्याम जी।

कानहू को आगम सुन्योरी आइबे को आज दौरि दौरि देखें नेक धीर न धरति है। घनस्याम प्यारे जोरि २ के सखिन आज गाय गाय

हरखि बधाये उचरति है ॥ मुर मुर देखैं मुस-
क्यावे मुख मन्द मन्द पीय को उछाह जीय
नाहिँ बिसरति है । तोरि तोरि मुकता मणि
माणिक मरोरि माल देख पिय दौरि के निछा-
वर करति है ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोबिन्दगोलाभाई ।

सरप तें छूटे कान्ह आय अवलोकि सबै ब्रज
की बधूटी वपु भाय कों भरति है । कोउ राई
लोन लाइ ऊपर उतारे पुनि कोउ रच्छासूत्र
लाइ कण्ठ में धरति है ॥ कोउ लाइ कुसुम कों
सिर पे चढ़ात पुनि कोउ आइ आसिख अ-
नूप उचरति है । गोविँद सुकवि पर मात ज-
सुदा जी भरि मोतिन के थाल कों निछावर
करति है ॥

इक्कीसवां अधिवेशन।

मिती अगहन सुदी ? सम्वत् १९५१

बाँसुरी बजावे है।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज

उपनाम रससिंधु।

सुन्दर सलोने नैन अन्तहि रसीले बैन देखि जिय परे चैन मेरे मन भावे है। कहे रससिन्धु फेर हाव भाव नृत्य करे घेरदार दावन को हाथ ते उठावे है॥ सखी को बुलावे रासमण्डल करावे मध फूनरी खिलावे खूब सब को रिझावे है। देख ललचावे मुसकावे कभी गावे स्याम राधिका के संग खड़े बाँसुरी बजावे है॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

देखो प्रेम-रंग में पगी है वह बाल लाल बेसुध भई सी सुधि आपुनी गँवावे है। पीतपट धारि कटि काछिनी सुधारि सीस मुकट सँवारि ढंग रावरो बनावे है॥ ऐसी वा भई है तनमई तुमही में कान्ह एकै धुनि राधे राधे नाम को

लगावै है। बंसीबट बिपिन बिलोको बलबीर बलि बीर बलबीर बनो बाँसुरी बजावै है॥

बाबू जगन्नाथप्रसाद जी बी॰ ए॰ [रत्नाकर कवि] काशी।

जाके सुर प्रबल प्रबाह को झकोर तोर सुर मुनिवृन्द धीर बिटप बहावै है। कहै रतनाकर पतिव्रतपरायन को लाज कुलकान को करार बिनसावै है॥ कर गहि चिवुक कपोल काल चूमि चाहि मृदु मुसुकाय जो मयङ्कहिँ लजावै है। ग्वालिनि गुपाल सों कहति इठिलाय कान्ह ऐसी भला कोऊ कहूं बाँसुरी बजावै है॥

बैठे भङ्ग छानते अनंगअरि रङ्गरमे अङ्ग अङ्ग आनँद तरङ्ग छवि छावै है। कहै रतनाकर कछूक रङ्ग ढङ्ग औरै एकाएक मत्त ह्वै भुजङ्ग दरसावै है॥ तूँबा तोर साफी छोर मुख विजया सो मोर जैसे कञ्जगन्ध मे मलिन्दवृन्द धावै है। बैल पे बिराज संग सैलतनया लै वेगि कहत चले यों कान्ह बाँसुरी बजावै है॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी - बनारस।

बसि करि डारत है सातौ सुर देवलोक परम अशोक ताल ऊधम मचावै है। खग मृग जहां तहां चित्र से बनाय देत जल थल एकै भाँति रस सरसावै है॥ खूब हरिशंकर अजूब महिमा है जाकी हारद मरम कछू सारद न पावै है। आँसु री जो रोकौं मेरे पाँसुरी उठत पीर गजब कहर कान्ह बाँसुरी बजावै है॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी।

छोटी सी कछोटी और छोटी ही अँगूली पाग छोटे छोटे बाजूबन्द किङ्किनी सुहावै है। छोटे से मुखारविन्द छोटी नवनीत लौंदी मागि मागि जननी पैं मोद को बढ़ावै है॥ छोटी २ पैयां छोटी पैजनी सुढार चारु छोटे छोटे सखा संग आँगन में धावै है। छोटे छोटे भौंरा लटू छोटी सी चकैया चारु छोटे छोटे पानि छोटी बाँसुरी बजावै है॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी।

सीस क्रीट मुकुट मयूरपख केर धारे गर

लगावै है। बंसीबट बिपिन बिलोको बलबीर बलि बीर बलबीर बनो बाँसुरी बजावै है॥

बाबू जगन्नाथप्रसाद जी बी० ए० [रत्नाकर कवि] काशी।

जाके सुर प्रबल प्रबाह को झकोर तोर सुर मुनिवृन्द धीर बिटप बहावै है। कहै रतनाकर पतिव्रतपरायन की लाज कुलकान को करार विनसावै है॥ कर गहि चिबुक कपोल कल चूमि चाहि मृदु मुसुकाय जो मयङ्कहिँ लजावै है। ग्वालिनि गुपाल सों कहति इठिलाय कान्ह ऐसी भला कोऊ कहूं बाँसुरी बजावै है॥

बैठे भङ्ग छानते अनंगअरि रङ्गरमे अङ्ग अङ्ग आनँद तरङ्ग छवि छावै है। कहै रतनाकर कछूक रङ्ग ढङ्ग औरै एकाएक मत्त ह्वै भुजङ्ग दरसावै है॥ तूँबा तोर साफी छोर मुख विजया सो मोर जैसे कञ्जगन्ध में मलिन्दवृन्द धावै है। बैल पै बिराज संग मैनतनया लै बेगि कहत चले यों कान्ह बाँसुरी बजावै है॥

वाबू हरिशंकरप्रसादजी - बनारस।

वसि करि डारत है सातौ सुर देवलोक परम अशोक तात ऊधम मचावै है। खग मृग जहां तहां चित्र से बनाय देत जल थल एकै भाँति रस सरसावै है ॥ खूब हरिशंकर अजूब महिमा है जाकी हारद मरम कछू सारद न पावै है। आँसु री जो रोकों मेरे पाँसुरी उठत पीर गजब कहर कान्ह बाँसुरी बजावै है ॥

काशीनिवासी वाबू माधवदास जी।

छोटी सौ कछोटी और छोटी ही अँगूली पाग छोटे छोटे बाजूबन्द किङ्किनी सुहावै है। छोटे से मुखारबिन्द छोटी नवनीत लोंदी मागि मागि जननी पैं मोद को बढ़ावै है॥ छोटी २ पैयां छोटो पैजनी सुढार चारु छोटे छोटे सखा संग आँगन में धावै है। छोटे छोटे भौंरा लटू छोटी सी चकैया चारु छोटे छोटे पानि छोटी बाँसुरी बजावै है ॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी।

सीस क्रीट मुकट मयूरपख केर धारे गर

गुंजमाल लाल अति छवि छावै है । काछे कम-नीय काछ कटि पटपीत केर कर्णं माहिँ मकराकृतकुण्डल सुहावे है ॥ धन्य व्रजभूमि जहाँ विचरे बिहारीलाल गोवन के पाछे कर साँटी लिये धावे है । साँझ समै आवत उडावत सुधेनु रेनु गाइ कै केदार सुर बाँसुरी बजावे है ॥

छन्नलाल रसिक नवीन — काशी

रसिकनवीन को विलोकु चलि आली नेक अङ्ग अङ्ग जाकी छवि मदन लजावे है। मोर को मकुट कटि काछनी लकुट हाथ काँधे पीतपट सो अधिक छवि छावे है ॥ उर वनमाल भाल चन्दन बिराजे वेस कुण्डल चमक चहुं मोद वरसावे है । लीन्हे ग्वालवाल संग अमित उमग-भरो कुंजन में कान्ह आज बाँसुरी बजावे है ॥

कवि गोपीनाथ जो - काशी ।

सुनि के भनक मन मुनि के न माने छन जोगिन को ध्यान जोग सबही भुलावे है। संभु छूट्यो बे मदिवो विरंच भूल्यो चन्द चाँ-

:नो पै आव चौगुनो चढ़ावै है ॥ गोपी ग्वाल
ग्राल ततकालही निहाल होत देव नर किन्नर
के मोद सरसावै है । नन्द को कुमार आली
कालीदह तीर जबै राधे रंगरातो मातो बाँसुरी
बजावै है ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

सीस न डोलावै सेस मुदित महेस होत छ-
कित दिनेस भूलि रथ ना चलावै है । टूटी परैं
नभ ते वधूटी देवतानन की देव नर किन्नर की
टक लग जावै है ॥ बेनी द्विज ब्रह्मा ब्रह्मण्डन
समेत मोहे गोपी ग्वाल गैयन को आनँद बढ़ावै
है । जमुना के तीर बीर छोहरा अहीरवारो टेरि
बलबीर जबै बाँसुरी बजावै है ॥

रसीले कवि – काशी ।

कछु ना सोहात थहरात गात बार बार अ-
बला अबल जानि प्रान तरसावै है । कहत र-
सीले उठै कठिन कुपीर हाय धीरज नसाय उर
मदन सतावै है ॥ लाज रहि जाय ना बेहाल

विवादी भेद राग रागनीन पुत्र भारजा लखावै है। उपज विलम्बित सुमध्य द्रुत शुद्ध बानी गमक के तान कान्ह बाँसुरी बजावै है ॥

बाबू अयोध्यासिंह – मधुवन जिला आजमगढ़।

सिहोर (काठियावाड़) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई

सरद की चाँदनी मे रचि रासमण्डल कों ब्रजवनिता के हो आनन्द उपजावे है। गोविँद सुकवि तहाँ बाजन विविध बाजे उनके अवाज आज चित्त कों चुरावे है ॥ या समैं तूं मान करि बैठी क्यों अजान हेरी चल सोइ देखन कों ताहि कों बुलावे है । मानि सो न साची तो तूं सुन श्रुति देके आली टेरि तेरो नाम कान्ह बाँसुरी बजावे है ॥

कोपागंजनिवासी मारकंडेलाल उपनाम चिरजीव कवि,

निषध रिषभ औ गन्धार षजं मध्यमहूं धैवत औ पंचम को सुरनि सुनावे है। कोमल सु तेवर त्यों रोही अवरोही सम द्रुत औ विलम्बित ते सैन उपजावे है ॥ कवि चिरजीव षट राग रागिनी छतीस है सत अठासी सुत ताके बीच गावे है । तीन सत साठ ताल मुर्छन यकीस लेकै काँध वा कलिन्दीकूल बँासुरी बजावे है ॥

बिबादी भेद राग रागनीन पुत्र भारजा लखावै है। उपज बिलम्बित सुमध्य द्रुत शुद्ध बानी ग मक के तान कान्ह बाँसुरी बजावै है॥

बाबू अयोध्यासिंह – मधुबन जिला आजमगढ़।

काको सुत कैसी छबि धारत बसन कैसे कैसी बानी बोलि को पियूख बरसावै है। जा-नत जुगुत कैसी मोहत कहा धौं करि मन्द मु-सुकानि काको मन अपनावै है॥ हरि-औध की सौं कहो मानु चलु देखैं नेक काको रूप का-मिनी को बावरी बनावै है। काके बस ब्रज की बिलासिनी भई हैं बीर! कौन बनमाली बन बाँसुरी बजावै है॥

बिबस बनाइ बारनादिक बिहंगन्ह को बन-चर बानरादिहू को बहरावै है। बिटप औ ब-ल्लीहू बिमोहि बिलमावै बारि बहत बयारहू की गति बिरुझावै है॥ हरि-औध बूझि देखै वैगुन बिलोके कहा बावरी जो ब्रज१नितान को बनावै है। बिबुध बरूथ बिबुधेस बिधिहू को बेधि बीर। बनमाली बन बाँसुरी बजावै है॥

सिहोर (काठियावाड़) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई

सरद की चाँदनी में रचि रासमण्डल कों व्रजवनिता के हो आनन्द उपजावै है। गोविंद सुकवि तहाँ बाजन विविध बाजे उनकी अवाज आज चित्त कों चुरावै है ॥ या समै तूं मान करि बैठी क्यों अजान हरी चल सोइ देखन कों ताहि कों बुलावै है। मानि सो न साची तो तूं सुन श्रुति देके आली टेरि तेरो नाम कान्ह बाँसुरी बजावै है ॥

कोपागंजनिवासी मारकंडेलाल उपनाम चिरजीव कवि,

निषध रिषभ औ गन्धार षर्ज मध्यमहूं धैवत औ पंचम को सुरनि सुनावै है। कोमल सु तेवर त्यों रोही अवरोही सम द्रुत औ बिलम्बित ते मैन उपजावै है ॥ कवि चिरजीव षट राग रागिनी छतीस है सत अठासी सुत ताके बीच गावै है। तीन सत साठ ताल मुर्च्छन यकीस लेके काँध वा कलिन्दीकूल बाँसुरी बजावै है ॥

काछनी पिताम्बर की आछे रंग दुपट सुढंग बनमाल सरसावै है ॥ श्रीबर जू क्रीट श्रुति कुण्डल अमोल लोल इन्दुमुख दूनी दुति दीह दरसावै है। रस को बटोरी मकरन्द मध बौरी मानो मैन रुचि घोरी मन्द बाँसुरी बजावै है ॥

श्रीकिशोरीलालजी गोस्वामी द्वारा।

माथे मोरमुकुट चटक सिरपेंच बाँधे साधे कानकुण्डल लटक ललचावै है। नासिका बुलाक अनुरागभरे नैननि सों बिहँसि निरखि चित चाह सरसावै है ॥ पीतपट लकुट नकल कटि काछनी पै नखसिख भूषन विसेष मन भावै है। भनत किसोरी स्यामसुन्दर छबीलो छैल मन्द मन्द मेरी गैल बाँसुरी बजावै है ॥

गंधौली ज़िला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जी उपनाम व्रजराज।

सीस मंजु मुकुट विराजै गुंजमाल गरे तैसो पीतपट तन दुति सरसावै है। लचकि लचकि अँठिलात व्रजराज वीर ग्वालन समेत नित भोर

दूत आवै है ॥ निकट छुवाय अंग भृकुटी नचाय रद अधर दबाय करि सिसकी सुनावै है । सो तन निहारि अलि ईछन तिरीछन सो मन्द मुसकाय मुरि बांसुरी बजावै है ॥

ब्रज से बहाली भरि थाली उजियाली लिये दैदै कर-ताली सबै ग्वाली गीत गावै है । काली-दह बीच संग काली घरवाली सबै बाली वैस व्यालिन सों बिनती करावै है ॥ अदभुत ख्याली को निराली करतूति लखि मुख छवि हाली ससि समता न पावै है । कालीफन ऊपर कपाली सौंह देख आली कैसे वनमाली खरो बाँसुरी बजावै है ॥

मानिक ते मानहु मरीचि मरकत की

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

सूरज को पर्व सुन चले द्वारका ते स्याम अश्व गज उष्ट्र प्यादे सेनाहू सजत की । त्योंही रस-

सिंधु फेर कुरुक्षेत्र न्हान आये जसुदा जी नन्द गोप गोपी मसलत की ॥ भीर भई भारी तहाँ ठाढ़े नर नारी कृष्ण देख राधिका सों कहै नई उकत को । रवि को जु रंग लाल राहु को है स्यामताई मानिक ते मानहु मरीचि मरकतकी॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

आये बलवीर पिय भोरही प्रिया के गेह वसे कहूं रात कीन्ही वात हरकत की । सारी रैन जागे अनुरागे प्रेमपागे उतै इतै मनमोहिनी की छाती दरकत की ॥ दोऊ अनुरक्त नैन श्याम पूतरी की प्रभा उकति अनूठी वीर भासै बरकत की। अरविन्द-अन्दर ते कढै अलि-छौना कैधौं मानिक ते मानहु मरीचि मरकत की ॥

कालिकास्तव।

ठाढ़ी विकराल मुण्ड-माल गर सोहै लाल भाल पै सिंदूर जीभ ज्वाला फरकत की । ल-लकि रही है लिये कर में कृपान दुष्टदल हनिवे को जाने भक्त हरकत की ॥ वीरन की सिद्धि

रिझि धीरज धरैयन की भगत धुरीनन को पुंज वरकत को। कालिका के अङ्ग की प्रभा यों लाल सारी कढ़ै मानिक ते मानहु मरीचि मरकत * की ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

सकल सिँगार साजि मिलन सहेट गई डारि डर लाज गृहकाज हरकत को। बेनीद्विज बालम बिलोक्यो ना तहां पै जाय गिरी भहराय तुल्य काटे दरखत को ॥ सोचन सों समकै सकोचन सकै ना बोलि रोयरोय आँखैं भई तहत रकत की। आँसुन के संग मिलि काज्जल कतार कढ़ी मानिक ते मानहु मरीचि मरकत को ॥

आये हो कहां ते प्रात विह्वल बिहारीलाल आँखैं ह्वै रही है लाल बूड़ी ज्यों रकत की। जावक ललाट सीस अटपट पाग सोहै खबर

* मरकत प्रायः पन्ने को कहते हैं किन्तु प्राचीन कवियों ने [जैसे श्री सूरदास जी, श्री गुसांई तुलसीदास जी, श्री बलभद्र जी इत्यादि ने भी इसे नीलमणि कहा है।

नहीं है लर पेच लरकत की॥ बेनीद्विज राजत (
कपोलन पै पीक लीक मोहनी मनोजवारी बातें (
आसकत की। अंजन की रेख स्याम झलक अ-
धर बीच मानिक तें मानहु मरीचि मरकत की॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी बनारस।

मित्र के प्रकास मिलिबे को चली मित्र पास धरि उर आस बायें नैन फरकत को। झमकि चले ते लफि लफि जाति लोनी लङ्क घायल करति अदा छरा छरकत की॥ कदम कदम पै हँसति हरिशङ्कर जू रोम रोम सोखी भरी नोखे हरकत की। मिसी मल्यो ओठन सो ऐसी छवि छाई कढी मानिक ते मानहु मरीचि मरकत की॥

छन्नलाल रसिक नवीन—काशी

चन्द ते दुचन्दमुख चन्द्र की छटा हैं चारु बतियां सुधा सी खासी मोहिनी जगत की। रसिकनवीन है प्रवीन सब भाँतिन सों पाई बादशाही सुघराई के तखत की॥ लालन चली

तो मैं लखाऊँ चलि वाकी छवि सारी सजि बैठी है किनारी के टँकत की। झलक मिसी की आनि अधर लगी है इमि मानिक ते मानहु मरीचि मरकत की॥

छलचन्द जी वल्लभीय—काशी।

सोहैं श्रीव्रजेन्दुसिर चन्द्रिका मयूरपिच्छ अ-मृता कला हैं मानो दानि अभिमत की। ल-सति ललाट पै ललित ऊर्ध्व पुंड जोति मानो रिद्धि सिद्धि रेख सकल जगत की॥ भौंह वर बांकी ढांकी सुखमा त्रिलोकन की मानो कल्प वेलि श्री सिँगार के भगत की। अधरन बीच लसै बाँसुरी अनूप कढ़ै मानिक ते मानहु म-रीचि मरकत की॥

पण्डित अम्बाशङ्कर जी काशी।

भीर तें अभीरन के आगे जदुवीर धीर भारैं पिचकारी रँगवारी जरकत की। कीरतिकिशोरी टोरी गोरिन मौं न्यारी होइ मारी मूठ भारी लै अबीर बरकत की॥ संकर सुकवि उतैं जानो

की । मर्कत ते मानो चारु मानिक मरीचि फै-
ली मानिक तैं मानहु मरीचि मरकत की ॥

तरनि तनूजा-तीर आजु चलि देखो लाल बाल लता कुंज में बिराजै बरकत की । भनि अवधेश वेश भूषन सुहावै अंग सोभा त्यों बनी है चारु पट फरकत की ॥ लाल रंग रंजित सु-झीन कंचुकी में फबै नीलिमा उरोज अग्रभाग थरकत की । मदन महीश मध्य मन्दिर महान मंजु मानिक ते मानहु मरीचि मरकत की ॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी ।

बैठे स्याम राधे संग मन मैं उमंग भरे का-रत कलोल लोल मैन बरकत की। भई बरजोरी तेहि ठौरौ ना कही री जाय गिरिगो किरीट भाल बेंदी सरकत की ॥ केलि बिपरीत करैं दम्पति मरोरि कर छाड़ैं ना केदार आँगुरीहू तरकत की । समर बढ़ी है कैधौं अतन अखारे आजु मानिक ते मानहु मरीचि मरकत की ॥

बाबू जगन्नाथप्रसाद जी बी॰ ए॰ [रत्नाकर कवि] काशी।

जब तें रची है रूप रावरे रसिक लाल तब ते बनी है बाल बात बरकत की। कहै रतनाकर रही है रुचि नैनन में मीन मुख मंजुल मुकुत ढरकत की॥ आठो जाम वाम मग जोहत मृगी सी जब चौंकै पाय आहट तिनूका खरकत की। अनुराग रंजित अवाज सौं काढ़त श्याम मानिक ते मानहु॰ ॥

श्रीकिशोरीलालजी गोस्वामी धारा।

सुन्दर सँवारी चारु चन्द्रिका उजारी जहाँ सोहै चित्रसारी प्रानप्यारी प्रानपति की। भनत किसोरी चौंकि चकित चितौति चित चंचल चलत चाल हंसनि के गत की॥ औचकि उचकि मनभावन मनावन कौं पावन परसि सीस सादर नमित की। तरुन अरुन पग बिम्बित मुकुटछवि मानिकतै मानहु मरीचि सरकत की॥

कोपागंजनिवासी मारकंडेलाल उपनाम चिरजीव कवि,

कोऊ दैहै उत्तर बिसारी ते लिख्यो ना कछू

सँयोग धूपछाँह सोभा सकत बखान कौन आ-
तमा जगत की । कुच औ अधर तें उजास यों
कढ़े है सदा मानिक तें मानहु मरीचि मर-
कत की ॥

बाबू अयोध्यासिंह—मधुबन जिला आजमगढ ।

पूरन मयङ्क ते स्रवत मधु बिन्दु की सी सोभा
भई मुख ते प्रसेद ढरकत की । गोल आरसी पै
नागछौना सी अनोखी छबि लसी है कपोलन
पै लटैं लरकत की ॥ बिपरीत रचे हरि औध
लाल चोली माहिँ दुति है नकल कुचकोर फ-
रकत की । मिलि मिलि मोहे लेत मानस म-
नोजहू को मानिकते मानहु मरीचि मरकतकी॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगीलाभाई ।

ओपत अरुन ओठ राधिका-ललाम तेरे सौ-
तिन के चित्त माहिँ खूब हरकत की । बामें द-
मकत दन्त वर्हिका श्लित स्याम सुखमा समूह
सोय वेश बरकत की ॥ गोविँद सुकवि ताकी
उपमा अपूर्व लसे आइ अभिराम मेरे चित्त स-

रकत की। मंगल तें मन्द कढ़े मंजुल मयूख केधों मानिक तें मानहु मरीचि मरकत को ॥

श्रीचन्द्रकला बाई - बूँदी।

सारी रैन आन थान जागि के गुपाललाल नाना भाँति कीनी कामकला कोक मन की। जावक लिलार लाय अंजन अधर दाय पलकन पीक पाय छाती भरी छत की ॥ चन्दकला प्रातही पधारि मन भावती के झाँके लाल नैन धारि दीठि क्षोभ रत की। ताहि देखि बोली अलि देखहु कढ़ी है यह मानिक ते मानहु मरीचि मरकत की ॥

बाईसवां अधिवेशन।

मिती पूस वदी १ सम्वत् १९५१

सरोज सकुचाने से।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु।

सुन्दर सँवारे बार सोने की जु चौकी बैठ अतर फुलेल मले सोंधे खूब साने से। कहै रस-

पं० छन्नूलाल रसिक नवीन—काशी

अरुन उदै में आजु सर पै नहान आई नागर नवेली एक सुघर जमाने से । रसिक नवीन मुखचन्द ते दुचन्द चारु ल्याई है लोनाई लूटि विधि के खजाने से ॥ चौर धरि नीर में धसी है बाल खोले बार बास हेत भँवर भिराने हैं लोभाने से । लाल चलि देखो तो कमाल वा उरोजन कों जाहि लखि ह्वै रहे सरोज सकुचानेसे॥

मेरे मुखचन्द को बिलोकतै चकोर जोर इकटक लाये खरे रहत लोभाने से । सहज सरीर की सुवास आस पास पाय अलि मिड़राने फिरें विकल दिवाने से ॥ रसिकनवीन गति देखि देखि हंस मेरी चाल को बिसारि बैठे सर पै लजाने से । नैनन निहारि मृग हारि कै पराने वन पक परे रहत सरोज सकुचाने से ॥

कवि पं० गोपीनाथ जी—काशी ।

गति देखि हंसन हिये में हार मान लीन्ही कटि देखि सेवैं सिंह कानन लुकाने से । बैन

सुनि कोकिल के मन में मलोले उठैं नैन देखि खंजन उड़ाने खिसियाने से ॥ गोपीनाथ अंग की गोराई छवि आव आगे लाल लखि परत गुलाब कुम्हिलाने से । राधेमुखचन्द को विलोकत बिहारीलाल लागत समस्त है सरोज० ॥

छबीले कवि बनारस।

वचन बनाय खाति सौंहैं नित झूठी झूठी बादहीं मे जात रात दिवस विताने से । सुकवि छबीले होस हीय मैं हमारे यहै रहत हमेस बैन कहत सकाने से ॥ कत करि मान लेत जानत अजान होति मो चित चकोर मुखचन्द पै लोभाने से । क्यों न प्रानप्यारी कर परसन देति का उरोज रोज रहत सरोज० ॥

राति रतिरंग मैं जगी है काहुं काहु संग भोर उठि आवत बनी सी बरसाने से । सुकवि छबीले ना छपाये ते छपैगी कहा वचन प्रवीनता बखानति वहाने से ॥ कवन कलङ्क जग जानत कालानिध मै उपमा अनूप यहै सरस समाने से ।

कोर पै चकोर ह्वै दिवाने से ॥ बेनी द्विज बान पंचबान को गुमान गारि ल्याई है लुनाई लूटि विध के खजाने से । देखि देखि तेरी अँखियान की अजूबी बीर पंक जाय परत सरोज० ॥

प० केदारनाथ जी बनारस ।

प्रोषित वियोगिनि को पीड़ित करनवारो सुखद सँजोगिनि को हिय हरखाने से । असुधा बनस्पति के जीवन जनक आछे कृषी सुखकारी अंकुरादि दरसाने से ॥ कहत केदार मनमोदक चकोरन के चोरन अमोद कोक कोको बिल- गाने से । बिकसै कुमोदिनी प्रकासित निसाकार के मुरझात मुकुल सरोज० ॥

जाइये वहाँही चलि आये जहँ भोरे होत छपिहै न मोसों आजु बात के बनाने से । झूठीर खात काहे सौहैं तूं हमारी सौंह कज्जल की रेखहू कपोल दरसाने से ॥ मीसी केर कालिमा छई है अधरान आछी पलकैं तमोल पीक लीकैं रंग साने से । रैन अँग आरस केदार जू भरो है जगे मूंदे जात नैन है सरोज० ॥

व्रजचन्द को वकभोय—काशी।

एहो आजु धन्य अनजाने से अयाने ऐसे चकित जकाने विथकाने से बिकाने से। अति अरसाने से ठिकाने ना परत पग हिय हरषाने से सरस रस साने से॥ रसिक सयाने व्रजचन्द ढँग ठाने ऐसे बात ना बखाने कछु अतिहो म-काने से। मुख कुंभिलाने से अधर पियराने ऐसे लाल दोऊ लोचन सरोज० ॥

सुखद सुजान व्रजचन्द मुखचन्द देखि च हकैं चकोर जन अति हरषाने से। अमित उ-मंग होत आनँद उदधि काहिँ चौंहैं दरसात कूर कोक बिलखाने से॥ रंचहू वियोग तम कतहूं दिखात नाहिँ रहैं सुद्ध जीव तरु गुल्म हरियाने से। विषयी औ स्वारथी कुटिल कुवि-चारी अघी पदरज बिमुखी सरोज० ॥

साची चन्दवदनी दिखाऊँ व्रजचन्द तुमैं दे-खतहि ह्वैहौ लाल अति तरसाने से। दिनहूं में चहकैं चकोर संग छोड़ैं नाहिँ निरखि कुरग गन

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिद्दौर।

तीसरे पहर लों मचाई रसबस बाम राते विपरीत रति मैन मद साने से। होत परभात उठि बैठी परजङ्क पर अङ्ग अङ्ग ऊपर तरङ्ग अ-रसाने सें॥ कंज कर उलटि सवारि कच जूरो कसै निरखि तमासे मन ह्वै रहो लुभाने से। मेरे जान तम है डराय भयो अङ्ग मोरि प्रफु-लित देखि कै सरोज० ॥

चलि ब्रजचन्द आप कौतुक बिलोकि लीजे सुखमा समूह लखि जग भो बिकाने से। सौ-रभित वारिज बदन पर आठो जाम भौरन की भीर त्यों फिरत मड़राने से॥ चहकि चकोर चोच लावत है आनन पै बरही बिलोकि बेनी होत है लुभाने से। वाके ढिग हौंसे रहो प्रफु-लित देखिवे को देखतो हमेस हौं सरोज० ॥

बाबू शिवपालसिंह—भिनगा॥

चकि २ चकि जात चम्प तकि २ तन सकि सकि सकि जात मृग दृग ताने से। थकि थकि

थकि जात बीजुरी कटाछन सों जकि २ होय जात घूंघट कढ़ाने से ॥ छकि २ हंस जात चाल लखि शिव कवि पकि २ दाड़िम द्रवत दन्त-दाने से । ऐसी वृषभाननन्दिनी ह्वै लाड़ै तेरे हित मुख लखि दीमति मरो० ॥

काहे पूर्ण निशिकर आजही भयो है मन्द काहे है लखात मृग मन में सकाने से । काहे चम्प सुमन परन जात पीरे २ काहे ये गयन्द फिरै वन में बिकाने से ॥ पंचम तज्यो है काहे कोकिलन गन शिवपाल भनि काहे जात कीर ह्व थगाने से । आवती नितहि पर आज लौं लख्यौ हैं नाहि काहे सखि दीसत सरोज० ॥

कोपागंजनिवासी मारकंडेलाल उपनाम चिरजीव कवि,

नर सों दिखाये छवि नील न्हाय आय हूते न्यामत नवेलिन के ही में सुख साने से । परसों परेखन से उड़िगे छिनक आय ठौक दो पहर में सुकाह्न अनजाने से ॥ कवि चिरजीव ये जू कीरति लता के पुंज काहे ना बतावो

कहा होत ये दुराने से। साँझ के समै तो आये पंकज खिले से लाल आज आये भोर क्यौं स-रोज सकुचाने से॥

छूटति न टेव जाकी जौन सी परी है आनि कोटिन उपाय गुरुजन कि बुझाने से। हमरी सुनै है कौन तूती सी नगारखाने और को ब-खाने बानि रावरी असाने मे॥ कवि चिरजीव सौंह लाखन करी है तौहू बाज नहि आये काहू गैल उरझाने से। रोज रोज आय कै दिखावत हनोज हमैं चोजभरे प्यारे ये सरोज० ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोबिन्दगोलाभाई।

कीरतिकुमारी आज लखि लाल लोचन तें उपमा अनूप ताकी जाय न बखाने से। ऐसी अभिराम आभा ओपे प्रति अगन की जाकों लखि रंभादिक रहत लजाने से॥ गोविंद सु कवि ताके दन्तन की द्युति देख नित्यही नक्षत्र रहें दिन मे दुराने से। नैन कों निरखि तैसें मानस तें मान तजि रहे नित साँझ मे सरोज०

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी।

आये उठि प्रातहो जँभात अँगरात गात सारी रात सौति पैं बिताई अरसाने से। कछु की बनाइ कछु भाषत पियारी पाहिँ कढ़ न सुसील एक बचन ठिकाने से॥ लाल को हवाल देखि बाल कछु बोलो नाहिँ साधि चुप ठाढ़ी रही जानि अनजाने से। चन्द के समान मुख चन्द ललना के पेखि नैन भये लाल के सरोज०॥

प्यारी बलिहारी जाउँ तेरो धनि भाग क्यों न रहैं रूप माधुरी पैं लाल ललचाने से। हंस तरसाने रहैं देखि कै तिहारी गति गजऊ लखाते अति अन्तहो लजाने से॥ तेरे कुच देखि कै महेस काम दुन्दुभी त्यों श्रीफल निहारि परैं अति सरमाने से। चन्द भये मन्द मुख तेरो सुखकंद देखि नैनन निहारि भे सरोज० ॥

गंधौली ज़िला सीतापुरनिवासी बाबू युगुलकिशोर जी उपनाम ब्रजराज।

तेरे कहे आई हौं यहां लौं सुनु मेरी बीर

देखतहीं मेरे ये सहमि सरमाने से। खंज मृग मीन कहूं परत न पेखि अलि दबकि गयन्दगन बिपिन पराने से॥ येरी ब्रजराजहूं लिखत तसबीर रहे चकित निहारि हारि धीरज हेराने से। भेद न बतावति रहति हँसि काहे सखि मोहि लखि सकल सरोज० ॥

रजनी बिताय कहूं आये ब्रजराज तुम्हें पूछनि सकल अँग काहे कुम्हिलाने से। कमल नयन के कुमुद नैन भाखो मोसों साँचो कहो आजु लखि परत सकाने से॥ निसि मे मुदत वे मुदत दिनही में भेद दीजिये बताय कैधौं मोही सों रिसाने से। बल करि खोलौ तऊ खुलत न खोलि कहूं भोर भये रहत सरोज० ॥

बाबू अयोध्यासिंह—मधुबन जिला आजमगढ़।

श्रीफल कहे ते सान्ति होति सपनेहूं नाहिँ तोष होत हिय में न कन्दुक बखाने से। कंचन कलस की कथान को उठावे कौन रति के सिँधोरा कहे रहत लजाने से॥ हरि-औध जामें

परि मत्त मन भृङ्ग मेरो कढत न टीखे अजौं कौनेहूं वहाने से। सोभा सने मौंहैं सोहैं ससि लौं सुआनन के सरस उरोज ए सरोज० ॥

मेरे भाग जागतही जामिनी वितैबी हूतो कौन काज आप हैं नखात अलसाने से। प्यारी पीक लीकहिँ अनूठे अधरान छोरि कहा लाभ कलित कपोल पे लगाने से ॥ हरि-ओध को सौं साँची कहो छल छन्द छोरो भोरही कहां हो आज फिरत भुलाने से। रावरे विसाल दृग कंज लाल ! ह्वै रहे हैं सूरज उगेहूं क्यों स० ॥

श्रीकिशोरीलालजी गोस्वामी द्वारा।

मोहित मराल चाल देखत छबीली हाल वानी सुनि कोकिल लजाने अनखाने से। सुधा को सुहाग मुसुकात हरिलीनो प्यारी जीती सुन्दराई सुबरन मनसाने से ॥ कटि के कराह हरि कन्दर लुकान्यो त्योंहि जलमे समानी मीन लोचन लजाने से । तेरो ये किशोरि अकलङ्क मुखचन्द चितै चन्द भये मन्द औ सरो० ॥

कनफूल पत्ता रूप के उँजेरे मैं। कहै रससिंधु फेर कंचुकी जरी की चारु हीरा हार मोती चकाचौंध ज्यों घनेरे मैं॥ देख री तू बीजुरी सी बीजुरी सों डरे कहा चमके है बीजुरी त्यों स्याम घनघेरे मैं। घूंघट कियो है स्याम सारी को जु राधिका नै गरक गई०॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

कीरति-किशोरी गोरी मदनतरंग-रली मिली घनश्याम सों अनंग के टरेरे में। सघन नि-कुंज माहिँ बदनमयङ्क जाको हेरि कै हिरानो मनो चन्द घनघेरे में॥ आयो बलदाऊ उतै खोजत कन्हाई ताहि देखत सकानो अकुलानो फन्द फेरे में। दामिनी सी कामिनी यों का-मरी दुरानी बीर गरक गई है मनो बी०॥

कवि पं० गोपीनाथ जी काशी।

राति रसरग कै उमंग भरी आई बाल जेत अँगराई छाई आलस घनेरे मे। सीसहि नवाय कै लजाय आय सासु पास ठाढ़ी सकुचाय नैन

नीचे किये नेरे मे ॥ दूरही ते आवत तहां पे देखि गोपीनाथ बैठब परी है वीर लाज के ट-रेरे मे । ढाँपि स्याम पट में तमाम गात बैठी गोय गरक गई• ॥

बा० माधोदास जी - काशी ।

चित्रमई सारी नई दई है ववा ने आजु माँ-वरो बचाय परी पावस घनेरे मे । कारे कारे बादर ये उनये चहूंघा चारु परन लागी बूंदै चली आवै मेह नेरे मे ॥ मोदभरे माधव जू उ-चकि उछंग ले के लीनो है छपाय स्याम का-मरी के घेरे मे । हेरि हेरि हारे कवि उपमा न पाई और गरक गई० ॥

बाबू मन्नूलालजी—काशी ।

गई भौन तौन जहाँ सूरज न स्वावो जाय दमन की दमक दवी मौसी के फेरे मे । चन्द ते दुचन्द है प्रकास जासु आनन को मन्नूलाल सोऊ घिरयो घूंघट के घेरे मे ॥ हीरन को हार चारु धर्यो है उतार सवै वरत ना चिराग जाऊँ

वेरे मे। कैधौं ए नरेम भासमान आसमान बीच गरक गई० ॥

पं॰ मनमोहन कवि गिद्दौर।

दारिद दतारे मदवारे चले झूमि झूमि दौ-रवत यों रङ्ग निमि मावस के गेरे मे। भासै मन-मोहन ए गरब गरूर भरे फैले फिरैं ऐसेही ह-मारे पल टेरे मे ॥ आज महाराज रावणेश्वर-प्रसादसिंह दान कीरवान लै मधारत सवेरे मे। मारत गरे पै चलि पैठिगो करेजे बीच गरक गई० ॥

राजत नवेली अलबेली वृषभानु जी की छाई भली छवि ते सहेलिन घनेरे मे । चौकी पर चाँदनी सी फरस बिछाई हुती जमुना ते न्हाये आइ बैठत सवेरे मे ॥ सघन सँवारे सुकुमारि मुख ऊपर ज्यों बार को बगारती लै आरसी मु हेरे मे। भाषत बिचारि मनमोहन जू मेरे जान गरक गई० ॥

बाबू शिवपालसिंह—भिनगा।

मार्यौ है अनेक दल टार्यौ है प्रचण्ड वीर

फाख्यो है करीन कुम्भ एकही झरेरे मे। डाख्यौ है पछारि वरवीर नगमेल आये गाख्यौ है गुमान शत्रु नैन के तरेरे मे॥ छाख्यो जानि धाख्यौ टोप झिलम मऋादतखां आयो गज मत्त चढ़ि युद्ध के टरेरे मे झाख्यो है कृपान भगवन्त भूप शिव भनि गरक गई० ॥

कोपागंजनिवासी मारकंडेलाल उपनाम चिरञ्जीव कवि,

जाके अङ्ग ओप पै न कुन्दन जँचात नेकु जाके रङ्ग देखि चम्पा आवत न नेरे मे। जाके पट भूषन के दाप पै दिनेसहू की, महिमा रही है कछू मुरकि उँजेरे मे॥ कवि चिरञ्जीव कान्ह क्यों कर न पावैं ताहि, चोर मिहिचान के चहुँधा पानि घेरे मे। ऐसी दरसै है वाल कुंजन लता के बीच, गरक गई० ॥

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिद्धौर।

कञ्चन जटित परजङ्क पै विराजै वाम दीपत दिनेस लों फनूस के उजेरे मे। आये जो गुविन्द करि चञ्चल चितौन चित्त मानहुँ देखायो रति

सारी सों सरीर भली भाँति भली सोवति परी है खरी नींदही के फेरे मै ॥ हिय मे बिचारि ब्रजराज मन हारि रहे उपमा निहारि कहूं आवति न हेरे मै । फरक कछू न रह्यौ सरक उजेरे तें सु गरक गई० ॥

बाबू पयोध्यासिंह - मधुबन जिला आजमगढ़ ।

कान्ह जलकेलि जमुना मैं रचे कान्ह जू के करि जुवतीन की जमाति निज घेरे मैं । मोहन के अङ्ग सों छबीली राधिका की छूटि छूवंत बिलोक्यो रारि वा दिन सबेरे मै ॥ हरिओध ताकी एक अजब अनूठी आज उपमा बसी है ऐसी आनि उर मेरे मै । गोद सों गरबगारे वारिद हितू की गिरि गरक० ॥

श्रीकिशोरीलालजी गोस्वामी भारा ।

झाँकति झरोखि झुकि उझकि नवेली बाल लालन निरेखि चित चाह निरवेरे मै । फैलि फवि कुन्तल कपोलन परसि रहे उड़त निचोल नील मारुत घनेरे मै ॥ चारु चख चंचल मिले

ते चन्दमुखी चौंकि आनन अनूप फेर्यो लोचन तरेरे मै। दरसि गयो है तमतोम में अमन्द चन्द गरक गई० ॥

कैधौं सोनलता लपटानी है तमाल तरु चंपक की माल इन्दीवर के चँगेरे मै। कैधौं मिली कौमुदी कलङ्क सों सँकोच मोचि कैधौं रति काम सों लपटि नेह नेरे मै॥ भनत किसोरी मेघमाला ज्यों कलाधर मों बन्हि की सिखा धौं धूम धारनि के घेरे मै। श्यामघन तन सों मिली है ब्रजबाल ऐसी गरकि गई० ॥

तेईसवां अधिवेशन।

मिती पूस सुदी १ सम्वत् १९५१

मालमुकतान की।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज

उपनाम रससिंधु।

कुञ्जन में आये स्याम राधिकाजी संग लिये झुण्डन की झुण्ड सखी सुन्दर सुजान की। कहै

हार हारी जासों दुति भान की ॥ जो पै व्रज-राज जू न आये तौ सकोच कहा यामै तौ कछूक बात है न सकुचान की । कुचन पै नख चन्दहार से पहिरि इतै आई कितै खोय अरी माल मु० ॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा ।

सब ब्रजबाल हैं निहाल लख लाल चाल डाल दृगजाल सुनै बाँसुरी की तान की । भाल मे बिसाल बिन्द लोचन अरबिन्द नैन राजै छबि मानहु मनोज गलतान की ॥ राधिकाप्रसाद श्रुतिकुण्डल रसाल हाल काछनी सुभग कटि पीतपटतान की । मन कों चुरावै बीर रुचि उपजावै धीर लोचन सिरात लखि माल० ॥

ला० मारकण्डेलाल उपनाम चिरजीवी कवि - कोयागंज ।

पग मैं बिराजै पायजेब जाके पैजवारी कटि मैं सु मेखला सँवारी रतनान की । बाँह मैं बि-राजै जाके बाजूबन्द थानक सो कङ्कन कलाई मैं पसारे प्रभा भान की ॥ कवि चिरजीव ऐसी

राधिका मनावै कौन जाकै मान कीन्हे कान्ह भूलहू न मान की। सीस पै विराजै जाके च-न्द्रिका चमकवारी गरे मैं विराजै जाके माल०
कटि मैं विराजै जाके पीतपट पेजवारो बाँह मैं विजैठो बेस बनक महान को। कान मैं वि-राजै जाके कुण्डल कनकवारो जाको देखि लाजै दुति सिगरे जहान की॥ कवि चिरजीव ऐसे कान्ह सों मिलै ना कौन जापै नट्ठू ह्वै रही किसोरी वृषभान की। सीस पै विराजै जाके मोर को मकुट आज गरे मैं विराजै मंजु मा०॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलाल जी गयावाल।

केलि करि यामिनी बिताई कामिनी ने जब बिदा ह्वै चलन लगी भये ते बिहान की। कहै गिरधारीलाल सहित सनेहन को मधुरी सु बैन बोली मन्द मुसुकान की। ए जू प्रान-प्यारे यादगारी के लिये मै कहौं दीजिये अँगूठी एक आपनी चिन्हान की। अरु दीजै लाल एक ज़र की रुमाल एक रेसमी सुसाल एक माल०॥

छिये मे तन फरका करक कौन साँची कहु छाड़ि दे री बानि जो सयान की । छूटि गई बेनी कहा लूटि गई कुंजन मैं टूटि गई कैसि उर माल म० ॥

पं० लक्ष्मीनारायण जी – अयोध्या ।

सारी रैनि केलि कला कौतुक मयङ्कमुखी गति मे गयन्द गरबीली गुन ज्ञान की । मन्द प्रभा दीपक बिलोकि चन्द छीन भई मन मै मलीन करी चातुरी प्रमान की ॥ भरि भरि अङ्क लेति चाव सों मयङ्कमुखी करि करि बातें कमलापति सयान की । दर परदान कछू व्याजही ते दीन्हे छोरि धरति उतारि बाल माल०

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी ।

छाडि घर कारबार कौन जाय कासी बसे मुनीजन ढूंढ़ै लहै शिक्षा भक्ति ज्ञान की । सेवै विश्वनाथ एक सष्टि कै अनेक बिया प्रात होत खावै चित चिन्ता असनान की ॥ बैठि मनिकनिका पै मनिका घुमावे अरु ध्यान में समावे

धुआँ मरघट मसान की । जौपै घरहौ में मिलैं एक साथ दोय संभु सकल सुपास पास मान०॥

कैसी भलि सोभा लाल भाल में महावर की कैसी भलि सोभा गोल गाल पीकपान की। कैसौ भलि सोभा यह केस बिखराने सीस कैसी भलि सोभा यह पलकैं भपान की ॥ कैसी भलि सोभा यह लाल लाल लोयन की कैसी भलि सोभा बात झूठ के बखान की । मेरो मन मोहे लेत टीकुली सटे पट औ दाग ये विसाल उर माल मु० ॥

श्री प० बलदेव कवि चिलकिछा जौनपुर ।

प्रेमवस जादूभरे नैनवां नसीले हंसि काहत कटाचन सौं मैं जो अनुमान की । कीन्हो मन काम बलदेव द्विज ब्रजराज मैन के मरोर मैं रही ना सुधि मान की ॥ छूटी लटैं सिथिल वचन रद छद छवि गलित कपोलन में पीक लीक पान की । लाल: के गरे की गड़ी वाला गोरे गातन मे श्याला रंग लाई लीक माला मु० ॥

झूमत चहूघा दल धीरन के काटिबे को कौ-
रति करत चोपि चंचला कृपान को। फेरि गि
रधारी आय अबला बचाओ बेगि चलत अचूक
लागी चोटैं पंचबान को ॥ द्विज बलदेव देखो
स्याम ले बलाहक नव काँपति लसत प्रभा सो
भरि भान को। बिरही बधन हेत घेरि बहरान
लागे डारे हैं गले में मनो माल० ॥

पं० सीताराम उपाध्याय सीतापुर।

ल्याई केलिमन्दिर भोराई भोरी भामिनी
को छल सो बताइ कै तमासो सखियान को।
साटन के सुरुख सजाये सेज फूलन सों तापै
धर्यो धाइ भुजा जात्रक जपान को॥ आइ करि
उछरि तहाँई ऐंठि बैठि गई निकट निहारि नैन
मन्द मुसुकान को। छरि गई कामिनी छलावा
सो जकरि गई भरि गई सेज टूटे माल० ॥

श्रीचन्द्रकला बाई- बूँदी

राति कहीं रमि कै प्रभात प्रानप्यारी पास
आये घनश्याम स्यामसारी धारि मान को। अ-

धर अनूप माहिँ काजर की रेख धारि लाल २ लोयन पै लाली पीक पान की ॥ चन्दकला हिकल कलाधर अनेक धरे लखि उर गाड़ बोली बेटी वृषभान की । इन्द्रजाल डाली गल वाली कौन हाल आज अगुन रसाल लाल माल० ॥

प्यारेव्रजचंद पै उज्यारी चलीजाति है ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु ।

कालिंदीकूलन पर वाँसुरी बजावै स्याम सुन ब्रजवाल सभी दौरी वहरात है । कहै रससिन्धु फेर झुण्डन की झुण्ड सखी वीच मैं जु राधिका की मन्द मुसुकात है ॥ जुगनू सी दीपक सी तारा फुलझरी जैसी दीपत मसाल की सी भावत दिखात है । छूटे महताव किधौं चंचला सिताव वृन्दु प्यारे ब्रजराज पै उ० ॥

सारी है जरीकी सेत कारचोवी कामदार हीरन के हार भारी मोती चमकात है । कहै

परे यों प्रतिबिम्ब ता बिचित्र बलि कौतुक मखानत बिकाति है। कबौं ब्रजचन्द चन्द्रिका पै चल्यो जात कबौं प्यारे ब्रज० ॥

पान करिबे को रस सरस प्रमोद पुंज भौंरन की कंज पै कतारी चली जाति है। सुकबि छबीले उठै मदन तरंग अंग मन ते सुलाज की सवारी चली जाति है ॥ अब अवलोकि लै हठीली ठकुराइन अनूप यह उपमा हमारी चली जाति है। जैसे उटै अरुन अँध्यारी चली जाति पेखि प्यारे ब्रज० ॥

कवि पं० अम्बाशंकर जी—काशी।

पानिप सुपानीदार बारन के मुक्तालार पोहे बार जोहे मार चाबुक भपाति है। हीरन के हार हिये हरत हरेइ हियो चन्दन चुपेरो अङ्ग आभा उफनाति है ॥ कचुकी सुपेत कुच सारी हू सुपेत धरी सारी छिन प्यारी सुच्छ सारी अधराति है। संकर सुकवि जनु जोमभरी मिलिवे को प्यारे ब्रजचन्द पै उँ० ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

सेत सेत हीरन के भूषन सजे हैं अग मांग मुकतान सों सँवारो बहु भाँति है। सारी जरतारी को है झलक निराली तामें गहब गोराई दुति अति अधिकाति है ॥ चंचला सी चलत चमंकै चहुओरन मे बेनी द्विज छवि की छटा सी छहराति है। रूप की अन्हाई छीरनिधि सी उमण्डि जनु प्यारे ब्रजचन्द पै० ॥

जेबदार जेवर जवाहिर के साजे साज जाकी जोति उमरि अगारी चली जाति है। भारी जरतारी की सँवारी बर बानिक सो छोरन ते झरत किनारी चली जाति है ॥ चन्द जानि घेरे हैं चकोर आनि बेनी द्विज पाछे परी भौंर भीर भारी चली जाति है। छीरनिधि काढ़ी सी दवारी सी कि ऐसी कहाँ प्यारे ब्रजचन्द० ॥

बैठी काहू ठनगन को ठाने ठकुराइन हौ हठि ये हठीली तेरी मोहि ना सोहाति है। बेनी द्विज बर्बस किये ते मान ह्वैहै हानि याही जिय

किला दुखारी ह्वै उड़ाति है॥ झहत बनत ना केदार गोपिका को पौर नेह नीर सींचे बिनु बारी मुरझाति है। बटिया निहारि भई अँखिया धुँधारी ऊधो प्यारे व्रज० ॥

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिद्दौर।

धारे अङ्ग जेवर जड़ाऊदार हीरन के सेत पट अङ्गन ढको सो दरसाति है। माल उर मोतिआ नवेली अलवेली धरे पीतम को ध्यान हिय भीतरै सुहाति है॥ पून्यो निसा माँझ चली सजि कै मिलन कार्ज पग पग ऊपर मे ठठकि लजाति है। मेरे जान आली मैन लाज के हवाले परी प्यारे व्रजचन्द पै० ॥

पं० सीताराम उपाध्याय पिलकिछा जौनपुर।

सारी जरतारी दर-दामन किनारीदार साजै अंग अंगन बनाय बहु भाँति है। रचि २ भूषण सँवारि नखसिख सबै जगमगै जटित जवाहिर की कांति है॥ केसरि को अंगराग कीन्हे सबै गातन मे वातन मे झला झलकति दरसाति है।

सीताराम दूनी दामिनी सों दमकति जिमि प्यारे ब्रजचन्द पै उँज्यारी चली० ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

मन्द मुसुकाति उमगाति हरखाति हिये देखि जिन लेय कोऊ मन मे सकाति है। पैन्हि पट भूषण कों अंगन सजाय प्यारी पान की मसालेदार बीरी मुख खाति है॥ संग लै सखीन कों हँसीन कुंजगैल लखो गोरे तन ओप चहुंओर छितराति है। अति हुलसाति बतराति भाँति भाँति बात प्यारे ब्रजचन्द० ॥

आई यदि खेलन कों लोचन-मिचौनी खेल खेल पर गोल राखे जियरा डराति है। जब २ रही है तू प्यारी संग खेल माहिँ तब २ हार भई ऐसहि सुनाति है ॥ तेरे यह गोरे गात रात ओप दूनो कढ़ै कैतेहु छपायेहू न नेकहु छपाति है। सघन निकुंज घनघोर तमहू को फारि प्यारे ब्रजचन्द पै० ॥

श्री कमलापति जी मयोध्या।

धारी सेतसारी प्यारी मोतिन किनारीवारी हीरन ते जटित विभूषन विभासि है। सजि गुन गौरव गयन्द गरवीली भरी मदन उमंग संग कोऊ ना लखासि है॥ कहै कमलापति पिछानी ना परति ऐसी सौरभ मिलित चन्द्रिका ते सरसासि है। साथ में सहायक मलिन्द मद-माते लीन्हे प्यारे ब्रजचन्द पै०॥

पं० बलदेव कवि सीतापुर।

धारे सेत वसन हसन में दसन दुति मन हरि फसन को कीन्हो मनो वात है। गूथे माल मुक्त ते लुरत द्विज बलदेव गौरव गवन सों गयन्दगति मात है॥ सौरभित सुमन के हारन को सौरभ सों भौंर के कुलान ह्वा.त कम्पित यों गात है। जगमग जोति जागे उज्जल जवाहिर को प्यारे ब्रजचन्द पै०॥

कैधों स्यामघन मैं लसत थिर दामिनी सी कैधों हेमलतिका तमाल सत गात है। कैधों

कृष्ण कंज पे चढ़ी है माल चंपक की कैधों नीलमणि मे कनक कृत पाँत है ॥ सोनजुही अतिसी कुसुम माल बलदेव बाग पंचवान की विचारो वर बात है । न्यारी होत अंग सों न प्यारी की सुछवि कैधों प्यारे० ॥

गंधौली ज़िला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जी उपनाम व्रजराज ।

फेरि रहि जैहै अजू एकही गुनों सों अवै दूगुनी रही है भरि चारी ओर काँति है। चन्द-मुख चन्द ते सुहोड सो परी है खरी आवति विलोकि ढिगही सों भली भाँति है ॥ जो मैं पछितैहौ ऐसो औसर न पैहौ हाल चलि अव-लोकौ यह समयो सिराति है। प्यारी तौ न जैहै कहूं इतही रहैगी लखौ प्यारे व्रज० ॥

कतहूं न दीसत प्रकाश दस दिसन मे आय तम तोम जाय छाय भली भाँति है । अंगन गुराईहुं न राई रहि जाय कहूं नैनन कुहू की निसि ऐसी दरमाति है ॥ विरहबिथा की कथा

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगोलाभाई।

काय में लगाय लोने सुन्दर सिताभ पुनि बार में बिसद जुही पुष्पही की पाँति है। रूप्य के ललाम धरे आभरन अंगन में मोतिन की माल गरे बिमल बिभाति है॥ गोविँद सुकवि ऐसें साज सज चाँदनी में मोहन मिलन चलि राधा अधराति है। आभा उन अंगन की फैल के फावत मनो प्यारे ब्रजचन्द०॥

चौबीसवां अधिवेशन।

मिती माघ बदी १ सम्वत् १९५१

फुलवारी है बसन्त की।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु।

बेला औ चमेली जुही मोसरी गुलाब कुन्द चम्पाऊ सुपारी बाँस ताडऊ सजन की। कहै रससिंधु फेर केला अमरूद सेव केवड़ा अनार लीजी देखी एक तन्त की॥ बैठे तहाँ राधा स्याम दोऊ अनुराग-भरे पीत पोखराज और

सोभा सरसन्त की। आम कचनार टेसू सरसो बसन्त फूल लाल गुललाला फुलवारी है व०॥

सारी है बसन्ती रंग चम्पक सौ अङ्ग चारु करत सिँगार वाट देखत है कन्त की। कहै रससिधु गरे पीत-पोखराज हार माला ह्न बसन्त फूल धरे इकतन्त की॥ एतै बीच आये स्याम पेख के लुभाये नैन मैनभरे घूमैं दोऊ बात है इकन्त की। आखैं सेत सेवती सी डोरे है गुलाला लाल अतसी सी कीकी फुलवारी है०॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

कोकिल की कूक विन कोयल सुनौगे लाल होहुगे निहाल देखि वैठक इकन्त की। विम्ब मे अनारदाने लखि कै प्रसन्न ह्वैहो लोट जैहो लता देखि मदन महन्त की॥ इक अरविन्द मे विराजैं जुग वारिज विलोकितै विकैहो छवि भौंर रसवन्त की। चलौ बलवीर तुमैं कौतुक दिखाऊं कैसी सुन्दर सुधारी फुलवारी है०॥

मे अरुन कीधौं लूका लौं लगे है वायू सीतल अनन्त की। बरि जरि जैहै बाल लाल बिरहागिन ते उत मति जारी फुलवारी है ब० ॥

पं० केदारनाथ जी बनारस।

आयो ऋतुराज महराज सैन साजि आछे कोकिल कुहूकनि नकीब बिरतन्त की। ठौर २ भुण्ड २ गुंजरत भौंर भीर सुभट केदारनाथ कलरौ अनन्त को॥ दाड़िम गुलाबन में आब अधिकाई पुंज पातन में लालिमा अपार सरसन्त को। पीत रंग सुमन सुहात सरसोन केर उपमा अनूप फुलवारी है वसन्त को ॥

ऐसो कौन देव जासु मन ना लुभानो देखि पारासर नारदादि जोगह्न नसन्त को। बानी पति गौरव गँभीर जाको धाता कहैं ज्ञान सिंधु वासी कइलास उमाकन्त को॥ च्यवन विहाय तप भोग भरमाइ रहे स्याम व्रजवास संग कौतुक अनन्त को। मदन मलिन्द अरविन्द अनुराग वाग वारी काल क्यारी फुल० ॥

बा० माधोदास जी – काशी।

मौजदार मालती के महल महान मध्य मौलसिरी मालन की झालरैं झिलन्त की। मण्डली मरालन की मत्त भई लोलैं तहाँ मधुपन श्रेनी सुखसैनी है सिमन्त की॥ माधव के मास माह माधुरी लता मे वैठि मन्द मन्द मालकोस गावैं रति कन्त की। मिलि के मयङ्कमुखी माधव जू मौज करैं क्यारिन मे फूली फुलवारी० ॥

आवतहीं दूर करै ताप सबै तरुनी को हीय मे हजार हौस बाढ़ै रति कन्त की। रूप-भरी रस-भरी सौरभ समूह भरी अङ्गन मे रङ्ग २ सोभा सरसन्त की॥ माधव की माधुरी वखानू कहा अरी वीर भौर है अलीगन की सुखमा लसन्त की। ऐसो तो हमारे जान कन्तहो लसन्त आली नहि नहि प्यारी फुलवारी है० ॥

कवि पं० गोपीनाथ जी काशी।

सूरजमुखी सी जुही जोहै व्रजचन्दमुख कुन्दकली दन्त दुति पाई है दिगन्त की। चम्पक-

वरन चारु कंजन से राजै नैन जाहिर है घेरे भौर अलि अनगन्त की ॥ गोपीनाथ श्रीफल से कठिन कठोर कुच-कंचुकी कसी है तापै अद्भुत लसन्त की । स्याम बाम भाग मे बिराजै प्रान-प्यारी इमि मेरी जान फूली फुल० ॥

पं० बचऊचौबे उपनाम रसीले कवि - काशी ।

कूकि कूकि कोलिया कसाइन कलेजो कोचैं दरद बिचारैं कछु काहू के न अन्त की । कहत रसीले भुँजि डारत मधुप पुंज गूँजि कै अवाई जानि मदन महन्त की ॥ तैसो डोलि त्रिबिधि समीर थहराये देत कैसे हम हाय धीर धारैं बिनु कन्त की । चेत कै चेताय दीजो ऊधो मन भावन सो अब ना सोहाति फुलवारी है० ॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी - बनारस ।

देह सोनजुही सी चकोर ऐसे नैन राजैं न जरि मदनबान सुखमा लसन्त की । मोरनी न-चत नथ नाक कीर मुख कंज तिल है मधुप फसे फसनि अनन्त की ॥ दोऊ कुच श्रीफल हैं

नाभी अथाह कूप सोंह हरिशङ्कर पै कहौं वात अन्त को। सुनिये विहारी जेती नारी ब्रजवारी तामे मेरी प्रानप्यारी फुलवारी है० ॥

घूंघट नमक सोई हय की ठमक जानो मोतियाकली सी सोभा लसै पाँति दन्त की। अंग राग भूरि जो पराग सो उड़त तासों पूरि नभ रही धूरि महक अनन्त की ॥ भनै हरिशङ्कर कढ़ी जो घर वाहर को तीनि भ्रम वाग सन्यो कदम चलन्त की। कैधौं स्याम प्यारी कैधौं रति की सवारी कैधौं छाई छवि भारी फुल० ॥

कवि प० अम्बाशंकर जी—काशी।

चंपक दुति देखि बुति जाति केतिको की दुति पल्लव ललाई नवपल्लव कसन्त की। द्विजन की पाँती कुन्द कुन्द करै कुन्दन को सारी छवि कुसुम कुसुंभ के खसन्त की ॥ कोकिल अलाप सों अलाप कोकिला को हरै हँमत भारे है जुही जूही के हसन्त की। सकार सुकवि कहौं कहत वनै ना कछू प्यारो कन्त कीधौं फुलवारी० ॥

काशीनिवासी ब्रजचन्द जी वल्लभीय।

ग्रीषम सी भामा औ कुमारिका की जगैं जोति स्यामा रविजा मैं द्युति पावस दुरन्त की। चन्द्रावली इन्दु लेख कांति सुभ सारद सी ललिता बिसाखा माहिँ सुखमा हिमन्त की॥ चंपक सी चंपलतिका की उँजियारी माहिँ छाई है अनूप छबि सिसिर सिमन्त की। कोटि कामरूप ब्रजचन्द जू के संग नित्य भानु की दुलारी फु०॥

अमल कमल सी प्रफुल्लित निहारि मीनमनकी बिचारि कै सवारी रतिकन्त की। मोहि माति सोखि ताड़ करिकै अचेत सबै सकल दिगन्तनि लौं विजय अनन्त की॥ मंजुल मिलिन्द मत्त मधुर मरन्द छाकि खंजन चकोर मृग सुखमा सुतन्त की। प्यारे ब्रजचन्द की पियारी वृषभानवारी अँखिया तिहारी फु०॥

त्रिविधि समीर वातसल्य सख्य दास्य भाव ललित लता हैं भक्ति भावुक अनन्त की। भौंरनि झपनि भौंर भौंरनि रसिक रीति कूक

कोकिला की ध्वनि कवित कहन्त की ॥ रति के सहित रतिकन्त की अनूप कौति प्रीति ब्रजचंद दोउ रसिक इकन्त की । बालकृष्णलालकृत कासी कविता की सभा रामकृष्ण जू की फुलवारी है वसन्त की ॥

श्री ठाः महेश्वरवक्षसिंह जी तालुकेदार—रामपुर मथुरा।

कूजि रहे कानन मे विपुल विहंग वर भौंर गुंजरत पाय सौरभ सुतन्त को । डोलै लगी लतिका लवंगन की लोनी लोनी त्रिविधि समीर साज सुखमा इकन्त की ॥ ऐसे मे मुदित महा मन मैं महेश्वर जू वाल अभिसार करै प्रीति भारी कन्त की । तजि मान प्यारी वनवारी सों मिलत क्यों न कैसी लखु फूली फुल० ॥

पंकज चरन चारु रम्भ खम्भ जानु युग लंक लचकीली मृगराजकटि तन्त की ।.उदर सरोवर सोहाय मान सौरभित ललित लता सो रोम राजिका लसन्त को ॥ प्रफुलित कुमुद से कुच है महेश्वर जू इन्दुमुख हरत अंध्यारी है दिगन्त

किला को माती निज तन्त की ॥ भौहनि क-
मान तान मान करि बैठी कहा देती गल बाँहो
कमलापति सुकन्त को । वारी बैसवारी कही
मान लै हमारी चलि देखिये तहाँ री फुल०॥

दासापुरनिवासी पं० बलदेव कवि सीतापुर।

कमल पै कंचन कदलि जुग जोखो सिंह
तापै सरि हिमलतिका से बिरमन्त की । ताकै
सिर सिखर युगल हिज बलदेव कम्बु पै रसाल
बिम्ब कुन्दिका लसन्त की ॥ ता अध सनाल
जलजात जुग जोंहियत क्वारीं प्यारी न्यारी ब-
नवारी हित तन्त की। चन्द मे कमल कीर धनु
अहि विद्यमान रति संतवारी फुल० ॥

कमलकली से कुंच सौरभ सनेह सने संकुल
सुमन सोभ सुखमा इकन्त कीं । पंकज से नैनं
बैनं कोकिला से बलदेव ऐन सुखदाई सैन मैन
सर तन्त को ॥ चन्द सम आनन वसन वेस चाँ-
दनी से सोनजुही गात कलीकुन्द दुति दन्त की।
क्वारी वैसही मे रूपवारी सब वारी हरि औंर
राधे वारी फुलवारी है० ॥

बाबू शिवपालसिंह - भिनगा।

दाड़िम रसाल चम्प श्रीफल जपा प्रसून लसत बसन्ती सारी छिय हुलसन्त की। नारँगी गुलाबकली कंज कदली सपत्र सोहत सिँगार बेलि पाली रति कन्त की॥ मूगफली पल्लव सुबिम्ब तिल फूल भलो सिव कवि भनत सुबात बिलसन्त की। मालिनी सुमनवारी कैधौं सुकुमारी नारी कैधौं मनहारी फुलवारी०॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी।

पीतपट साजे स्याम सारी पीत स्यामा सजी कहा कहौं सोभा प्यारी पीत सरसन्त की। पीत पट ग्वालन कौं गोपिन की पीत सारी पीत बिलसन्त सोभा दसहू दिगन्त की॥ पीत सेज पीत भौन पीत हार पीत द्वार दसैक की पीत सोभा पीत दरसन्त की। बेलि पीत द्रुम पीत पात पीत फूल पीत पीतमयी आजु फुल०॥

अन्त भो हिमन्त को अजौं ना घर आये कन्त व्यर्थ दरसन्त सोभा दसहू दिगन्त की। पेखि

ला॰ मारकण्डेलाल उपनाम चिरजीवी कवि कोपागंज ।

दोनो कुलकानि की बिराजति दिवारैं जामैं
फाटक सुप्रेम औ किवारी निज तन्त की । बि·
टप अनेक हाव भाव के बसत जामैं लतिका
सनेह सील साधिका दिगन्त की ॥ कवि चिर·
जीव जामैं जोबन जलूस छायो सुखमा सुगन्ध
सुखदाई रतिकन्त की । चलिये कन्हाई छोढ़ि
लीजै मन भाई वह प्यारी गुनवारी फुल॰ ॥

जामैं जपा जूहिन की जुगपल विराजै छटा
वेला औ चमेलिन के महिमा हसन्त की । गु-
लाला गुलाब गुलतोर्रा गुलमेहदीहू गेंदा औ
गुलाची जहाँ फूलत दिगन्त की ॥ कवि चिर-
जीव सिद्ध पृष्ट ब्रज भूतल मैं कामना दिवैया
सारे सन्त औ असन्त की । आइये कन्हाई कछु
कीजिये कृपा की कोर कैसी ये अनोखी फु॰ ॥

वृषभान की दुलारी मैं।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

गावत है गारी खरी प्यारी ब्रजनारी संग यही निरधारी फाग खेलों गिरधारी मैं। कहै रससिंधु धरे अबिर गुलाल रंग चोवा और चन्दनहुं रवि की उँजारी मैं॥ प्यारे कृष्णलाल तहाँ नेह को निसान रोप्यो स्याम को जु ल्याई धर मैन फुलवारी मैं। सारी पहिराय चोली घाघरी धराय आज कृष्ण को नचाऊँ वृषभान की०॥

आज बरसाने चली साँकरी जु खोर तहाँ दूध दधि माखन ले गोपीभुण्ड भारी मैं। कहै रससिंधु स्याम दौर के जो रोकी सखी चलिवे की बाट नाहिँ खूबही बिचारी मैं॥ लाठी के सु मारत ही दधि की मटूकी फोरी दूध की वो छीट उड़ी लेत बलिहारी मैं। नन्दगाम आवें तब दान लीजो नन्दलाल दान नहीं द्यौं जू वृषभान की दुलारी मैं॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

ठसक न बाकी पर जैये बलवीर वह रावरेई प्रेम मे बिलोकी मतवारी मैं। बिरह बिथा सों परी तरफत आठो जाम तुमतैं गुमान नेक तजत न हारी मैं॥ सुख दुख आपने हिये की कहि देत मोसों तुम सों तनीये रहै कोटिक निवारी मैं। मोतें कही चेरी हम कान्ह की सदा हैं पर कहन कहौ है वृषभान की०॥

आज हौं गईही नन्दगांव दधि लै के भोर निरखि सकानी या अनोखी हुरहारी मैं। रंगभरे गागर लुढ़ावत उमंगभरे कोन मैं लुकानी भरी देखि पिचकारी मैं॥ अबिर गुलाल जो पै डार दई डार दई कैसे कै सहौंगी बीर लाजभरी गारी मैं। भूलैं मत नन्द जसुदा पै कह दीजो कान्ह कीरतिकुमारी वृषभान०॥

महामहोपाध्याय श्रीयुत पण्डित सुधाकर जी द्विवेदी खजुरी—बनारस।

लाड़िली को बनक बनाइ बैठे लाल हाल लाड़िली कन्हैया बनि बैठी चित्रसारी मैं। क-

रत कलोल मिलि चूमत कपोल सुख लूटत अ-
मोल दोऊ लोल बारी बारी मैं ॥ आरसी मैं
वनक बिलोकि भ्रम छाय गयो मन मैं समाय
गयो धाय नारी नारी मैं । नन्द को दुलारो मैं
ही राधा कहै बार बार कान्हा कहैं आली वृष-
भान की दुलारी मैं ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

ठाढ़ी रहो परम निसंक खड़ी याही ठौर
सामना करौंगी वढ़ि गोन के अगारी मैं । आ-
वन दे फगुआ धमार वीर गावन दे मारि कुम-
कुमा सों करौंगी धुन्ध भारी मै ॥ वेनी द्विज
अवहीं विधोरि गोल ग्वालन की झपटि धरौंगी
धाय गहि गिरधारी मैं । नर ते वनाय नारी
तारी दै नचैहौं नाच वाँकुडो कडी हौं वृष० ॥

जाकि लखिवे को लाल पौरि पै परेई रहो
होत ते निहाल टुक रुख ते निहारी मैं । जाहि
नाचि गाय कै रिझाय लेत हाहा खाय रूसिकै
कहूं जो नेक वैठौं जाय न्यारी मैं ॥ सोई कान्ह

मान कूबरी को लियो वाही भाँति हाय निर-दई ऐसी कौन चूक पारी मैं। माधव भए जो वेनी द्विज है हमारे और ऊधव वही हौं वृष०॥

वस्य हौं न देव औ अदेव जच्छ किन्नर के फँसिगो तुही सों तोहि जबते निहारी मैं। वेनी द्विज वस्य हौं न गोपी गोप गाइन के करत स दाही हौं तिहारी इन्तिजारी मैं॥ तेरे बिन देखे नेक मन ना धरत धीर फिरत अधीर हौं कहाय गिरधारी मैं। मेरी प्रानप्यारी भूरि जीवन ह-मारी एक वस्य हौं तिहारी वृषभान को० ॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी।

गोपन के ढोटन लै ओटन खरे है ओट खोट खोट बातें कहौ कुंज की अँधारी मैं। प छम भरन भुज भेटन केदार चहौ चूमन कपोल अनमोल बटपारी मैं॥ ठाढ़े रहौ दूर ना तो मा रिहौं गुचौं औ मार छीनि लैहौं कामरो छदाम री तुमारी मैं। छूटि जैहै तेरो लँगराई जदुराई घानि कीरतिकुमारी वृषभान की० ॥

छबीले कवि बनारस।

रूप रचिबे मे जाहि सुधि बिसराय विधि अचल अगाध बुधि बिमल विचारी मैं। सुकवि छबीले छबि काम कामिनी को पस्यो मन्द कंज कोमलता पगन हमारी मैं॥ जगत लटू ह्वै म-टुकीरति बगास्यो करैं वेद बरनै है करौं सपथ तिहारी मैं। मान जीतिबे को मन कान्ह जी-तिबे को ससि भान जीतिबे को वृष० ॥

बा० माधोदास जी - काशी।

दम्पति बिहार करैं एकही सिंगार धार ए-कही किनारी लगी एक रंग सारी मैं। माधव जू मारग मे ललिता मिली है आय धाय गहि लीनी लखि चातुरी तिहारी मैं॥ गोरी गरबीली गाम कौन की न देखी कहूं बास नन्दगाँव बड़े गोप की कुमारी मैं। साँवरो सलोनो लोनी कौन की किसोरी बीर आली ना पिछानी वृ०॥

कवि पं० गोपीनाथ जी काशी।

जाही के फिराक मे बिहाल लाल डोलति

हुसियारी मैं। बनिता बनाइहौं विचित्र ब्रज चन्द जू कौं वृन्दावनवारी वृषभान० ॥

मुनिमनहारी देह खेदित सुगन्धवारी आखैं रतनारी अलसौहीं निरधारी मैं। सोचिये सकोचिये न जनसुखकारी स्याम कबहूं न चूक ब्रजचन्द जू निहारी मैं॥ खोइ निसि सारी मरजाद सब धोइ डारी आये प्रात देखि छवि तपति निवारी मैं। गोपनि जुठारी सबै गोप की कुमारी कहां उत्तमा तिहारी वृषभान० ॥

महाराजकुमार श्री गुरुप्रसादसिंह जी—गिद्दौर।

सूझत न मग सूधो परत न पग हाय तड़पि तड़पि रैन दिवस गुजारी मैं। भूली सुधि लकुट मटुक बनमालहूं की बंसी बंसीवट पीतपट हूं विसारी मैं॥ सूल सो लगत खान पान ग्वाल वाल संग साँची हौं कहत करि सपथ तिहारी मैं। चाल मतवारी मन्द हँसनि चितौनवारी जब से निहारी वृषभान की दु० ॥

श्री ठाः महेश्वरबक्ससिंह जी तालुकेदार—रामपुर मथुरा।

ढीली ढीली नजरि लजीली अँखियान लख्यो मन्दहाँस सोभित बदन ससि सारी मैं। डारो हरि ता छण सों लकुट मकुट कहौं मुरली न बाजत भरे है भाव भारी मैं॥ आगे काह ह्वैहै श्रीमहेश्वरसहाय करै निपटि निकेत कै नध्यौ है नेह-नारी मैं। भूलो सब आन मनमोहन को मोहन यौं लागो मन मोहि वृष० ॥

कौनौ तप साधन कै आप गति जान जग कौनौ करि तीरथ फिरत नित कारी मैं। कौनो रचि ग्रन्थन को आपन उबार देखै कौनो पढ़ि ग्रन्थ गति जानै हुसियारी मैं॥ कौनो कछु मंत्र यन्त्र तन्त्र टोटकादि लागे कौनो व्रत पूजन को देव धरि थारी मैं। मेरो मन मोद कै महेश्वर चरन लाग्यो कोमल कमल वृषभान० ॥

श्री नवनीति कवि—मथुरा।

माँगत मही का कहा दान इतरान भरे बोलन न सूधे बात करत मरोरी मैं। नवनीत प्यारे

गति गजराजन की गौरव गहत जात स-कुच सिखापन सिखाय करि हारी मैं। सानै ना सनेह यों बखानै हरि आगमन जानै ना विभेद जौन गावै गीत गारी मैं॥ उन्नताई आई और नेसुक उरोजन मे छीनताई कटि त्यों नितम्ब भाति भारी मैं। द्विज बलदेव दिन दूनी दुति होन लागी दीसै ना दुराव वृष०॥

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिद्दौर।

जाय नन्दगाँव धूम फाग को रचौंगी आज कसक मिटैहौं हिये यह प्रन धारी मैं। झोरिन अबीर भरि धुंधर मचैहौं महा रंग भरि मारिहौं उमगि पिचकारी मैं॥ मेलिहौं गुलाल लाल आँखिन से बरबस गाफिल कै लैहौं गहि तव गुनवारी मैं। आजु जौं न लाऊँ बाँधि नन्द को दुलारो सखी तेरी सौंह तौ न वृषभान को०॥

पीतपट काछनी मुकुट मोर चन्द्रिका को सीस आप लीजै धरौं नीलपट सारी मैं। गुंज-माल आप उर धारिये सँवारि प्यारी लैहौं उर

आपनो सुकंचुकी तिहारी मैं ॥ लीजै रतिहूं मे सुख लूटि विपरीत रति रीति यह ठानिये अनीत ना बिचारी मैं। आइये निकुंज आप नन्द को दुलारो बनि आऊँ बनि आज वृष० ॥

माझानिवासी पं: अच्युतानन्द जी द्विवेदी।

जारि नेह तरु को बिसारि कौल वातन को गातन लखात घात कीन्ही कुंज भारी मैं। हारि हेरि हाय हाय करत हजार बार कुंज पार तौ लौं ऐसी भई दुखभारी मैं ॥ अच्युत न पायो तऊ अच्युत अनोखे लाल प्रच्युत ह्वाल गति बावरी गँवारी मैं। काहि लागि घेरों उन्हें फेरों बार बार भटू देत काहे गारी वृषमान० ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलाल जी गयावाल

बीन ते मधुरबैनी सुन्दर सरोजनैनी महा सुखदैनी ऐसो दूजो ना निहारी मैं। कहै गिरधारीलाल चाल है मरालवारी गुन की अगारी जैसी नाहीं दिसि चारी मैं ॥ लङ्क अति खीन चंचलाई के बिहीन चारु वैस की नवीन उप-

मान ढूंढ़ि हारी मैं। करौं का बखान ससि भान मे नहीं है कान्ह जैसी है छटान छष० ॥

जबहीं ते छोड़ि आये आपनो भवन मोत तबहीं ते दिना रैन रहत दुखारी मैं । कहै गिरधारीलाल खटकत है बार बार कियो जौन केलि रविनन्दनी-किनारी मैं ॥ भूलतो ना छज छिन ये कहूं कबहुं मोते साँची कहौं तोसे करि सौहनि तिहारी मैं । ऊधव सुजान जऊ आये देश आन तऊ बसै मम प्रान छष० ॥

बाबू शिवपालसिंह — भिनगा।

हय गज मृग फणि डोलत मुदित मन दाडिम रसाल चम्प नारँगी पत्यारी मैं । कीर कोक कोकिल कपोत कलरव करैं सिव कवि सर कंज विम्ब की कियारी मैं ॥ कदली जपा प्रसून मूगफली वेलि भली भाँति २ छवि छाजै गति न्यारी २ मैं। विपिनि-विहारी ऐसी विपिनहि जाहु जनि ये सब लखाऊँ छष० ॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा ।

एरी सुन हाल ब्रजबाल नन्दलाल जू के नये रंग ढंग ख्याल कौतुक निहारी मैं । देखतहीं भये हैं निहाल नेह जाल फंदे चित्र के लिखे से रह गये चित्रसारी मैं ॥ राधिकाप्रसाद खान पान गान तान ध्यान ज्ञानहूं बिसारी समुझाय धाय हारी मैं । उनको मन छाको ब्रजचन्द्रलाल मोहन मे मोहन मन छाको वृषभान० ॥

श्री चन्द्रकला बाई—बूंदी ।

जावक रजोगुन है पद जलजात चारु नख ससि भान उरु करी कर चारी मैं । कुच सिव सैल ग्रीवा विष्णु शङ्ख दन्त हीरा हास्य कौमुद मानो वीना मीननैनवारी मैं ॥ चन्द्रकला भृकुटी मनोज धनु मुखचन्द वर पद भूषन की सुखमा निहारी मैं । वेग चलि देखो ब्रजचन्द तिहुलोकन की सारी छवि छाई वृष० ॥

कानपुरनिवासी पं० ललितप्रसाद जी त्रिवेदी ।

मलयज राग मे गुराई की सुछिति छाई

छोरन के छारन के भार न सभारी मैं। मालती के भूषन ललित अँग अंग राजी साजी जरतारी की किनारीवारी सारी मैं ॥ हेरे ना मिलति झिलमिलति सुदीठि ऐसी कैसी भ्रमि गई सुख-चन्द की उँज्यारी मैं। हेरिये तौ आपही बिहारी जू तिहारी की सौ इहाँ लगि लाई वृषभान की दुलारी मैं ॥

जानि परे दीन्हो विधि वाही को सकेलि सब रूप अधिकारी कहौं कहाँ लौं बिहारी मैं। ललित समारी नखसिख दुतिवारी लखि भूलति चकोर मुखचन्द उजियारी मैं॥ दीठि चकचौंधि जाति जोति की जमाति ऐसी दामिनि सी द-मकि उठति नील सारी मैं । कौन जग नारी कमला सी विमला सी वारी आजु लखि आई वृषभान की दुलारी मैं ॥

भोर ले अहीरन की तौर मति ऐये कान्ह मोट करि राखो है धमारिन की गारी मैं। भूलि जैहै सब अठिलाइबो बिहारी यह धाइबो भरे

हौ जौन रंग पिचकारी मैं ॥ ललित खेलारी हौ तौ खेलिये सखान साथ जौन रँग डारी तौन हौं न व्रजनारी मैं। ओढ़ि कारी कामरी कौ सारी नरनारी रँगौं जानति न मोहि व्रष भान की दुलारी मैं ॥

कोपागंजनिवासी मारकंडेलाल उपनाम चिरजीव कवि।

कहा कहूं प्यारी निज भाग्य की खुआरी जामैं वीती वैस सारी रोज रोज दुन्तजारी मैं। जासो रहे पङ्कज हमेस वने प्यारे तामौं भये अब चम्पा अनुकम्पा छाड़ि भारी मैं ॥ तव ते न नेकहु दिखात चिरजीव कहै प्रीति-प्रेमपन्थवारी कान्ह सुकुमारी मैं। जब सो लुभाने कान्ह चुम्वक लौं लोह मान कीरतिकुमारी व्रष-॥

करि कै चकोर सवही के चल चंचल को अंचल उमेठि कै अमोली लाज भारी मैं। दय करि सवको सरीर निज वानक सों वाहन समेटि पट प्रीतम तयारी मैं ॥ सोरहो सिंगार करि वैठी कुंज भौन राधे रमा चिरजीवी जाके

भई बलिहारी मैं। मानो तीनो लोक की अं-
नोखी सुखमा अपार आनि कै बसी है वृषभान
की दुलारी मैं॥

भई अति त्रस्त जापै अवला नभस्त सारी ढापि निज मुख हस्त गस्त खाय भारी मैं। रह्यौ नहि कान्ह फेरि ध्वस्त करिबे को कस्त परी ना अधस्त कहूं आपने अटारी मैं॥ कवि चिरजीव आज लाड़िली कढ़त नेकु अस्त व्यस्त भयो तीनो लोक छवि भारी मैं। पस्त करि मानो उदै अस्त की समस्त सोभा भई है प्रसस्त वृषभान की दुलारी मैं॥

किस कवि की कविता किस पृष्ठ में है उसकी सूची।

सूचना ।

भारतरत्न साहित्याचार्य्य पं० अम्बिकादत्त व्यास जी की पूर्ति "मलिन्द मतवारे से" पर पृष्ठ ५७ में छपी है परन्तु उसमें छापे की गलती से पद छूट गया है इसलिये उसे यहां पुनः शुद्ध कर प्रकाश करते हैं।

"नैन कमललखि उमँग भरेसे । भृकुटि व्याजजनु पाँति करे से ॥ फरफरात पुनि ठठकारे से । सोहत मलिन्द मतवारे से ॥"

